891.43
N23V

अनमोल पुस्तक

व्यवहार पत्र संग्रह

जिसमें अच्छी २ बातें और दफ़्तरों की सरकारी

कारवाइयां हैं

श्रीमान् बुद्धिसागर परोपकारी दीनानुरागी हुज़ूर साह

साहिब इन्सपेक्टर बहादुर मदारिस सर्किल पश्चिमो

अवध देश की बनाई हुई मजमूआ काग़ज़ात कारवाई का

तर्जुमा श्री पूदीन हितकारी विद्याभूषण के पिया

सिंधु बुद्धि आगार शुभ गुन समूह जनाब

जान सी नेसफ़ील्ड साहिब

बहादुर इन्सपेक्टर

मदारिस सर्किल

अवध के हुक्म

से

श्री ठाकुर चन्द्रसिंह ने हिंदी अच्छरों में किया॥

मुक़ाम लखनऊ

मुनशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी॥

महीना अगस्त सन् १८८१ ईसवी॥

भूमिका

सुजान समाज सकल गुन ग्यानी।
करौं प्रनाम सप्रेम सुबानी॥१॥

इस पुस्तक के पढ़नेवालों को विदित होगा कि देश के वर्तमान दिन की बोल चाल में इस किताब का उल्था करना कैसा कठिन है यह पुस्तक दस्तानामा तथा गुना कचेहरी के कागज़ात का संग्रह है इन कागज़ात में फ़ारसी और अरबी के ऐसे ऐसे व्यवहार संबंधीय शब्द हैं जैसे मुद्दआ अलेह-मुद्दई-वाक़नामा-बैनामा-सम्मन इत्यादि कि उनका तर्जुमा देश की हिंदी भाषा में हो नहीं सकता क्योंकि उसमें ऐसे शब्द ही नहीं हैं यदि संस्कृत के शब्दों के मदद से उनका उल्था किया जावे तो उल्था करने का परिश्रम ही व्यर्थ होजाय काहे कि ऐसे व्यवहारीक संस्कृत शब्दों का प्रचार न होने से उनको कोई भी नहीं समझेगा अर्थात फ़ारसी और अरबी के व्यवहार संबंधीय शब्द तो सैकड़ों बरस से कचेहरी आदि में प्रचलित होने और बोल चाल में आने के कारन वह लोग समझ भी सकते हैं और वे लोग तो अच्छी तरह से समझ सकते हैं जो कचेहरी वा

कचेहरी के अमलों से विशेष मेलजोल वा वास्ता पड़ते हैं इस हेतु से इस पुस्तक के उल्था करनेवालेने प्रसिद्ध विख्यात शब्दों को ज्यों का त्यों रहने दिया केवल उन को कैथी अक्षरों में लिख दिया है और जहां तहां अपने मति के अनुसार बोलचाल भी ठीक वैसेही रहने दिया है जैसा कचेहरी आदि में सब लोग अवश्य बोलते हैं ऐसा करने से बड़ा मतलब तो यह था कि इस देश के वे सब लोग भी जिनको बहुधा कचेहरी से सरोकार नहीं रहता इस पुस्तक के द्वारा कचेहरी के बोलचाल में जानकार हो जाएं और वहां के प्रधान संबंधीय शब्दों को तथा उनके अर्थों को भली भांति समझ लें जिस में उनको अवश्यकता के समय कचेहरी के अमलों और राजाधिकारी पुरुषों से बात चीत करने अपना मनोरथ उनके सामने वर्णन करने - अथवा उनकी बातों और आज्ञाओं की आशय को अच्छी तरह समझ लेने में कुछ कठिनता न पड़े वा इस प्रयोजन के निमित्त किसी दूसरे आदमी की सहायता न ढूंढ़ना पड़े यदि इस पुस्तक के पढ़ने और गुनने वालों को ऊपर लिखी बातों में अच्छी तरह अभ्यास हो जाय और आशा है कि अवश्य हो जायगा तो उसके उल्था करनेवाले का मतलब सिद्ध हो जायगा और वह अपने उस परिश्रम और समय को जो इस ग्रंथ के लिखने में लगाया है वृथा न समझेगा॥ एवमस्तु—

यह बात सब कोई अच्छी तरह जानता है कि जिस भाषा का इस पुस्तक में वर्णन है उस भाषा की कोई पुस्तक देशी बोल चाल में अब तक नहीं लिखी गई है इस कारण इस के उल्था करने में कितनी और किस प्रकार की कठिनता उल्था करनेवाले को पड़ी है बुद्धिमान और विद्यावान् पुरुष आप समझ सकते हैं लिखने की कुछ भी आवश्यकता नहीं—

यदि इस पुस्तक का उल्था करनेवाला उसकी अल्प बुद्धि तथा अल्प विद्या के कारण ऐसे बड़े पंडितों के कार्य्य को सिद्ध करने के योग्य कदापि न था तथापि श्रीयुत विद्यानुरागी विद्वज्जन पूजनीय श्री-पु-राय दुर्गा प्रसाद साहब बहादुर अवध देशीय पाठशालाओं के इन्सपेक्टर की आज्ञा पालन करना निज धर्म जान कर उन के इस आज्ञा को शिर माथे धर और अपने बल चित्त और विद्या भर इस कठिन कार्य्य को पूरा किया—

इस पुस्तक के उल्था करनेवाले को श्री मुन्शी अंबिका प्रसाद साहब डिपुटी इन्सपेक्टर मदारिस ज़िला लखनऊ का अंतःकरण से धन्यवाद करना उचित है कि इन महाशय ने जहां तक उन से हो सका इस पुस्तक के उल्था करने में मदद दिया और बड़े श्रम से दो बार इस का प्रूफ़शीट आदि से अंत तक शोधा—

અવ વિદ્વાન ઔર સાધુ પરોપકારી મહાશયોં से
યહ વિનય ઔર આશા હૈ कि આપની સૌભાવિક ક્ષમા
ઔર સાધુતા से ઇસ પુસ્તક के ઉલ્થા કરનેવાલે की
મંદમતિ ઔર ગાઢ મનોરથ કા વિચાર કરકે ઇસ
ગ્રંથ के અશુદ્ધતા को સુધાર લેવેંગે ઇસકે દોષોં
को ક્ષમા કરૈંગે ઔર ઇસકે સંપૂર્ન છિદ્રોં को દુરા
વેંગે ક્યોંકિ શ્રી તુલસીદાસ જી ને રામાયન में कहा है

> સાધુ ચરિત સુભ સરિસ કપાસૂ।
> નિરસ વિશદ ગુનમય ફલ જાસૂ।
> જો સહિ દુઃખ પરછિદ્ર દુરાવા।
> વંદનીય જેહિ જસ જગ પાવા॥

દઃ ઠાકુર ચંદી સિંઘ

अनमोल पुस्तक

परिहार पत्र संग्रह

जिसमें अच्छी अच्छी बातें और हाकिमों की सचाई की

कारगुज़ारी हैं

श्रीमान बुद्धिसागर परोपकारी दयालु गरीबपरवर साहिब कमिशनर बहादुर मदारिस सरकिल पश्चिमोत्तर अवध देश की बनाई हुई सब मुल्क का गुज़ारा कारगुज़ारी का तरजुमा श्री पं दीन हितकारी विद्याभूषण कविया

सिंधु बुद्धिराशि शुभ गुन समूह गुणनाव

जान सी नेसफ़ील्ड साहिब

बहादुर कमिशनर

मदारिस सरकिल

अवध के हुक्म

से

श्री ठाकुर चनदी सिंघ ने हिंदी अक्षरों में किया॥

मुक़ाम लखनऊ

मुनशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी॥

महीना जनवरी सन १८८१ ईसवी॥

व्यवहार पत्र संग्रह

चिट्ठियाँ छोटों की तरफ से बड़ों को

बाप को

१— सर्वोपमा दीवाई शर्मा जी पिताजी को प्रणाम पहुंचे आगे यहां सब तौर सलामत है आप की अच्छी भलाई हमेशः भगवान से चाहता हूं भाई गुलाम मुहम्मद साहिब का खत सीतापुर से आया उसमें लिखा है कि मैंने मामा साहिब के रोज़गार की सूरत आबकारी की नौकरी पर ठहराई है और साहिब मुंह से वादा कबूल कर चुके हैं कि फ़ौरन आपने मामा साहिब को बुलालो जो जवाब मामा साहिब का पक्का दूंगा हो तो फ़ौरन मुझ को लिखो कि मैं आज पांच दिन का राह देखता हूं और नहीं तो कोई दूसरा आदमी करलिया जावेगा और यकीन है कि नौ रुपिये महीना मिलेगा पहले जो आदमी कि नौकर थे उनको १२) रुपिये मिलते थे अब तीन रुपिये की कमी करदी गई है आखिर सात आठ महीने पीछे फिर पूरी तनख्वाह करदी जावे-

और भाई गुलाम मुहम्मद साहिब कप्तान साहेब के पास १२) रुपिये महीना खानसामा की जगह पर नौकर हैं उन्हों ने अपने भाई और मां को भी अपने पास बुला लिया है अभी तक उनके खत का जवाब मैं ने मुनासिब नहीं किया है

જૈસા આપ ફરમાવેં વૈસા ઉનકો લિખ્યા જાવે લેકિન જો હોસકે તો જનાબ ભી ઉનકે પાસ ખત રવાનઃ કરેં પતા ઉનકા યિહ હૈ શહર સીતાપૂર મુકામ છાવની કપ્તાન સાહિબ કે બંગલા પર પહુંચકર ગુલામ મહમ્મદ કો મિલે આગે બહુત લિખ્યા રમજાન અલી ને-લખનૌ સે-તારીખ ૨૭ મુહર્રમ સન ૧૨૮૯ હિજરી-

બાપકો

૩-- શાકિદ પિતા જીઉ કો સલામ આગે યહાં આપ કી દુઆ સે ખૈરિયત હૈ ઔર આપ કે શુભ સમાચાર ચાહતા હૂં-ચિઠ્ઠી આપ કી ૨૭ તારીખ જી હિજ્જા કી આઈ બડી ખુશી હુઈ ખુદા આપ કો સદા બનાયે રખે જો આપને લિખા હૈ કિ હૈદર અલી ખાં સાહિબ કે મારફત ઇસ મહાજન સે લેકર બહુત જલ્દ ભેજદો સો હૈદર અલી ખાં સાહિબ તો કમિશ્નર સાહિબ કે સાથ દૌરે પર ગયે હૈં મૈંને યિહ સમઝકર કિ આપ કા હરજ ન હો ખત રુપિયા બનાઈ અલી સાહિબ કે મારફત જો બડે ઈમાનદાર હૈં દો રુપિયા સૈકડા સૂદ માહવારી પર લેકર આપ કે પાસ રવાનઃ કિયે હૈં રસીદ જલ્દ ભેજ દીજિયે ઔર મિરજા અબદુલ અજીજ કી શાદી કે બાબ મેં જો આપને પૂછા હૈ ઉસકા યિહ હાલ હૈ કિ ૨૭ તારીખ રબીઉલ અવ્વલ સન ૧૨૮૯ હિજરી કો શાદી મિરજા અબદુલ અજીજ સાહિબ કી હો ગઈ સબ લોગોં કો ભી ઉન્હોં ને [illegible] હમ સબ લોગ જલસે મેં શામિલ થે ઔર આપ કે હુકમ કે મુવાફિક ખરચ કિયે

इस काम में प्रयत्न किये गये इत्तिला उसकी आप को दिई और आराम आली माहिब जिनकी मुद्दत से ख़बर नहीं मिली थी काल आदि और बहुत कुछ रुपिये पैदा करलाये हैं सो ३०) रुपिये तकआराज़ ग़रीबपरवरों को दिये और मकान को ठीक किये कारगदे थे छुड़ा लिया आपकी मुलाक़ात किया चाहते हैं और आप के पास ख़त लिखने का भी इरादा किया है ज़्यादा बंदगी के सिवाय और क्या अरज़ करूं- लिख्या आगा जान ने लब नकस से इतारीख़ मुहर्रमुलहराम सन् १२९० हिजरी-

किसी बड़े को

३- श्री पूजनीय साहिब मेहरबान क़दरदान कोसलाम आगे यहां सब ख़ुदा की मेहरबानी से ख़ैरियत है और आपकी क्षेमकुशल चाहता रहता हूं लगभग दो महीना के हुये आपकी शुभकुशल मालूम नहीं हुई सो बड़ी फ़िकर है सो आप इस ख़त चिट्ठी के तकलीफ़ करके सब हवाल साफ़ साफ़ लिखिये कि फ़िकर दूर हो और हाल यहां का इसतरह पर है कि बारिश बहुत है और आठरोज़ से सूरज नहीं दिखाई दिया है और सैकड़ों मकानात गिर पड़े कोई पक्का और कच्चा मकान ऐसा नहीं है कि जो टपकने से बाक़ी रहा हो बारिश क्या है मानो परले है- हमारे पास पड़ोस के भी सब मकानात गिर पड़े सो गिरधर सिंह पटवारी और नन्हेमल सुनार और

દેવી સહાય મહાજન ઔર મુનશી રજબઅલી સાહેબ
માસટર વગૈરઃ હમ સબ અપના મકાન છોડકર મૈદાનોં
મેં ખીમોં કે નીચે રહતે હૈં જિસ પર ભી તસલ્લી નહીં
હૈ નદી ઐસી બાઢ પર હૈ કિ હુસેનાબાદ મેં નાવ ચલતી હૈ
મેરે મકાન કી ભી સબ તરફ કી દીવારેં ગિર પડી હૈં છતેં
અડાનોં કી વજહ સે કાયમ હૈં દિન કો પહરા કરતે કરતે
ઔર રાત કો પહરા દેતે દેતે જાન જાતી હૈ ન દિન કો ચૈન
હૈ ન રાત કો આરામ હૈ આપકા ગુલામ બડે સોચ મેં હૈ
ઇસ આફત મેં દીવારેં તો ઉઠ નહીં સકતી હૈં લેકિન દરવાજે
વગૈરઃ ભી તો હવા કે બડે જોર કે સબબ સે રહ નહીં સકતી
હૈં ઇસ કી ખબર આપકો દી ગઈ બાકી સબ ખૈરિયત હૈ
જિયાદા બંદગી - ઔર ક્યા અરજ કરૂં - લિખા મુહમ્મદ
અમીન ને લખનઊ સે તારીખ ૨૫ અગસ્ત સન્ ૧૮૯૦
ઈસવી

માલિક કો

૪— શ્રી ૫ કિરપા સાગર સકલ ગુન આગર મુનશી
કરમહુસેન સાહિબ કો સલામ બંદગી મૈં અચ્છી તરહ હૂં
ઔર આપકી કુશલ ખુદા સે હરદમ ચાહતા હૂં મુદ્દત
સે આપ કી શુભ કુશલ નહીં માલૂમ હુઈ ઔર ન
કિસી દોસ્ત બેવહારી કે જબાની છેમ કુશલ મિલી
ઇસ વજહ સે મુઝ કો બડી તરદ્દુદ ઔર ફિકર હૈ સો
આપ જલ્દ અપના હાલ લિખેં ઔર યહાં કા હાલ
યહ હૈ કિ ઇસી મહીના કી ૨૫ તારીખ કો આપકે લડકે

शेख़ वज़ीरान हुसेन इनदिनों आगरा वग़ैरः से होते हुये आये और आते ही चाहा कि आप के मकानों पर क़ब्ज़ा करके थोड़े दिन के पीछे उन्हें गिरो या बेच करके फिर किसी तरफ़ चले जावें सो मैं ने मना किया और किरायेदारों से भी कह दिया कि उनको एक पैसा न देवें और जो देवेंगे तो मुजरा न दिया जावेगा यह सुनकर शेख़ साहिब ने अदालत फ़ौजदारी में नालिश इस तरह पर की कि मैंने बाप के मकानों पर क़ब्ज़ा कर लिया है और मुझको हिस्सा नहीं देते और फ़ौजदारी करने को तैयार होते हैं सो आज मेरे नाम समन आया है और २७ अगस्त को पेशी है सो मैं ने यह काम आपके हुकम के मुवाफ़िक़ किया है आपको भी शामिल होना वाजिब है इस वास्ते मुझे भरोसा है कि आप २६ अगस्त तक ज़रूर आवेंगे और जो आना न हो सके तो मुक़द्दमा में मदद के वास्ते कुछ लिखकर भेज दीजिये और जो मुनासिब हो तो मुख़्तार नामा रजिस्टरी कराके रवाना फ़रमाइये कि वक़्त पर काम आवे और बाक़ी सब तरह पर ख़ैरियत है लिखा अब्दुस्सत्तार ने ३१ जुलाई सन १८६६ ईसवी

किसी बड़े को

५— शरीफ़ सलाम के पीछे मतलब यह है कि मैं और मेरे घर के लोग सब बहुत अच्छी तरह हैं और आप की तनदुरुसती और ख़ैरियत भगवान से रातदिन चाहता हूं चिट्ठी आपकी आई बड़ी ख़ुशी हुई भगवान आपको

हम लोगों के सिवा हमेशः सलामत रक्खे जो कि जनाब ने लिख्या है कि छः बरस का अरसा हुआ और दो दफ़ा बुलाये भी गये तिस पर भी तुम नहीं आये इस का बड़ा अफ़सोस है जनाब मेरे मुझ को बड़ी अभिलाष है कि आपसे मुलाक़ात करूं लेकिन कभी करूं मांदगी से इतनी छुट्टी नहीं मिली कि आपसे मुलाक़ात करूं जो भगवान चाहता है और कुछ फ़ुरसत मिली तो ज़रूर हाज़िर हूंगा चाहिये कि आप अपने कुल हाल से हमेश मुझको इत्तिला कीजिये कि फ़िकर दूर हो और इन दिनों बीमारी के बाइस से लगा भगा दो तीन सो रुपिये के क़र्ज़दार भी हो गया हूं जो आप कुछ सहारा करेंगे तो मैं इस बला से छुट्टी पाऊंगा और नहीं तो और ज़ियादः मांदा हो जाऊंगा आगे सलाम लिख्या मैं दहल्लसीने-दी— श्री पू जनाब भाई करीम बख़्श साहब को सलाम आगे मीर ज़ामिन अली साहिब तहसीलदार नागपुर के लश्कर में आये हैं यकीन है कि गदेह वाली सराय में ठहरेंगे सो आप उनको सराय गदेह की में तलाश करके घर में ले आइयेगा बहुत ख़ातिरदारी और बहुत अच्छी तरह से उनकी ज़ियाफ़त कीजियेगा जो एक वक़्त में दस रुपिये तक ख़रच हो जावें तो भी कुछ मुज़ायक़ा नहीं है जो कुछ ख़रच होगा और आप लिखेंगे मैं भेज दूंगा और अगर तहसीलदार साहब वहां रहने से इनकार फ़रमावें तो नख़ास वाले कमरे में ठहरा दीजियेगा और

अगर वह ख़ाली न हो तो किसी आदमी के हवाले कर मकान ज़रूर दिलवा दीजियेगा उनको किसी तरह की तकलीफ़ न हो नहीं तो बड़ी शिकायत होगी-
और चिरंजीव मुहम्मद हुसेन के पढ़ने लिखने में बहुत कोशिश कीजियेगा ऐसा न हो कि खेल कूद में लगा रहे और पुरानी मिहनत और मशक़्क़त कम कर देगा। हैदर अली खां साहिब और मुनशी इमदाद हुसेन साहिब को सलाम कह दीजियेगा और महम्मद हुसेन साहिब और असीर अली साहिब को खैर सलाह ज़रूर लिखियेगा।
लिखा मुहम्मद अमीन - ४ शाबान सन् १२७७ हिजरी

किसी बड़े को

७- आदाब सलाम के पीछे हाल यह है कि पिताजी को काम बहुत रहता है इस वजह से उनकी चिट्ठी मेरे पास बहुत कम आती है इससे उनका पता मुझे ठीक ठीक मालूम नहीं है कि किस महल्ला में टिके हैं और इसी वजह से बहुत कम ख़त उनके पास भेजता हूं - लेकिन बाज़ काम ऐसे आ जाते हैं कि लिखना ज़रूर ही पड़ता है वहां सिवाय आपके और कोई दूसरा महरबान मेरा मौजूद नहीं है सो मैं आपके पास इस चिट्ठी के अन्दर पिताजी की चिट्ठी बंद करके भेजता हूं कि इस चिट्ठी के देखते ही आप बंद चिट्ठी पिताजी के पास भेज दीजियेगा कि बड़ी ज़रूरी है आगे इस मुक़ाम पर टिकट महसूल बहुत कम और बड़ी दिक़्क़त

से मिलते हैं बल्कि मिलते ही नहीं आचार्य की चिट्ठी सी
वैसा ही रवाना की गई माफ़ कीजिये गा और जो शादि
पिता जो मकान पर नहीं तो माई साहिब ही किया समझ दा
दीजिये गा क्योंकि मतलब ख़त का एक है आगे सब
खैरियत है फ़ख़ुदा बख़्श रईस मई सन् १८७६ ई० इसरी-
मुक़ाम मोरा वाला मक़ाम तहसील संडीला ज़िला हरदोई

माई को

८ -- माई साहिब माई सैयद अहमद हुसैन साहिब
डिप्टी कलेक्टर बहादुर को —— सलाम के पीछे
अर्ज़ यह है अल्लाह का शुक्र है कि अब तक
तन्दुरुस्ती शामिल हाल है और आप की खैरियत
हर वक़्त चाहिये दो महीना होगये कि आपका कुछ
हाल नहीं मिला बड़ी फ़िक्र है सिवाय इसके सुना गया
था कि ख़ुदा न करे लड़की की तबीयत भी मांदी है
सो इसके पीछे मैंने ख़त भी भेजा परन्तु कुछ
हाल नहीं मिला सो आप इस ख़त के देखते ही जल्द
सब घर के हाल से ख़ास कर लड़की के हाल से इत्तिला
करें और यहां का हाल वैसा ही है सरफ़राज़ अली
साहिब जो थोड़े दिन से कानपूर में रहते हैं आज कल
वास्ते गवाही मुक़द्दमा अली हुसैन के आये हैं उन
से ज़ामिन हुसैन की शादी में शामिल होने के बारे में
कहा गया था वह इक़रार कभी नहीं करते और कहते
हैं कि जो मैं आठ दस रोज़ के वास्ते घर के लोगों समेत

યહાં આ ગયા તો સિવાય વીસ વાઈસ રુપિયે ખર્ચ રાહ
કે સાઠ સત્તર રુપિયે કા નુકસાન હોગા સો અગર મૈં
શરીક ન હુઆ તો ભી નુકસાન હોગા સો આપ અચ્છી
તરહ સૂઝ લીજિયે યાકિ શિકાયત કા ફિર મૌકા બાકી ન
રહે ઔર યહાં સબ છોટે બડે લોગ ઔર મહલ્લવાલે
બહુત અચ્છી તરહ સે હૈં આપકો સલામ કે સિવા ઔર
ક્યા લિખૂં લિખા માસૂમ અલી ને ફકત બતારીખ
૨૯ શાબાન સન ૧૨૭૯ હિજરી

કિસી દોસ્ત કો જો દરગાહ મેં પડા હો

૯— શફીક ઉ જનાબ મુનશી સાહિબ સલામ કે પીછે
અરજ યહ હૈ મેરા હાલ લાયક શુકર કે હૈ ઔર આપ
કી દુઆ કા ઉમેદવાર હૂં આઠ દશ દિન હુએ મૈં નૌકરી
કી તલાશ કરતા હુઆ યહાં પહુંચા લેકિન અબ તક
કોઈ શકલ રોજગાર કી માલૂમ નહીં હુઈ દુઆ ફરમાઈએ
કિ ખુદાવંદ કરીમ મતલબ પૂરા કરે બડી ફિકર રહતી
હૈ લેકિન ક્યા ફાયદા જબ વક્ત આવેગા વે મેહનત
મિલ જાયગા મૈંને કઈ દફા આપસે વાદા ચિટ્ઠી પત્રી
કા કિયા મગર આજ તક ફુરસત ન મિલને ઔર
પરેશાની કી વજહ સે ઇત્તિફાક ન હુઆ થા સો મૈં પહિલે
હી અરજ કર ચુકા હૂં ઔર ઉમેદ કરતા હૂં કિ આપ
મેહરબાની કરકે દો બાતેં અપની ખૈરિયત કી લિખકર
ભેજ દિયા કરિયે મુઝ કો યાદ પડતા હૈ કિ મૈંને ચિટ્ઠી
સમેત હાશિમ અલી કી વાસતે પઢને કે આપ કે પાસ

મેજા થા યક઼ીન હૈ કિ આપકે પાસ પહુંચ ગયે હોંગે ઔર
ઝ્યાદા ક્યા અરજ઼ કરૂં કિ કોઈ હાલ માલૂમ સિવાય
ફ઼િક્ર ઔર બેચૈની કે નહીં હૈ અગર આપ મેરે પાસ
ખ઼ત ભેજિયેગા તો ઇસ પતા સે ભેજિયેગા અગર અલ્લાહ
ચાહેગા તો મુઝે મિલ જાવેગા ધાકરવાડા નજ઼ીરાબાદ
વ લેન સવાનો કે પાસ શેખ અશરફ઼ અલી
સાહિબ કે મકાન પર પહુંચ કર પાસ ફ઼લાં કે પહુંચે
લેકિન અગર દૂસરી દો ચાર દિન મેં લિખિયેગા તો ખ઼ૈર ઔર
નહીં તો ફિર યહ નિશાન કાફ઼ી ન હોગા ક્યોંકિ દો ચાર
દિન મેં કુછ ઠીક નહીં હૈ કિ ઘબરાહટ કે બાઇસ સે હમીર
પુર ચલા જાઊં જો વહાં ગયા તો ઇલાહાબાદ જ઼રૂર
જાઊંગા જો હાશિમ અલી સાહિબ પઢ઼ને કો આતે હોં
તો ઉનસે સલામ કે પીછે કહ દીજિયેગા કિ મૈં એક ખ઼ત
તુમ્હારે નામ રવાના કર ચુકા હૂં તુમ કો મિલ ગયા
હોગા ઔર નહીં તો ખ઼ૈર—
મીર સાહિબ મૌલવી મીર મુહમ્મદ અલી સાહિબ કી ખ઼િદમત મેં
સલામ ઔર ઔર સાહિબોં કો યથા ઉચિત સલામ-
આપકા ગુલામ મુહમ્મદ કાસિમ ૨૭ જૂન સન્ ૧૮૭૫
ઈસવી

હાજી સાહિબ કો

૧૦— જનાબ હાજી સાહિબ કો બંદગી—
હાલ યહ હૈ કિ યહાં ખ઼ુદા કે ફ઼ઝ઼લ સે ખ઼ૈર વ આફ઼િયત
ઔર સલામતી હૈ આગે આપ કી ખ઼ૈર વ તનદુરુસ્તી

હાદમ આરતા હૂં જિસ રોજ઼ સે કિ આપ ગયે હૈં કુછ હાલ આપકા માલૂમ નહીં હુઆ વડી ફિકર હૈ સો આપ વહુત જલદ અપના હાલ લિખ ભેજિયે યહાંકા યહ હાલ હૈ કિ શેખ઼સાહિવ કલકત્તા સે આયે હૈં ઔર વહ વાદશાહ સે એક હી મહીને કી છુટ્ટી લેકર આયે હૈં ઔર ઉનકા ઇરાદા યહ હૈ કિ ઇસી મહીના કી ૧૯ યા ૨૦ તારીખ઼ તક શાદી લડ઼કી સે ફ઼રાગ઼ત કરકે ૨૭ યા ૨૮ તારીખ઼ તક કલકત્તા કો ચલે જાવેં ઔર ઇસી વાસ્તે સાંહા મેજને મેં વહુત જલદી કરતે હૈં ઔર આપકે વુલાને કે વારે મેં ઉનકી વડી તાકીદ હૈ સો ખ઼ત દેખતે હી આપ વ ચચાસાહિવ ઔર માઈ રમજ઼ાનખાંસાહિવ સમેત આઇયે ઔર નહીં તો ૫ તારીખ઼ કો મૈં ઔર માઈ મુહમ્મદ-વખ઼્શસાહિવ જરૂર આપકે પાસ રવાનઃ હોવેંગે ઔર મુફ઼ત કી જેરવારી હોગી ઇસ વારે મેં વહુત જલદી કીજિયેગા વગ઼ૈર આપકે યહાં આયે કોઈ કામ દુરુસ્ત ન હોગા સો આપકે ઇત્તિલા કે વાસ્તે લિખા ગયા ઔર રાહ મેં માઈ ગુલામ મુહમ્મદસાહિવ સે ભી મુલાક઼ાત કરકે સંદેસા કહ દીજિયેગા ઔર જહાં તક હો સકે ઉનકો સાથ લેતે આઇયેગા ઔર નહીં તો ઉનકે લડ઼કે કો જરૂર સાથ લેતે આઇયેગા ઔર હમ સવકા દુઆ સલામ ઉનસે કહ દીજિયેગા ઔર ગ઼રીવ ઉલ્લાહ સાહિવ સે અગર ફેર જા વાદ મેં મુલાક઼ાત હો તો કહ દીજિયેગા કિ તુમ્હારે વાપને વમવઈ સે ખ઼ત ભેજા હૈ ઔર તુમ સવકો દુઆ સલામ કહા હૈ ઔર વહ ભી લડ઼કે વાલોં

समेत अच्छी तरह से हैं आगे माल तक अल्लाह चाहता है
तो हफ़्ते से लौट आवेंगे और मेरा हाल बदस्तूर है कुछ लिखने
की ज़रूरत नहीं है ज़ियादा बंदगी-
लिखा खुदा बख़्श ने लखनऊ से पहिली रजब सन्
१२७९ हिजरी

हाफ़िज़ साहिब को

२१- जनाब हाफ़िज़ साहिब को बंदगी-मुद्दआ
यह है कि आज सआदत अली और आप का किराया
पत्र रहा मुताबिक़ हुक्म आप के लड़की की डोली
की सवारी आठ आना किराया चले की छोड़ कर के सआदत
के साथ रुख़सत किया और मोहन वाग़बान को कई रोज़ से
जूड़ी ताप आती है और नहीं तो उसको भी सवारी के साथ
कर देता ज़बानी सआदत के हाल तनदुरुस्ती मुहम्मद शफ़ी
की मां का भी मालूम हुआ दिल जमई हुई अल्लाह उनको
और आप को तनदुरुस्त और खुश रक्खे गुलाम को अपना
तावेदार और हाज़िर व ग़ैर हाज़िर एकसां जानते रहिये
और भरोसा यह है कि हमेशः हाल खैरियत अपना और
सब छोटों व बड़ों का मेहरबानी कर के चिट्ठियों में
लिखते रहिये और हाल अपना की यकीन करो अब
तक शुक्र है अल्लाह ताला की मरज़ी से कुछ चारा नहीं
है लिखा अमीनुद्दीन ने फ़ैज़ाबाद से २९ फ़रवरी सन्
१८७२ ईसवी-

ઉસ્તાદકો

२९ — શાગિર્દ સરવોપરિ વિનાળઆન સલામ કબૂલ હો-
ખત આપ કા ડાક મેં આયા બડી ખુશી હુઈ અલ્લાહતાલા
ઐસા હી કરે ઔર આપ કા સાયા હમેશઃ હમ પર રખે આપ
કે દેખને કો મેરા જી બહુત ચાહતા હૈ દેખિયે કબ તક મુલાકાત
હો સો તબ તક ચિટ્ઠિયાં ભેજતે રહિયે ઇસલિયે કિ ચિટ્ઠી
આધા મિલના હૈ ઐસી બાત બાર બાર લિખના ઔર કહના
હિમાકત હૈ ઔર મૈં ડરતા હૂં કિ ખુદા ન કરે કિ ઐસા હો
કિ દુનિયાદારી ઔર બનાવટ કા શુબહા ન હો જાય ઔર
નહીં તો મુઝે આપ કી જાત સે બડી મુહબ્બત હૈ ઔર હર
તરહ સે ભરોસા હૈ લડકપન સે આજ તક કિ જવાની કી
ઉમર હૈ જિસ કદર કિ મુહબ્બત ઔર ઇનાયત આપ કી
મુઝ પર રહી શુકરિયા ઉસ કા અદા નહીં હો સકતા મગર
અપની બદબખ્તી તાલા સે બડા અફસોસ હૈ જો મુઝ નાલાયક
સે કિસી તરહ કી ખિદમત કા ભી ફરઝ અદા હોતા રહે તો
બડી કિસ્મત હૈ જનાબ નાના સાહિબ કી તબિયત કા હાલ
સુનકર બડી ફિકર પૈદા હુઈ અલ્લાહ ઉન કો
અચ્છા કરે ઔર મૈં યહાં બડી ચૈન સે આરામ મેં હૂં
ઔર ચાચા મુનશી ખલીલ અહમદ સાહિબ બહુત મેહરબાની
બડો કી તરહ કરતે હૈં ખુદા કી કસમ જો હકીકી ચચા
હોતા તો ભી ઐસી હી મેહરબાનિયાં ઉસ સે દેખને મેં આતીં
લેકિન ઇસ મુકામ કી આબ હવા ઐસી કુછ નામુવાફિક
હૈ કિ એક હફતા ભી તનદુરુસ્તી સે નહીં ગુજરતા - સો

कुछ मुक़ाम अंदेशः का नहीं है ना मुसाफ़िरकार पानी और
हवा से मजबूरी है और बाक़ी सब तरह पर ख़ैरियत है—
ज़ियादा सलाम—

दौलत को जो अपने से बड़ा दरजा रखता हो

२३— श्री ३ शुभोपमा योग्य बंदगी के पीछे अरज़
यह है कि जवानी मौत गौहर हुसेन के दरयाफ़्त हुआ कि दुशमनों
को नसीब हो कि लड़की को जुड़ी आती है इसके सुनने
से बड़ा संदेह हुआ लेकिन आसीर की रहने वाली
गुलाबो पर नालिश करने की बाबत से आना मेरा और
बेटा गौहर हुसेन का नहीं हुआ और न हो सकता है सो
चिट्ठी आदमी को देकर ख़ैरियत लड़की की दरयाफ़्त
करने के वासते रवाना किया है सो उसकी तबीयत के हाल
से इत्तिला फ़रमाइये बड़ी मेहरबानी होगी ख़ुदा क़सम
सम्मन अदालत के आने से लाचार हूं नहीं तो ज़रूर
आता और सब लड़कों वालों को दुआ सलाम और
बड़ों को बंदगी पहुंचे लिखा फ़ज़ल अली ने उनाम से
तारीख़ २७ शाबान सन् १२८३ हिजरी

बाप को

२४— श्री ६ पिता जीव को बंदगी — अरज़
यह है कि मैं आप सब बड़ों की दया से अच्छी तरह से हूं
और आप की तनदुरुस्ती रात दिन चाहता हूं और
बहुत दिन हुए कि आप की तबीयत का हाल नहीं पाया
सो बड़ा संदेह है इसलिये आप अपने हाल से बड़ी

જલ્દી ઇત્તિલા દીજિયે ઔર મૈં યહાં પર બહુત આરામ સે હૂં
ઔર ચાચા સાહબ કી મેહરબાની મુઝ પર બહુત હૈ કિ બયાન
નહીં કર સકતા હૂં ખુદા ઉન પર સદા અપના સાયા ઇસી તરહ
બનાયે રક્ખે જનાબ મેરે જિન લોગોં સે ઉધાર કા રૂપિયા લેના
થા ઉનસે કઈ દફા માંગા મગર એક કોડી ભી વસૂલ નહુઈ
ઇસ તરહ દુઃખ કે સિવાય એક નઈ બલાય અપને શિર યહ
લિયા હૈ કિ એક મુકદ્દિમા અપને તઅલ્લુક કા લિયા
હૈ દેખિયે ક્યા હોતા હૈ જો જીત ગયે તો ફાયદા હોગા નહીં
તો સબ મિહનત બરબાદ જાયગી આજ કલ હાલ યહાં કા
લિખને કે કાબિલ નહીં હૈ હર જગહ અદાલત કા જોર
શોર હૈ ખુદા રહમ કરે જલ્દી મેં ઇસ વક્ત ઇતના હી
લિખા ખુદા ચાહેગા તો અબકી બાર સાફ સાફ સબ હાલ
અરજ કરૂંગા જ્યાદા સલામ-મુહમ્મદ શમસુદ્દીન ઉનાવસે

કિસી બડે કો જો બડે દરજે કા હો

૧૫- શનીપૂ સરવરુન સાગર સલામત-સલામ કે પીછે હાથ
જોડકર અરજ કરતા હૂં કિ બહુત દિનોં સે આપકે દરશન
નહીં હુયે દિનોં કે ફેર મેં પડા હૂં ઔર ઇસ દુનિયા સે કૂચ કરને
કે વાસ્તે તૈયાર યહાં તક કિ જિન્દા મુરદા હૂં શૈખ ખુદા-
બખ્શ કે નયે કમરે પર સે રાત કો પેશાબ કરને કે વાસ્તે
ઉઠા થા સો ગિર પડા ઔર ચકના ચૂર હો ગયા નહીં માલૂમ
કિ ક્યા ભુગતના હૈ કિ જીતા બચા ઉઠને બૈઠને સે લાચાર
ઔર આપકે પાસ આને સે મજબૂર હૂં ગૈર હાજરી કે
બાઇસ સે ઇત્તિલા દી આપકી ખૈરિયત પાને કી

આશા હૈ-લિખા હાદી અલીને ૨૭ મઈ સન્ ૧૯૦૧ ઈસવી

ખત ભેજનેવાલોં કે નામ

દોસ્ત કો

૧— પ્યારે ઔ મેહરબાન દોસ્ત હિદાયત અલી સાહિબ સલામ કે પીછે હાલ યહ હૈ કિ મૈં બહુત અચ્છી તરહ સે હૂં ઔર આપ કી ખૈરિયત હર વક઼્ત ચાહતા હૂં દો ખ઼ત આપકે પહુંચે ઔર જો ઉસ મેં લિખા થા સો માલૂમ હુઆ યહાં કા હાલ યહ હૈ કિ મેરી મુહમ્મદ હુસેન કિ બહુત દિનસે બીમાર થે અબ ખુદા કી મેહરબાની સે અચ્છે હૈં ઔર ૨૯ તારીખ઼ જ઼ીકાદ સન્ ૧૩૧૯ હિજરી જુમા કે દિન નહાયે અભી કમજ઼ોરી બાક઼ી હૈ થોડે દિન મેં વહ ભી જાતી રહેગી મેરા અબ બિલકુલ જાતા રહા બિમારી કે સબબ સે ઇતની કમજ઼ોરી હોગઈ થી કિ ઉઠ બૈઠ ન સકતે થે ઇસ સબબ સે તાક઼ત સી મહીનોં મેં આવેગી દુઆ કીજિયે કિ જલદી ઉન મેં તાક઼ત આ જાવે કિ અપના કામ કાજ દેખે ઔર યહાં આપ કી મેહરબાની સે સબ કુછ મૌજૂદ હૈ ખુદા આપ કો ખુશ રક્ખે કિ આપ કો ઇતની મેરી ફ઼િકર હૈ મુઝ કો કિસી બાત કી તકલીફ઼ ઔર જ઼રૂરત નહીં હૈ નહીં તો મૈં આપ સે કુછ ખ઼ર્ચ મંગા લેતા— ઔર હાફ઼િજ઼ અલી હસન ખ઼ાં સાહિબ ને કુછ અંગૂઠિયાં આપ કો દી થીં ઉસ કા પુલિંદા બનાકે ૭ તારીખ઼ કો આપકે પાસ રવાનઃ કરદી હૈં યક઼ીન હૈ કિ પહુંચ ગઈ હોંગી કુલ દામ ઉન કે ૧૪।।=) હૈં હિસાબ ઉસ કા નીચે

જલ્દી ઇત્તિલા દીજિયે ઔર મૈં યહાં પર બહુત આરામ સે હૂં
ઔર ચાચા સાહબ કી મેહરબાની મુહબ્બત બહુત હૈ કિ બયાન
નહીં કર સકતા હૂં ખુદા ઉનપર સદા આપના સાયા ઇસી તરહ
બનાયે રખ્ખે જનાબ મૈંને જિન લોગોં સે ઉધાર કા રૂપિયા લેના
થા ઉનસે કઈ દફા માંગા મગર એક કોડી ભી વસૂલ ન હુઈ
ઇસ તરહ હુઈ કે સિવાય એક નઈ બલાઈ આપને શિર પર
લિયા હૈ કિ એક મુકદ્દમા આપને તઅલ્લુક કા લિયા
હૈ દેખિયે ક્યા હોતા હૈ જો જીત ગયે તો ફાયદા હોગા નહીં
તો સબ મિહનત બરબાદ જાયગી આજ કલ હાલ યહાં કા
લિખને કે કાબિલ નહીં હૈ હર જગહ અંધેર નગરી કા જોર
શોર હૈ ખુદા રહમ કરે જલ્દી મેં ઇસ વક્ત ઇતના હી
લિખા ખુદા ચાહેગા તો અબ કી બાર સાફ સાફ સબ હાલ
અરજ કરૂંગા જ્યાદા સલામ—મહમ્મદ શમશુદ્દીન ઉનામસે

કિસી બડે કો જો બડે દરજે કા હો

૧૫— શ્રીપૂ સરવગુનસાગર સલામત—સલામ કે પીછે હાથ
જોડ કર અરજ કરતા હૂં કિ બહુત દિનોં સે આપકે દરશન
નહીં હુવે દિનોં કે ફેર મેં પડા હૂં ઔર ઇસ દુનિયાં મેં કૂચ કરને
કે વાસ્તે તૈયાર યહાં તક કિ જિન્દા મુરદા હૂં શેખ ખુદા-
બખ્શ કે બડે કમરે પર સે રાત કો પેશાબ કરને કે વાસ્તે
ઉઠા થા સો ગિર પડા ઔર ચકના ચૂર હો ગયા નહીં માલૂમ
કિ ક્યા ભુગતના હૈ કિ જીતા બચા ઉઠને બૈઠને સે લાચાર
ઔર આપકે પાસ આને સે મજબૂર હૂં ગૈર હાજરી કે
વા ઇસ સે ઇત્તિલા દી આપકી ખૈરિયત પાને કી

आशा है—लिखा हादी अली ने २७ मई सन् १८७१ ईसवी

ख़त लगावनवालों के नाम

दोस्त को

१— प्यारे मेहरबान शेख़ हिलाल अली साहिब सलाम के पीछे हाल यह है कि मैं बहुत अच्छी तरह से हूं और आप की ख़ैरियत हर वक़्त चाहता हूं दो ख़त आप के पहुंचे और जो उस में लिखा था सो मालूम हुआ यहां का हाल यह है कि मियां मुहम्मद हसन कि बहुत दिन से बीमार थे अब ख़ुदा की मेहरबानी से अच्छे हैं और २९ तारीख़ ज़ीक़ाद सन् १२८१ हिजरी जुमा के दिन नहाये अभी कमज़ोरी बाक़ी है थोड़े दिन में वह भी जाती रहेगी गो अब बिल्कुल जाता रहा बीमारी के सबब से इतनी कमज़ोरी हो गई थी कि उठ बैठ न सकते थे इस सबब से ताक़त भी महीनों में आवेगी दुआ कीजिये कि जल्दी उन में ताक़त आ जावे कि आप का काम काज देखें और यहां आप की मेहरबानी से सब कुछ मौजूद है ख़ुदा आप को ख़ुश रक्खे कि आप को इतनी मेरी फ़िक्र है मुझ को किसी बात की तकलीफ़ और ज़रूरत नहीं है नहीं तो मैं आप से कुछ ख़र्च मंगा लेता—

और हाफ़िज़ अली हसन ख़ां साहिब ने कुछ अंगूठियां आप को दी थीं उस का पुलिंदा बना के ७ तारीख़ को आप के पास रवानः कर दी हैं यक़ीन है कि पहुंच गई होंगी कुल दाम उन के १४।।=) हैं हिसाब उस का नीचे

લિખ્યા જાતા હૈ-

હિસાબ અંગૂઠી

૨૦) છોટી અકીક કી અંગૂઠી ૫ કોડી

૪) કોડી વાલી

૨=) ઉનસે વડી અકીક વાલી અંગૂઠી ૮

૩)। વાલી

૩।।) વડા અકીક કી એક કોડી

૨૪।।=)

કુલ અંગૂઠીયાં છઃ કોડી ઔર આઠ હૈં કીમતી ૨૪।।=)
કી હૈં ઔર પુલિંદા વગૈરઃ મેં પાંચ રૂપૈ ૨=) પુલિંદા પરસાલ
મુઝે મહમ્મદ હુસેન કે નામ કી હૈં ઔર વજન ઉસકા
૧૫ તોલા હૈ મહસૂલ ઉસકા આપકો દેના હોગા અગર
મિલ ગયા હો તો રસીદ ઉસકી વહુત જલ્દ ભેજ દીજિયેગા
ઔર છોટે મકાન મેં ।।) માહવારી કા કિરાયેદાર વડી
દિક્કત સે રહતા હુઆ હૈ લેકિન તીસરા મહીના હો ચુકા
હૈ કિ એક પૈસા ભી વસૂલ નહીં હુઆ મગર વહ આપકે
વિરાદરી અમાન અલી કા વેટા હૈ સો ઉન પર તાકીદ ઐસી
ચાહિયે નહીં કી જાતી હૈ ઔર યુસુફ કી મામી વાવત
કિરાયા કે તકાજા કરતી હૈં કિરાયેદાર કો ઉઠા દેતી હૈં
કિ મકાન ખાલી હો જાયગા ઔર મહલ્લા વ પુલિસ
કે લોગ હમ કો દિક કરેંગે ઔર જો ભગવાન ન કરે
કહીં ચોરી હો ગઈ તો ઔર લેને કે દેને પડેંગે જાગહ જગહ
સે ટૂટા વ બેમરમ્મત હો ગયા હૈ અગર ખાલી રહતા તો

17

મહલ્લા મેં ચાર નાચાર ચોરી હોજાને કે ખૌફ સે
કિસી કો મજહૂલી દિકાર રખના પડતા ઐસી ઐસી વાતેં
સોચ કર ઉન કો મકાન મેં રખ્યાં હૈ સો યુસુફ કી
મા રહતી હૈ ઇસી વાસ્તે ઇત્તિલા કે લિખા ગયા હૈ
જૈસા આપ લિખિયે વૈસા કિયા જાવે જો આપ હુકમ
દેં તો કિરાયા માહવારી યુસુફ કી મા કો દે દિયા જાવે
ફિર મરમ્મત કા ઉન કો ઇખ્તિયાર હૈ હમ સે કુછ
સરોકાર નહીં હૈં રહ જાવેં ઔર મકાન વાકી સબ
ખૈરિયત હૈ સબ કો જો જિસ લાયક હો દુઆ સલામ
કહ દીજિયેગા - ઔર જવાબ ઇસ કા બહુત જલ્દ
લિખિયેગા લિખા કરીમ બખ્શ ને લખનઉ સે
મહલ્લા ચોક ૯ વીં જિલહજ સન્ ૧૨૯૬ હિજરી

દોસ્ત કો

૨ — મેહરબાન મેરે હાફિજ અબ્દુલગફ્ફાર સાહિબ
બંદગી - આપ કા મિજાજ અચ્છા હૈ મૈં ખૈરિયત સે હૂં
ઔર આપ કી ખૈર વ આફિયત કા ચાહને વાલા મુદ્દત સે
આપ કે હાલ સે ઇત્તિલા નહીં હુઈ ઔર ન મેરા ઇત્તિફાક
ઉધર જાને કા હુઆ કિ આપ સે મુલાકાત હોતી સિવા
ઇસ કે આપ ને યહ ભી ફરમાયા થા કિ મૈં અકસર મોજા
અલસીવન મેં રહા કરતા હૂં સો હાજિર નહીં હો સકા ઔર
જો હુઆ સો હુઆ અબ યહ ચિટ્ઠી ભેજ કર આપ કી
મુલાકાત કા ઉમેદવાર હોકર ચાહતા હૂં કિ ખત
કિતાબત સે જરૂર ખુશ કિયા કીજિયેગા ઔર માલૂમ

नहीं कि आप आजकल अमीरन में हैं या काममनडी
में - इन दोनों मक़ामों में से जिस जगह आप ज़्यादा
रहते हों वहाँ का पता साफ़ साफ़ लिखिये कि उस मक़ाम
पर ख़त भेजा जावे और यह ख़त बेरंग रवाना किया
गया है और बेड यानी महसूल देकर भेजूँगा और आप
को इख़्तियार है जिस तरह चाहिये भेजिये वापस
न हो॥ इन दिनों हाफ़िज़ मुहम्मद अहमद साहिब
देहली में रहते हैं मेरे पास अक्सर चिट्ठियाँ उनकी
आती हैं और हर ख़त में तुम को और शेख़ साहिब
को सलाम लिखा होता है और बाक़ी सब ख़ैरियत
है और जनाब शेख़ साहिब की ख़िदमत में अर्ज़
यह है कि अगर मेहरबान हाफ़िज़ अब्दुल ग़फ़्फ़ार
साहिब मकान पर नहीं तो यह ख़त उनके पास ज़रूर
भेज दीजियेगा॥ और पता से मुझ को इत्तिलाअ फ़रमाइयेगा
लिखा ज़हूरुद्दीन हसन ख़ाँ शागिर्द जनाब हाफ़िज़
मुहम्मद अहमद साहिब २८ जून सन १८७५
हुगली ज़िला बंगाल

दोस्त को जो उम्र वा बड़ा रखता हो

३- मेरे क़दीम मेहरबान जनाब मौलवी इनायत
हुसैन साहिब सलाम-बंदगी क़बूल हो मैं घर से आप की
तरफ़ से हूँ और आप का सलामती जान से चाहता
हूँ आपने जो दोस्ती की राह पर कल १००) रुपिये
मेहरबानी करके क़र्ज़ दिये थे मैं आपका बड़ा निहायत

માનતા હૂં જ઼બાન નહીં કિ શુક્ર ઉસકા હો સકે અલ્લાહ
આપકો ઇસકા બદલા દેને કો દે ઇસ વક઼્ત એક જગહ
સે કુછ રુપિયા મેરે પાસ આગયા સો ૨૦) રુપિયા જો
કલ આપને મેહરબાની કરકે ભેજ દિયે થે વહ સો
રુપિયા દૂસરે આદમી કે હાથોં ચિટ્ઠી દેકર આપકી
ખ઼િદમત મેં ભેજતા હૂં આગે સલામ- ૨૫ ફ઼રવરી
સન્ ૧૮૭૪ ઇસવી- લિખ્ખા વિલાયતહુસેન ને-

બરાબરવાલે દોસ્ત કો

૪ – મેહરબાન દોસ્ત મેરે શેખ઼ ખ઼ુદાબખ઼્શ સાહિબ
સલામત- સલામ કે પીછે માલૂમ હો કિ યહાં અબતક
ખ઼ૈરિયત હૈ ઔર આપકી ખ઼ૈરસલાહ હમેશઃ ખ઼ુદા સે
ચાહતા હૂં સો દોસ્ત મેરે આજ કિ ૨૪ રબીઉસ્સાનીકી
હૈ ૧૫૦) રુપિયે કે દો નોટ એક તાદાદમેં ૨૦૦) રુપિયા કા
ઔર દૂસરા ૫૦) રુપિયા કા લિફ઼ાફ઼ેમેં બંદ કરકે આપ
કે પાસ ભેજતા હૂં જિસ વક઼્ત મિલ જાવેં રસીદ બહુત
જલ્દ ભેજ દીજિયેગા ઔર આપકો યાદ હોગા કિ ૨૦)
રુપિયે પહલે કે આપકે પાસ જમા હૈં કુલ રુપિયા ૧૭૦) હુએ
ઇનમેં સે ૧૦) રુપિયા બેટા હાફ઼િજ઼ અલી કો દે
દીજિયેગા ઔર બાક઼ી ૧૬૦) રુપિયે કા અસબાબ
નીચે લિખ્ખા હુઆ બહુત જલ્દ ખ઼રીદ કરકે રવાનઃ
ફ઼રમાઇયેગા ઇસલિયે કિ મૈંને એક આદમી સે એક
હફ઼્તા મેં મંગા દેને કા વાદા કિયા હૈ અગર આપ ઢીલ
કરેંગે તો મુઝે શરમિન્દઃ હોના પડેગા ઇનમેં સે અગર કોઈ

થોળ મુસાફિર લિખને કે ન મિલ સકે તો આપની મરથી
કે મુસાફિર લે લીજિ દેગા લેકિન જિસ કદર જલ્દી
ભેજિ દેગા ઉસી કદર ફાયદા નિહોગા માનૂંગા-
૨૫) ગુખ્ખૂ સોને કે આચકેનાર કો ૨ કો માશા મેં ડગા જ
૨૦) ગુખ્ખૂ સોને કે કાગજ પર કા આચળા જોગા હો-
૨૬) વાદલા સોને કા-
૨૫) સલમા સોને કા આચળા મહીન ૨૫ તોલે-
૨૦) લચકા સોને કા ૨ કે આંગુલ આરજ કા ૨૦ તોલા-
૨૫) ચુટ કી ચાંદી કી ૨૨ તોલે-
૬) સિતારા સોને કા-
ઔર આગર રૂપિયા કુછ કમી પડે તો આપને પાસસે મિલા
લીજિ દેગા ઔર આગર વાકી રહે તો આપને પાસ જમા
રખિ દેગા-
ઔર મિર્ઝા કરીમ વખ્શ કી તરફ સે મિરજા દુલાહી
વખ્શ કો માલૂમ હો કિ હમને ખત કા જવાબ આપને
અવતક નહીં રવાના કિયા જલદ આપની ખેર સલાહ
લિખિયે ઔર મૈં ભી આલ્લાહ ચાહતા હૈ તો પહિલી
રજબ કો જમ્મૂ સે રવાના હૂંગા ઔર ઉસી મહીને
મેં ઉન કો આપને લડ઼કે કી શાદી કરના હોગી ઔર
વાકી સબ ખેરિયત હૈ કલકત્તા મુકામ મટિયા બુરજ
૩ જમાદી ઉલ સાની સન ૧૨૮૯ હિજરી લિખા મહમ્મદ હુસેન

વરાવરકે હોસત કો

૫- મેરે દોસત શેખ મુનનૂ સાહિબ સલામત-અલૈકુમ

પીછે માલૂમ હો શુક્ર ખુદા કા હૈ કિ હમ બફ઼ઝ઼લ તકી ખૈરિયત હૈ ઔર આપકી ખૈર સલ્લાહ હરદમ ચાહતા હૂં આપકી ચિટ્ઠી આઈ ઔર ઉસ મેં જો કુછ કિ લિખા હુઆ થા સબ માલૂમ હુઆ પહલે ઇસકે ૩૫) હુંડિ કી હુનડી જો વાસ્તે લેને રૂઈ ઔર મરમ્મત મકાન કે ભેજા થા સો આજતક ઉસકા જવાબ નહીં આયા ઔર ન કુછ હાલ મરમ્મત મકાન વગૈરઃ કા માલૂમ હુઆ બહુત ફ઼િક્ર માલૂમ હોતી હૈ કિ ઉસ હુંડિ કી મિતી અભી પૂરી નહીં હુઈ અગર સચ સચ ઐસા હી હૈ તો કુછ ચિન્તા નહીં હૈ ઔર નહીં તો આપ જલ્દ ઇત્તિલા દીજે કિ ઔર કોઈ તરદ્દુદ ન કીજિયે ઔર અલ્લાહબખ્શ બેટા ખુદાબખ્શ કા ખૈરિયત સે યહાં મૌજૂદ હૈ યકીન હૈ કિ આઠ સાત દિન મેં વહ ભી સાથ મિરજા કલ્લન અલી કે રવાનઃ હોવે—

ઔર અભી તક યહાં પાની નહીં બરસા માલૂમ નહીં કિ વહાં બરસા યા નહીં અગર ન બરસા હો તો જહાં તક હો સકે મરમ્મત મકાન મેં ગફ઼લત ન કીજિયેગા ઔર નહીં તો ફિર બરસાત કે હોજાને પર ઔર બાકી સબ છોટે બડે ખૈરિયત સે હૈં ઔર દુઆ વ દરજા સલામ વ દુઆ પહુંચાતે હૈં

૧૯ રજબુલ્ મુરજ્જબ સન્ ૧૨૯૬ હિજરી

લિખ્ખા કરીમ બખ્શ—

૬— ખત મેરે લાલા ઉલ્ફ઼તરાય સાહિબ સલામત—

બંદગી—હાલ યહાં કા બદસ્તૂર હૈ ઔર આપકી ખૈરો આફ઼િયત

हरदम चाहता हूं दो तीन खत आपके आये आपकी
खैर सलाह जानकर दिलजमई हुई सच मुच खतों
के जवाब लिखने में मांदगी तबीयत और कोई कोई
फिकरों के सबब से कसूर हुआ है माफ कीजिये और
बाकी हाल यहां का आप के लिखने के नहीं है जी बहुत
घबराता है जनाब साहिब रेजीडेन्ट बहादुर राजपूताना
होने पर यहां आये थे बहुत तदबीरें यहां से कोई
और जगह जाने के वास्ते की गईं लेकिन बसबब न
खाली होने जगह के राजपूताना में कोई तदबीर न
चली जब तक कि यहां का दाना पानी है वह हिलने नहीं
देगा आगे जो परमेश्वर की मरजी होगी होगा हर
हाल में शुकर उसका करता हूं और अरसा लगभग
७ दिन के हुआ होगा कि हुंडी २५) रुपिया की आपके
पास रजिस्टरी करके भेजी गई थी मगर अब तक रसीद
उसकी नहीं आई इससे बहुत फिकर है उमेद है कि
जो हुंडी पहुंच गई हो तो रसीद भेज दीजिये और बाकी
सब तरह खैरियत है लडकों और लडकियों को दुआ
पहुंचे - लिखा करम हुसेन बडौदा से
तारीख २४ अक्तूबर सन १८७१ ईसवी

७ — मेहरबान दोस्तों के हमेशः हो मेहरबानी
तुम्हारी - सलाम के पीछे जाहिर हो - भगवान की
किरपा से दोनों तरफ खैर सलाह है जिस रोज से
वेद रसूल बख्श गोड़ा गये हैं आज तक उनका हाल

मालूम नहीं हुआ वह गरीब कौन है इसवास्ते तकलीफ़
देता हूं कि जो आप को उन का हाल मालूम हो तो लिखिये
और नहीं तो शकूर अहमद साहिब से पूछ लीजियेगा।
उनको बड़ा रसूल बख़्श का पता मालूम है किसलिये
कि उनके पास आगे ख़त आया था और जब से मैं यहां
आया हूं बनारस के बाबू से कुछ चीज़ नहीं बिकी इसी
वजह से ख़र्च भेजने में देर हुई ख़ुदा चाहता है बाद
२० व २५ दिन के ज़रूर ख़र्च रवानः करूंगा। इससे
पहले जो होसके तो ३०) रुपिये हमारे घर में दे दीजियेगा।
और आप तकलीफ़ करके साफ़ साफ़ हाल वहां का
लिखिये कि फ़िकर दूर हो और मैं दो महीने तक यहां
रहूंगा। किसलिये कि एक आदमी ने २३०) रुपिये
का असबाब ख़रीद किया है और दो महीने के बाद
रुपिया देने का वादा किया है और रहीम बख़्श गोटा
बनाने वाले २५ रबी उस्सानी को यहां से रवानः हुये
और आज तक अपने पहुंचने का ख़त उन्होंने यहां
रवानः नहीं किया अगर वहां पहुंचे हों तो ताकीद कीजि
उनसे ख़त लिखवा कर रवानः कीजियेगा। उनके घर
में बड़ा संदेह है और ज़ियादा क्या तकलीफ़ दूं लिखा
हुसेन बख़्श ने देहली से जामा मसजिद के पास मकान
सैयद अली हसन साहब मुन्‌सरिम

८ — मुनशी साहब मेहरबान मुहम्मद आज़म
सलामत — सलाम के पीछे मालूम हो कि मेहरबानी

का ख़त आप का मैंने ख़त के जवाब में पहुंचा और
बहुत ख़ुश किया व दिलजमई हुई अल्लाह आपको
हर एक आफ़त से बचा रखे ख़ुश रक्खे आपने जो
लिखा कि जुलाबों से कमज़ोरी बढ़ गई है दोस्त
मेरे बीमारी का कम होना मुक़द्दम है कमज़ोरी से
सिवाय सुस्ती के कोई नुक़सान नहीं है अब बीमारी
दूर हुई ख़ुदा चाहता है तो पुश्त दवाइयां खाने से कम-
ज़ोरी भी जाती रहेगी व तबीयत आगे की सी हो जायेगी
लेकिन आब हवा उस तरफ़ ऐसी ख़राब है कि तन्दुरुस्त
आदमी बीमार हुए जाते हैं न कि कमज़ोर - अगर
आप हकीम साहिब की सलाह से थोड़े रोज़ के वास्ते
यहां चले आवें तो बहुत मुनासिब है और नहीं तो
जैसा वह कहें वैसा कीजियेगा परमेश्वर हर जगह
रखवाला व निगहबान है रोज़गार का मामला है और
भगवान की मरज़ी में कुछ उपाय नहीं है आपका इस
ज़िला से चले जाना ऐसी फ़सल में हुआ जिस से यह
ख़राबी ज़ाहिर हुई अल्लाह ताला आप को ख़ुश
और तन्दुरुस्त रक्खे हर एक आदमी दरजा बदरजा
आपको दुआ देता है अल्लाह किसी न किसी की
दुआ क़बूल करेगा हर वक़्त जब तक कि आप की
कमज़ोरी की कमी का हाल दरियाफ़्त नहीं होता जी
लगा रहता है उम्मेद कि बाद पहुंचने के जल्द अपना
हाल लिखिये-ज़ियादा सलाम लिखा अमजद अली

લખીમ પૂના - ૩૧ જાનવરી સન ૧૮૭૨ ઈસવી —

૯ — જનાબ મુનશી મૂલચંદ સાહિબ - બાદ સલામ કે અરજ યિહ હૈ કિ આપની બેપરવાઈ સ ચિરનજીવ શાદી લાલ કી બે વ્હો વખતી સે વ સતા મકતૂબાત કા જવાબ પતા નહીં લગા ફ્નૂની જાન કર આપકે મહલ્લા મેં સબ સાહિબોં સે પૂછા લેકિન આપ જરાબ પાયા નિરાસ હોકર આપકે મકાન પર આયા જો મુલાકાત હો જાતી તો ફૈદ જાતા રહતા લેકિન મુલાકાત ન હોને સે જી ઘબરાયા - મીના બાઝાર પહુંચા મગર આ માપ સે વહાં ભી મતલબ પૂરા ન હુઆ લાચાર હોકર ઉમેદ વાર આપને કસૂર કી માફી કા હૂં જવાબ જરૂર લિખના લિખા મનોહર લાલ મુહરિર ૨૨ જોલાઈ સન ૧૮૭૬ ઈસવી

૧૦ — આસ્ના સાહિબ દોસ્તો કે મેહરબાન આસ્ના મહતાબ રાય સાહિબ સલામત - બાદ શોક મુલાકાત કે માલૂમ હો કિ યહાં બૈખૈરિત હૈ આપ કી તનદુરસ્તી શ્રી મહાદેવ જી સે ચાહતા હૂં દોસ્ત મેરે વિવાહ બેટી કા જેઠ સુદી પંચમી કો ઠહરા હૈ સો નામાનામ ચપરાસી નિરતા લેકર આપકે પાસ પહુંચતા હૈ ઉમેદ વાર હૂં કિ જિસ તરહ હોસકે જરૂર જરૂર વિવાહ મેં આવે ઔર ચિરનજીવ દરિયાવ લાલ કો ભી જરૂર સાથ લાવે - લિખા ચંદી પરસાદ લખનઊ મહલ્લા પાટાનાલા સે ૨૮ અગસ્ત સન ૧૮૭૫ ઈસવી -

११- मुझ पर मेहरबानी करनेवाले जनाब मुन्शी साहिब सलामत— बंदगी। आप अच्छी तरह से हैं क़सूर माफ़ आज जानी हुई किताबें किसी सबब से नहीं लाया अल्लाह ने चाहा तो कल ज़रूर हाज़िर करूंगा ख़ातिरजमा रखिये और जो आप ख़त कल्लन ख़ां साहिब का लाये हों तो इसी आदमी को मेहरबानी फ़रमा दीजै किस लिये कि कल उनके पास से आदमी आया था और बहुत तक़ाज़ा करता था सो मैंने उसे बुलाया है जो आज आप मेहरबानी फ़रमायें तो दे दिया जाय और नहीं तो कल ज़रूर भेज दीजियेगा कि मुझ को ख़ां साहिब से बड़ी शरम मालूम होती है ज़ियादा सलाम-

लिखा हफ़ानी लाल सीतापुर से ९ मार्च सन् १८७३ ई-
ईसवी-

१२- मेहरबान मेरे ज़ियादा हो मुहब्बत तुम्हारी-सलाम के पीछे मालूम हो शुक्र अल्लाह का कि दोनों तरफ़ ख़ैरियत है- एक नोट नम्बरी २४७४१ तादादी २०) रुपिया का वास्ते मोल लेने किताबें पढ़ने की रवानः किया गया था लेकिन उसका जवाब आपने अब तक नहीं भेजा ख़ुदा जाने पहुंचा या नहीं अगर पहुंचा हो तो देखते ही इस ख़त के जल्द लिखी हुई किताबें भेज दीजियेगा लेकिन ख़याल रहे कि सब किताबें छापा मुस्तफ़ाई या हाजी महम्मद हुसेन की

હીં ઔર અગર કોઈ કિતાબ ઇન દોનોં છાપાખાનોં મેં
સે ન મિલ સકે તો લાચારી દરજા છાપાખાના અલી
બખ્શ ખાં સે લેકર રવાનઃ ફરમાઇયેગા નિહાયત માનૂંગા
ઔર લિફાફા પર દૂસરે આદમી કે નામ લિખને કી
કુછ ઝરૂરત નહીં હૈ ખાસ મેરા નામ લિખિયેગા ઔર
કરીમ બખ્શ કી તરફ સે સબ સાહિબોં કો દરજા બદરજા
સલામ બહુક્મ કહ દીજિયેગા ॥ ઝિયાદા સલામ - લિખા
કરમ ઇલાહી કલકત્તા સે ૨૯ રજબ સન ૧૨૯૪
હિજરી

૧૩ — દોસ્ત મેહરબાન સલામત - બાદ સલામ કે
માલૂમ હો કિ મૈં ખૈરિયત સે હૂં ઔર આપકી તન્દુરુસ્તી
હમેશઃ ચાહતા હૂં મેહરબાની કા ખત પહુંચા હાલ
માલૂમ હુઆ મૈંને તો આપકો યહ નહીં લિખા થા કિ
અસબાબ આપને મહંગા મોલ લેકર ભેજા હૈ જનાબ
મેરે આપને બહુત મેહનત સે બહુત ઉમદઃ ઔર સસ્તા
અસબાબ રવાનઃ કિયા હૈ ઔર આપકી મેહરબાની સે
ઉમેદ હૈ કિ ઇસમેં બહુત કુછ નફા મુઝ કો મિલેગા ॥
ઔર આગે જો ૩૦) રુપિયે બટ્ટે ભેજને કે વાસ્તે
રવાનઃ કિયે થે ઉસકી યહ સૂરત હૈ કિ અગર ઇસી
સાત આઠ રોજ મેં ૪) રુપિયે સેકડા તક બટ્ટે મિલ સકૈં
તો ભેજ દીજિયે ઔર બાદ ઇસકે જો ૬) રુપિયા ભી મિલૈં
તો ન ભેજિયેગા ક્યોંકિ ઇસ અરસા મેં બહુત આદમિયોં
કે બટ્ટે પહોંચ જાવેંગે ઔર ફિર ઉતના નફા ન હોગા ॥

૨૧ - મુઝ પર મેહરબાની કરનેવાલે જનાબ મુનશી
સાહિબ સલામત — બંદગી - આપ અચ્છી તરહ સે હૈં
ક઼સૂર માફ઼ - આજ જાની હુઈ કિતાબેં કિસી સબબ સે
નહીં આઈ - અલ્લાહ ને ચાહા તો કલ ઝ઼રૂર હાજ઼િર
કરૂંગા ખાતિર જમા રખિયે - ઔર જો આપ બાત
કલ લનન બાં સાહિબ કા આયા હાં તો ઇસી આદમી કો
મેહરબાની ફ઼રમાઇયે કિસ લિયે કિ કલ ઉન કે પાસ
સે આદમી આયા થા ઔર બહુત તક઼ાજ઼ા કરતા થા સો
મૈં ને ઉસે બુલાયા હૈ જો આજ આપ મેહરબાની ફ઼રમાયેં
તો દે દિયા જાય ઔર નહીં તો કલ ઝ઼રૂર ભેજ દીજિયેગા
કિ મુઝ કો બાં સાહિબ સે બડી શરમ માલૂમ હોતી હૈ ઝ઼િયાદા
સલામ -
લિખા હમારી આલસીતા પૂર સે ૨૯ મારચ સન ૧૮૭૩ ઈ
સવી -

૨૨ - મેહરબાન મેરે ઝ઼િયાદા હો મુહબ્બત તુમ્હારી -
સલામ કે પીછે માલૂમ હો શુક્ર અલ્લાહ કા કિ
દોનોં તરફ઼ ખૈરિયત હૈ - એક નોટ નમ્બરી ૨૪૭૬૧
તાદાદી ૨૦) રૂપિયા કા વાસ્તે મોલ લેને કિતાબેં પઢને
કી રવાનઃ કિયા ગયા થા લેકિન ઉસ કા જવાબ આપ ને
અબ તક નહીં ભેજા ખુદા જાને પહુંચા યા નહીં અગર
પહુંચા હો તો દેખતે હી ઇસ ખત કે જલ્દ લિખી હુઈ
કિતાબેં ભેજ દીજિયેગા લેકિન ખ્યાલ રહે કિ સબ
કિતાબેં છાપા મુસતફ઼ાઈ - યા હાજી મુહમ્મદ હુસેન કી

हां और अगर कोई किताब इन दोनों छापाखानों में
से न मिल सके तो आचार्य द्वारा छापाखाना अली
बख्श खां से लेकर रवानः फरमाइएगा निहोरा मानूंगा
और लिफाफा पर दूसरे आदमी के नाम लिखने की
कुछ ज़रूरत नहीं है खाली मेरा नाम लिखिएगा और
करीम बख्श की तरफ से सब साहिबों को दरजा बदरजा
सलाम व दुआ कह दीजिएगा ज़ियादा सलाम - लिखा
करम इलाही कलकत्ता से २८ रजब सन् १२८४
हिजरी

१३ — दोस्त मेहरबान सलामत - बाद सलाम के
मालूम हो कि मैं खैरियत से हूं और आपकी तन्दुरुस्ती
हमेशः चाहता हूं मेहरबानी का खत पहुंचा हाल
मालूम हुआ मैं ने तो आपको यह नहीं लिखा था कि
असबाब आप ने महंगा मोल लेकर भेजा है जनाब
मैंने आपने बहुत मेहनत से बहुत उमदः और सस्ता
असबाब रवानः किया है और आपकी मेहरबानी से
उम्मेद है कि इसमें बहुत कुछ नफ़ा मुझको मिलेगा
और आपने जो ३०) रुपिया बट्टे भेजने की बाबत
रवानः किया था उसकी यह सूरत है कि अगर इसी
सात आठ रोज़ में ४) रुपिया सैकड़ा तक बट्टे मिल सकें
तो भेज दीजिए और बाद इसके जो ६) रुपिया भी मिलें
तो न भेजिएगा क्योंकि इस अरसा में बहुत आदमियों
के बट्टे यहां आजावेंगे और फिर उतना नफ़ा न होगा

મુફ્ત કી પરેશાની હોગી ઔર યહાં વાઇહ દસ્તૂર હૈ
કિ જિસ શખ્સ કી જો ચીજ઼ જિસ તરહ કી પહલે આતી
હૈ વહી વડી કદર સે વિકતી હૈ ઔર જબ હર જગહ ફૈલ
જાતી હૈ તો વહુત વેકદરી ઔર દિક્કત સે જુદા હોતી
હૈ લેકિન ઇન જાનવરોં કી રવાનગી મેં વહુત હોશિયારી
કીજિયેગા ॥ ૨ વા તો ફટ્કે મેં દાના વ પાની જ઼રૂર રખિયેગા ॥
દૂસરે ડાક ગાડ઼ી સે રવાનઃ કીજિયેગા ॥ ઔર કાનપૂર
સે વલ્કિ ઇલાહાબાદ સે રવાનઃ કીજિયેગા ઔર પુર્જત
મુઝકો તારવર્કી મેં ખ઼બર દેજિયેગા ॥ યે સાલ હો કિ
જાનવર રાહ મેં મર જાયેં ॥ આગે લિખના થોડ઼ા સમઝના
વહુત-જ઼િયાદા સલામ લિખા આનંદ રૂકૂને-

ખ઼ત વડોં કી તરફ઼ સે છોટોં કો

૧—. ધની ચિરંજીવ જાન સે પિયારે ભાઈ
મુહમ્મદ હસન ખ઼ાં - જીતે રહો વહતી ઉમર ઔર
દૌલત કે માલૂમ હો કિ યહાં સબ તરહ સે ખ઼ૈરિયત હૈ
ઔર તુમ્હારી ખ઼ૈરવાફ઼િયત હર વક઼્ત કી ચાહિયે
ખ઼ત તુમ્હારા વડી ઇન્તિજ઼ારી મેં પહુંચા હાલ જાના
જો કિ તુમને અપને ઘર કે લોગોં કી બાબત લિખા હૈ
કિ ચંદ દિન તક તુમ્હારે ઘર મેં રહે ઔર મેરી
માં કો અકેલી ઘર મેં છોડ઼ા ઔર ઉન કી સેવા
બરદાશ્ત ન કી ભાઈ મેરે તુમ્હારે ઘર કે લોગ અશરાફ઼
મુહર્રમ મેં તો મેરે ઘર મેં આયે થે ઔર બાદ ફ઼ુરસત
અશરાફ઼ કે ફિર અપને ઘર મેં ચલી ગઈ ઔર આપકી

मा के पास हैं सो अरसा हुआ— और मैंने दो चार बार बुलाया भी मगर आजतक यहां नहीं आई इत्तिला के वास्ते आपको लिखा और इन दिनों यहां पानी बहुत बरसा और अकसर मकानात शहर व बाहर के गिर पड़े सो कई दीवारें तुम्हारे मकान की भी फट गई हैं और आपके घर में ख़र्च की बहुत तकलीफ़ है जो हकीम साहिब ने कुछ दिया तो ख़र्च हुआ और सिवाय इसके और किसी जगह से सूरत खाने पीने की नहीं है आपको चाहिये कि अपने फ़रज़न्दों में से किसी और शख़्स के नाम अपना रुक़्क़ा भेज कर कुछ माहवारी मुक़र्रर करा दीजिये कि रोज़ रोज़ की दिक़्क़तों से छुट्टी मिले अरसा दो महीना से यहां हैज़ा का बड़ा ज़ोर है कि सैकड़ों आदमी मर चुके हैं और मरते जाते हैं लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि आपके भाई बंद सब ख़ैरियत से हैं ज़ियादा हुआ लिखा अफ़ज़ल अलीखां बनारस से ३ शाबान सन् १२७० हिजरी

२— शाही चिरनजीव मियां मुहम्मद अलतफ़ात तुम्हारा दरजा ज़ियादा हो— पीछे दुआ ज़ियादा होने दौलत व अक़बाल के कि ख़ुलासा मतलब दिल का है मालूम हो कि मैं ख़ैरियत से हूं और तुम्हारी ख़ैरआफ़ियत का हर वक़्त दरगाह ख़ुदा-वन्दताला से दुआ मांगता हूं बेटे मेरे १५ शौवाल

સન ૧૨૭૮ હિજરી કો મૈં કુમડુ સે રવાનઃ હોકર ચાહતા
થા કિ તુમ્હારી તરફ઼ હોતા હુઆ જહાનાબાદ જાઊં.
લેકિન તબિયત માંદી હોગઈ ઇસ વજહ સે સંદીલા મેં
રહના હોગયા અબ ખુદા કે ફ઼ઝ્લ સે આરામ હોકર
૨૮ શોવ્વાલ કો લખનઊ મેં પહુંચા યહાં આકર સુના
ગયા કિ તુમ જહાનાબાદ જા ચુકે હો ઔર આજકલ
ઇરાદા હૈ કિ મીર સૈયદ અલી સાહિબ કે સાથ મોજા
કઠવારા હોતા હુઆ જહાનાબાદ મેં આકર તુમ કો
દેખકર ખુશ હૂં તુમ કિસી તરહ સે ન ઘબરાના ઔર
અસબાબ જો કિ ઇસ આદમી કે હાથ પહુંચતા હૈ
ઉસ મેં સે ખ્વાજા અમાચિકન કે જો કિ તૈયાર નહીં હૈ
ઉનકો અપની પસન્દ કે મુતાબિક઼ માઅરફ઼ત મુહમ્મદ
ખ઼ાં કે તૈયાર કરા લેના ઔર જોડે જ઼રબાફ઼ી કે તુમ
ઔર તુમ્હારે ભાઈ અપને અપને પાંવ કે આપસ મેં
બાંટ લેના ઔર શાયદ કોઈ જોડા હર એક કે પાંવ
સે છોટા યા બડા હો તો ઉસકો ઇસી આદમી કે હાથોં
જલ્દ ફેર દેના કિ બદલકર દૂસરા ભેજ દિયા જાવે
ઔર બાક઼ી ચીજ઼ અગર કામ મેં આવેં તો અચ્છા
નહીં તો ખ઼બરદારી સે રખ છોડના ખ઼રાબ ન કરના
ઔર લિખને પઢને સે કભી ગ઼ાફ઼િલ ન હોના કિ આગે
કો તુમ્હારે કામ આવેગા નહીં તો અફ઼સોસ કરોગે
ઔર બાક઼ી સબ ખ઼ૈરિયત હૈ હમારી તરફ઼ સે અક઼બાલ
બહાદુર સાહિબ કો સલામ અર્જ઼ કર દેના જ઼િયાદા

सिवाय हुक्म के बाबा लियूं लिख्या करीम बख्श
लखनऊ से पहिली ज़ीक़ाद सन १२७८ हिजरी-
३ - शनीचर नजीर जाहदा हो दौलत तुम्हारी
पीछे जाहिद उमर और हनजा के मालूम हो कि
हाल यहां का अच्छा है और तुम्हारी तन्दुरुस्ती
चाहिये आगे १० दिन का हुआ कि हम पैमाइश
ज़िले उन्नाव से छुट्टी पाय के साहिब बहादुर के
पास पहुंचे यहां आकर मालूम हुआ कि साहिब
बहादुर की बदली इस ज़िलासे नवाबगंज बारा-
बंकी को होगई है सो पहली दिसम्बर सन १८६२
ईसवी को अमला समेत वहां जावेंगे लेकिन साहिब
ने खुद को यहां अट्ठी के काम पर मुकर्रर किया है
सो १६ नवम्बर सन १८६२ ईसवी से काम जारी
आमद और बरामद वग़ैरः का सब हमारे सिपुर्द
होगया है लेकिन काम बड़ा है इस बाइस से दिल
घबराता है कि देखें किस तरह इस काम का बंदोबस्त
होगा और बाकी लोगों के मालूम हुआ है कि
जो साहिब कि साहिब की जगह आवेंगे वह किसी
क़दर खफा रहते हैं लेकिन खुदा मालिक है हम ने तो
साहिबसे अर्ज़ किया था कि हुजूर मुझको अपने
पाससे अलग न करें लेकिन साहिब बहादुर ने
इकरार किया कि तुम्हारे वास्ते यह ओहदा अच्छा
होगा तुम इनकार न करो और नहीं तो अफसोस

करोगे इस वजह से मैंने यह ख़िदमत क़बूल करली कि आप साहिबबहादुर नाराज़ होजावें आगे जो हो सो फ़क़त तनहाई और वह मिज़ाज की अफ़सर का ख़्याल है जो जानता बूझता नहीं है और नहीं तो कुछ डर नहीं है धीरे धीरे सब काम मालूम होजावेगा और अभी तनख़्वाह हमारी नहीं मिली है जिस वक़्त मिलैगी तुरन्त भेज जावेगी ख़ातिर जमा रक्खो और जनाब शाह साहिब की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ करदेना और बेटी को बाद दुआ के मालूम हो कि तुम्हारा मांगन जल्द हम भेजेंगे ख़ातिर जमा रखना - लिखा ख़ुदा-बख़्श उनाम से २४ नवम्बर सन १८६६ ईसवी -

४ — शाती चिरंजीव आंख्यों के सुख देने वाले हाफ़िज़ मुमताज़ अली ज़ियादा होदराज़ तुम्हारा पीछे हुआ ज़ियादा उमर और बहती दराज़ के मालूम होकि यहां ख़ैरियत है और तुम्हारी ख़ैर-आफ़ियत ख़ुदा से चाहता हूं प्यारे मैंने जिस वक़्त हम चले थे तुम से इस बात की ताकीद करदी थी कि बादसात रोज़ के हमेशः अपने हाल से हम को इत्तिला करते रहना लेकिन अरसा २४ व २० रोज़ का हुआ कि आज तक तुम्हारा हाल मालूम नहीं हुआ अगर इलाही बख़्श के बेटे अब-दुल अज़ीज़ के विवाह की कोई तारीख़ मुक़र्रर

हो गई हो तो जल्द हम को इत्तिला दो कि हम खुद भी
के वास्ते आ रही हैं व नहीं फिर हमारा आना ठीक
वक़्त पर न होगा। हम आ चाहते हैं और उनसे कह देना
कि अगर बैसाख में आगर बेटा अबदुल लतीफ़ का विवाह
हो जावे तो अच्छा है और नहीं तो आगे ख़ुदा जाने
कैसा हो जो काम किया जा सकता है उस को कल पर
न छोड़ना चाहिये पर ज़रूर ख़याल रखियेगा। क्योंकि
फ़ज़ल अहमद की बीमारी बहुत बढ़ गई है आगे वह
तो आप ज़मानः देखे हुये और तजुरबःकार हैं- और
मांगा हुआ असबाब तुमने आजतक रवानः नहीं किया
बड़ा हरज होता है जल्द भेजो- और बीस २०) रुपिये का
नोट रजिसटरी करा के भेजा गया था जो पहुंचा हो तो
रसीद जल्द रवानः करो व नहीं तुम आप डाकघर
में जाकर मुनशी साहिब से मेरा सलाम कहना वह तुम
को अच्छी तरह से पहिचानते हैं ज़रूर ही ख़त
रजिसटरी किया हुआ दे देवेंगे बाक़ी ख़ैरियत-
लिख्या मुहम्मद बख़्श २७ अपरैल सन् १८७० ईसवी
५- जिगर के टुकड़े मियां इनायत हुसैन ज़ियादा को
अल्लाह उमर तुम्हारी पीछे हुआ ज़ियादा उमर और
दौलत के मालूम हो कि हाल यहां का ख़ैरियत से है
और तुम्हारी ख़ैर वाफ़ियत का ख़ुदा से चाहनेवाला
रहता हूं जिस रोज़ से कि तुम यहां से रवानः हुए हो आज
तक एक परचा भी अपनी ख़ैर वाफ़ियत का तुमने

न लिख भेजा कि दिल को दिलजमई और तबीअत को
खुशी होती और ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि हम आगरः
में तुम आए तो भी हम से मुलाक़ात न हुई क्योंकि आगे
तुमने एक ख़त में लिखा था कि हमने ७ दिन की छुट्टी
ली है और कल रवानः मकान हूंगा आप भी आइये
सो तुम्हारे लिखने के मुवाफ़िक़ मैं बहुत हरज करके
अकेले तुम्हारी ही मुलाक़ात के वास्ते मकान गया
बल्कि साहिब से मैं ने इस तरह से कि कल लौट आऊंगा
इत्तिला भी नहीं की वहां जाकर मालूम हुआ कि तुम
तुरंत आने के साथ ही वास्ते कोशिश तरक़्क़ी अपनी
के इलाहाबाद रवाना होगए हो और मैं साहिब से
छिपकर आने के सबब से रहि न सका क्या करूं क्या
रंज हुआ कि मकान पर दोनों जने के आने से भी
मुलाक़ात नसीब न हुई ख़ैर ख़ुदा ने चाहा और
ज़िन्दगी बाक़ी है तो फिर मुलाक़ात होजावेगी लेकिन
अब जवाब कि तुम्हारा पक्का इरादा दो चार रोज़
रहने का मकान पर न हो तो हम को कभी न बुलाना
कि हमारा हरज होता है और जवाब इसका बहुत
जल्द रवानः करना और मैं अब फ़र्रुख़ाबाद में खुशी
कामता परसाद साहिब के मकान पर जो कि पास
मोहल्ला सरकारी के है टिका हूं इसी पता से ख़त रवानः
करना ज़ियादा सिवाय ख़ैरियत उमर व दौलत के क्या
लिखूं लिखा महम्मद बख़्श २८ मई सन् १८७७ ईसवी

६ — श्री चिरंजीव मेरे प्यारे भाई ज़ियादा हो दरजा
तुम्हारा पीछे हुआ ज़ियादा हती उमर और दरजा के
मालूम हो कि यहाँ ख़ैर आफ़ियत है तुम्हारी ख़ैरियत
हरदम चाहता हूँ ख़ुशी का मकाम है ख़त तुम्हारा
२० अकतूबर सन १८७१ ईसवी को पहुँचा बहुत
ख़ुशी हुई ख़ुदा ताला तुमको ख़ुश रक्खे कि उससे
हमारे दिल की तसल्ली है रोज़गार के बारे में
जो कि तुमने लिखा था कि २०) रुपिया में गुज़ारा नहीं
होता है यारे मेरे सच है गुज़ारा होने की कौन सूरत है
कि घर के लोग इतने और आमदनी थोड़ी मगर सबर
ख़ुदा पर रक्खो और घबराव मत हम तुम्हारी
तरफ़ से कभी ग़ाफ़िल न रहेंगे लेकिन यहाँ की हि
सूरत है कि अरसा चार महीने से साहिब बहादुर
आबहवा की नामुवाफ़िक़त के सबब से पहाड़ पर
गये हैं जिस वक़्त आवेंगे और काम भी जारी होगा
ज़रूर तुम्हारे वास्ते कोई सूरत रोज़गार की निकाल
कर सिफ़ारिश की जावेगी ख़ातिर जमा रखना किसी
बात का अन्देशा न करना हम जो यहाँ हैं तो तुम ही
लोगों की मारफ़त से हैं जहाँ तक हो सकेगा यावरी से
ग़ाफ़िल न रहेंगे आगे आगाह है चिरंजीव करम-
हुसैन को हमारे पास भेज दो कि यहाँ उसका लिखना
पढ़ना अच्छी तरह से होगा किताबें यहाँ सब तरह
की हैं कुछ साथ लाने की ज़रूरत नहीं है और आगा

हो सके तो उसके छोटे भाई को भी जो यहां रह सके तो
भेज दो कि दोनों भाई आपस में यहां खुश रहें बाकी
कुशल लिखें जहां रहो खुश रहो — लिख्या रफ़ीउद्दीन
२६ अक्तूबर सन १८७१ ईस्वी

७ — मेरे प्यारे भाई मिर्ज़ा महम्मद अब्दुल अज़ीज़
उमर व दौलत तुम्हारी ज़ियादा हो पीछे दुआ बढ़ती
दराज़ा और इज़्ज़त के मालूम हो कि मैं अब तक
अच्छी तरह से हूं और तुम्हारी तन्दुरुस्ती रात
दिन ख़ुदा से चाहता हूं प्यारे मेरे अरसा लगभग एक
साल के होता है कि छुट्टी के मिल जाने पर भी तुम
मकान नहीं गये और कोई ख़त तुम्हारा नहीं आया
कि जिससे हाल तुम्हारे न जाने का मालूम होता घबड़ा
कर मैं चाहता था कि बिना छुट्टी लिये तुम्हारे पास
चला आऊं लेकिन ज़बानी मोतमिद ख़ां के जो कि
कल उसी जगह से आये हैं तुम्हारी ख़ैर सलाहत
से मालूम हुई सो तहदिल शुकर अब छुट्टी १५ दिन
की मांगी है लेकिन मंज़ूरी अभी तक नहीं आई है
जिस वक़्त मंज़ूरी आ जावेगी तुरंत तुम्हारे पास
चलूंगा और २०) रुपिया का मनीआर्डर पहुंचता
है वसूल करके जल्द रसीद भेजना और आगे की
तरह से आपस में बांट लेना तुम को चाहिये कि
जवाब इसका बहुत जल्द रवाना करो कि फ़िकर
दूर हो और जो दुबारा आने का हो तो जल्द इत्तिला

देना कि मैं भी रवानः मकान को हूं बाक़ी सब तरह
से ख़ैरियत है - लिखा अव्वल हुम्स मताबिक़ १७ नवम्बर
सन् १८७२ ईसवी -

८ - शाकिर चिरंजीव आंखों की रोशनी मुहम्मद
नज़ीर हमेशः ख़ुश रहो - दुआ के पीछे मालूम हो
ख़ुदा का शुक्र है कि यहां ख़ैरियत है लेकिन तुम्हारी
ख़ैर सलाह हर वक़्त चाहता हूं तुम्हारा ख़त लिखा
१९ रजब उल मुरज्जब सन् १२८९ हिजरी को पहुंचा
बहुत ख़ुशी हुई लेकिन तुम्हारी मांदगी का हाल सुन
कर बड़ा रंज हुआ ख़ुदा जल्द तुमको आराम करे
और जवाब के लिखने में इतनी देर नहीं थी लेकिन
मैं दारोग़ा साहिब के ख़त का रास्ता देखता रहा कि
शायद उसमें तुम्हारा कुछ हाल हो तो दोनों का जवाब
एक ही साथ लिखूं और इसके पहले दारोग़ा साहिब
की ज़बानी लगी हुई थी इस वास्ते जवाब नहीं
लिखा ज़बानी दारोग़ा साहिब के कुल हाल हमारा
तुम को मालूम होगा अब दारोग़ा साहिब के लिखने
से मालूम हुआ कि तबीयत तुम्हारी भगवान की
कृपा से अच्छी है इसके सुनने से बड़ा आनंद
हुआ अल्लाह ताला तुमको तनदुरुस्त रक्खे
कि हमारी ख़ुशी जिसमें है और आईन्दह मां ने हुसैन
का भी हाल दारोग़ा साहिब के लिखने से मालूम हुआ
ख़ुदा ने चाहा तो थोड़े दिन में ख़र्च की बन्दिश हो

आवेंगी तो उनको रवानः करूंगा और तुम को भी लाज़िम है खर्च रवानः करते हैं ख़ातिर जमा रखना और आशिक़ हुसेन को बहुत बहुत दुआ कह देना लिखा अली हुसेन परतापगढ़ से २ अप्रैल सन् १८८४ ईसवी

३६ — शादी में चिरनजीव नेक बख़्त बेटा जीव को—

पीछे दुआ और ज़ियादा उमर दौलत व दरजा के मालूम हो कि मैं ख़ैर व आफ़ियत से हूं और तुम्हारी तन्दुरुस्ती रात दिन की चाहिये ख़ुशी का ख़त तुम्हारा पहुंचा हाल मालूम हुआ ख़ुदा तुम को ख़ुश रक्खे जो तुमने चिरनजीव अबदुल अज़ीज़ के विवाह में मुझे बुलाया है सो प्यारे मैन मैं जून १७ तारीख़ इसी महीने को रवानः हूंगा तुम को चाहिये कि पंद्रह तारीख़ से सब सामान दुरुस्त कर रखना कि तारीख़ १८ या १९ तक मैं वहां आकर विवाह में शरीक — हो कर दूसरे रोज़ लौट आऊं कि चार रोज़ रहने में मेरा बड़ा हरज व नुक़सान होगा और मैं १७ तारीख़ को ख़ुदा चाहेगा तो जून यहां से रवानः हूंगा तुम ख़ातिर जमा रखना और मीर मुहम्मद हुसेन साहिब ने एक सौ सत्तर १७०) रुपिया जो वासते मोल लेने असबाब के तुम्हारे पास रवानः किये थे आज तक तुमने न असबाब भेजा और न जवाब लिखा लेकिन आज कल जो लगन व विवाह के दिन हैं और तुम

को मालूम है कि असबाब उनहों ने बेचने के वास्ते
मांगा है सो जिस वक़्त लगन विवाह होजावेंगे तो
वह माल हिफ़ाज़त से बिकेगा इस वास्ते तुम को
लिखता हूं कि बहुत जल्द असबाब उन का रवानः
करो और सब छोटे बड़ों को हमारी तरफ़ से सलाम
व दुआ कहदेना ज़ियादः दुआ लिखा करीमबख़्श
भूपाल से १ शौवाल सन १२७२ हिजरी

१० — शरी चिरनजीव मियां मुहम्मद शौकत जीव
को — पीछे दुआ के मालूम हो कि इस वक़्त तक
बहुत अच्छी तरह हूं तुम्हारी तन्दुरुस्ती हरदम
चाहता हूं खुशी का ख़त मए फ़ेहरिस्त बिल्टी
माल तुम्हारा भेजा हुआ पहुंचा लेकिन बिल्फ़ेल
असबाब का अभी तक नहीं वसूल हुआ यक़ीन
है कि कल तक आजावेगा तुम्हारे लिखने से
मालूम हुआ कि असबाब तुमने बहुत अच्छा
भेजा है लेकिन मैंने परखे बहुत महंगा मोल लिया
गया है ऐसा माल यहां के लोग कम लेते हैं दुआ
करो कि जल्द निकल जावे और अब कभी ऐसा
महंगा माल यहां न भेजना —
और १५०) रुपिया जो तुमने मांगे हैं उस का यह
हाल है कि मेरा हाल तुम अच्छी तरह से जानते
हो और ज़ाहिर है कि जो कुछ रुपिया मेरे पास
होता है या क़र्ज़ मिलता है उस सब को मैं असबाब

ખરીદ લેતા હૂં ઔર આજ કલ બિના બંદોબસ્ત કે કિસી
તરહ સે ભેજ નહીં સકતા હૂં ખુદા ને ચાહા તો એક મહીના
પીછે રવાનઃ કરૂંગા ખાતિરજમા રક્ખો ઔર જો બહુત
જ઼રૂરત હો તો કિસી સે ક઼રજ઼ લે લો જિસ વક઼્ત મૈં રૂપિયા
ભેજૂંગા દે દેના ઔર કભી લિખને પઢ઼ને મેં ગ઼ફ઼લત
ન કરના જ઼િયાદા સિવાય દુઆ કે ક્યા લિખા જાવે-
લિખા દનાપુર તા૦ ૩૦ જુલાઈ સન્ ૧૮૫૯ ઈસવી

૨૧ - શાદી ચિરનજીવ મેરે પ્યારે ભાઈ સલામત-
પીછે દુઆ કે માલૂમ હો કિ યહાં ખુદા કી મેહરબાની
સે ખ઼ૈરિયત હૈ ઔર તુમ્હારી ખ઼ૈરિયત હરદમ કી
ચાહિયે ખ઼ત તુમ્હારા લિખા હુઆ ૨૫ માર્ચ સન્
૧૮૭૨ ઈસવી કા ઉસી મહીને કી ૨૯ તારીખ઼ કો પહુંચા
બહુત ખુશી હુઈ ખુદા તુમ્હે ખુશ રક્ખે ૨૭ જૂન કો
પંદરહ દિન કી છુટ્ટી લેકર મૈં મકાન આયા થા-
લેકિન ચલને ઔર ખાના ખાને ઠીક વક઼્ત પર ન
મિલને કે સબબ સે બીમાર હોગયા ઔર દો મહીના તક
બીમાર રહા અબ ખુદા કી મેહરબાની સે આરામ હુઆ
૨૮ અગસ્ત કો યહાં ફ઼ૈજ઼ાબાદ પહુંચા ઔર સાહિબ
બહાદુર સે મુલાક઼ાત કી સાહિબ બહાદુર આદરસે મિલે
ઔર કહા કિ અભી આપ કહીં આઇયે જબ ખૂબી
તાક઼ત આજાતી ઉસ વક઼્ત ચિન્તા ન થી મૈંને અર્જ઼
કિયા કિ હુજ઼ૂર કે ઇક઼બાલ સે બીમારી દૂર હો ગઈ હૈ
તાક઼ત ભી ધીરે ધીરે આજાવેગી ઔર કામ ભી

થોડા થોડા કરતા હૂં કહા કિ અચ્છા હૈ લેકિન બહુત
મેહનત ન કરના સો મૈં અપની જગહ પર ફિર હો ગયા
તુમ્હારે ચચા સાહિબ કા હાલ બહુત રોજ઼ સે માલૂમ
નહીં હુઆ જો તુમ્હારે પાસ કોઈ ખ઼ત આયા હો તો
ઇત્તિલા કરો ઔર જો ઉનકે પાસ જાઓ તો હમારા
સલામ કહ દો જ઼િયાદા સિવાય બઢતી ઉમર વ દૌલત
કે ક્યા લિખૂં -

લિખા હૈદરખાં ને મુકામ છાવની મઊ સે

૨૨ — શ્રી ચિરંજીવ મેરે પ્યારે બેટે જ઼િયાદા હો
ઉમર તુમ્હારી પીછે શૌક઼ દેખને તુમ્હારે કે માલૂમ
હો કિ હાલ મેરા લાયક઼ શુક્ર કે હૈ ઔર તુમ્હારી
હરદમ કી ખૈરઆફ઼િયત ચાહતા હૂં -

ખુશી કા ખ઼ત તુમ્હારા પહુંચા હાલ માલૂમ હુઆ પીછે
મેરે માલ જાનકી નિછાવર હૈ જો અસબાબ જાતા રહે
ઔર જાન બચ જાવે તો ક્યા ચિન્તા હૈ ખુદા ઉસસે ભી
જ઼િયાદઃ માલ વ અસબાબ તુમ કો દેગા ખુદા પર ભરોસા
રક્ખો ઔર ઉસ સે અપની બઢતી માંગતે રહો અરસા
હુઆ ૧૦ રોજ઼ કા હુઆ કિ એક ખ઼ત મકાન સે આયા
થા ઉસમેં તુમ્હારા ગિલા ઇસ બાત કા લિખા થા કિ
દો મહીના સે તુમ્હારા કુછ હાલ માલૂમ નહીં હુઆ
ઐસી બેપરવાઈ કભી ન કિયા કરો ઔર હર સાતવેં રોજ઼
મકાન કો ઔર હર મહીના યહાં કો ખ઼ત લિખા કરો-
કિ ફ઼િકર દૂર હુઆ કરે ઔર ૫૦ રૂપિયે કા મનીઆર્ડર

ખરીદ લેતા હૂં ઔર આજકલ બિના બંદોબસ્ત કે કિસી
તરહ સે ભેજ નહીં સકતા હૂં ખુદા ને ચાહા તો એક મહીના
પીછે રવાનઃ કરૂંગા ખાતિરજમા રક્ખો ઔર જો બહુત
જ઼રૂરત હો તો કિસી સે કરજ઼ લે લો જિસ વક઼્ત મૈં રૂપિયા
ભેજૂંગા દે દેના ઔર કભી લિખને પઢને મેં ગ઼ફ઼લત
ન કરના જ઼િયાદા સિવાય દુઆ કે ક્યા લિખા જાવે-
લિખા દનાપુર ૩૦ જુલાઈ સન્ ૧૮૫૯ ઈસવી

૨૧- શરીફ ચિરંજીવ મેરે પ્યારે ભાઈ સલામત-
પીછે દુઆ કે માલૂમ હો કિ યહાં ખુદા કી મેહરબાની
સે ખૈરિયત હૈ ઔર તુમ્હારી ખૈરો આફ઼િયત હરદમ કી
ચાહિયે ખત તુમ્હારા લિખા હુઆ ૨૫ માર્ચ સન્
૧૮૭૨ ઈસવી કા ઉસી મહીને કી ૨૯ તારીખ કો પહુંચા
બહુત ખુશી હુઈ ખુદા તુમ્હેં ખુશ રક્ખે ૧૭ જૂન કો
પંદરહ દિન કી છુટ્ટી લેકર મૈં મકાન આયા થા-
લેકિન ચલને ઔર ખાના પાની ઠીક વક઼્ત પર ન
મિલને કે સબબ સે બીમાર હો ગયા ઔર દો મહીના તક
બીમાર રહ઼ા અબ ખુદા કી મેહરબાની સે આરામ હુઆ
૨૮ અગસ્ત કો યહાં ફ઼ૈજ઼ાબાદ પહુંચા ઔર સાહિબ
બહાદુર સે મુલાક઼ાત કી સાહિબ બહાદુર આદરસે મિલે
ઔર કહા કિ અભી આપ કહીં આપ જબ ખૂબી
તાક઼ત આ જાતી ઉસ વક઼્ત ચિન્તા ન થી મૈંને અરજ઼
કિયા કિ હુજ઼ૂર કે ઇક઼બાલ સે બીમારી દૂર હો ગઈ હૈ
તાક઼ત ભી ધીરે ધીરે આ જાવેગી ઔર કામ ભી

થોડા થોડા કરતા હૂં કહા કિ અચ્છા હૈ લેકિન વહાં મેહનત ન કરના ઓ મૈં અપની જગહ પર ફિર હો ગયા તુમ્હારે ચચા સાહિબ કા હાલ વહુત રોજ સે માલૂમ નહીં હુઆ જો તુમ્હારે પાસ કોઈ ખત આયા હો તો ઇત્તિલા કરો ઔર જો ઉનકે પાસ જાઓ તો હમારા સલામ કહ દો જ્યાદા સિવાય વહતી ઉમર વ દૌલત કે ક્યા લિખૂં-

લિખ્યા હૈદરખાં ને મુકામ છાવની મઊ મે

૨૨— શ્રી ચિરંજીવ મેરે પ્યારે બેટે જ્યાદા હો ઉમર તુમ્હારી પીછે શોક દેખને તુમ્હારે કે માલૂમ હો કિ હાલ મેરા બારીક શુકર કે હૈ ઔર તુમ્હારી હરદમ કી ખૈરઆફિયત ચાહતા હૂં-

ખુશી કા ખત તુમ્હારા પહુંચા હાલ માલૂમ હુઆ પહિલે મેરે માલ જાનકી નિછાવર હૈ જો અસવાવ જાતા રહૈ ઔર જાન વચ જાવૈ તો ક્યા ચિન્તા હૈ ખુદા ઉસસે ભી જિયાદઃ માલ વ અસવાવ તુમ કો દેગા ખુદા પર ભરોસા રક્ખો ઔર ઉસ સે અપની વહતી માંગતે રહો અરસા દશ ૧૦ રોજ કા હુઆ કિ એક ખત મકાન સે આયા થા ઉસમેં તુમ્હારા ગિલા દસ વાત કા લિખ્યા થા કિ દો મહીના સે તુમ્હારા કુછ હાલ માલૂમ નહીં હુઆ ઐસી વેપરવાઈ કભી ન કિયા કરો ઔર હર સાતવેં રોજ મકાન કો ઔર હર મહીના યહાં કો ખત લિખ્યા કરો- કિ ફિકર દૂર હુઆ કરે ઔર ૫૦ રૂપિયા કા મની આડર

पहुंचता है इसमें से ३०) रुपिया का ज़रूरी असबाब ख़रीद
लेना और जो बाक़ी बचै ख़र्च में लाना १४ ता० २० दिन में
और कुछ ख़र्च भेजा जावैगा ख़ातिर जमा रखना जो तुम्हारा
जी वहां नहीं लगता है तो इस्तीफ़ा देकर यहां चले आओ
रखु) ३०) तीस रुपिया की सूरत रोज़गार की हो
जावेगी लेकिन बिना मंज़ूरी इस्तीफ़ा के कभी न चलना
ताकीद जानो और मुनशी रजब अली साहिब को बहुत
बहुत सलाम कह देना — लिखा इलाही बख़्श
२६ जून सन् १८५८ ईसवी

१३ — श्री चिरनजीव मेरी ख़ुशी और ज़िन्दगानी
के पूंजी व बुढ़ापे व कमज़ोरी के मददगार ज़िदा करे
अल्लाह दरजा तुम्हारा — पीछे दुआ ज़ियादः उमर
व दरजों के मालूम हो कि यहां ख़ुदा की मेहरबानी से
ख़ैरियत है और तुम्हारी तन्दुरुस्ती हर साअत चाहता
हूं तारीख़ ३० नवम्बर दिन बृहस्पति को मैं फ़ैज़ाबाद
से मकान को पहुंचा लेकिन हमारी तुम्हारी मुलाक़ात
बहुत दिनों से नहीं हुई है इस वास्ते तुम को लिखा जाता
है कि देखते ही इस ख़त के सात रोज़ की छुट्टी लेकर
यहां रवानः हो क्योंकि मैं बहुत दिनों से तुम्हारे देखने
की अभिलाख रखता हूं और तुम भी बहुत अपना
शौक़ ज़ाहिर कर चुके हो और मैं ने छुट्टी तिल्लातिती
एक महीना की ली है सो २० दिसम्बर को मैं रवानः
हूंगा और इसके पहले जो असबाब तुमने यहां भेजा था

वह ऐनात अली के हाथ पहुंचा और इनायत अली
राह में बीमार हो गया था इस वजह से असबाब के
पहुंचने में देर हुई और आई फ़ज़ल हुसेन साहिब कल
१० बजे दिन को कलकत्ता से फ़ैज़ाबाद होते हुए मकान
पर आए तुम्हारे वास्ते ४ अदद चाकू विलायती और
एक कतरनी और एक बहुत अच्छी किताब लुग़ात
की साथ लाए हैं सो वह तुम्हारे पास पुलिन्दा करके
रवान: करते थे लेकिन जब तुम्हारे बुलाने का हाल
सुना तब कुल चीज़ें मेरे पास भेज दीं और ताकीद कर
दी है कि जिस वक़्त चिरंजीव बेटा आवें सबसे पहले
यह चीज़ें देना वास्ते इत्तिला के तुम को लिखा गया
है जवाब इस के पहुंचते ही जल्द रवान: करना और
सब को दरजे बदरजे दुआ सलाम कह देना — लिखा
मुहम्मद इब्राहीम लखनऊ से २७ जून सन् १८५२

दूसरी

१४ — श्री चिरंजीव रोशनी आंखों के सलामत
पीछे दुआ बढ़ती दौलत व इक़बाल के मालूम हो
अरसे से तुम्हारा हाल हम को मालूम नहीं हुआ और
दो बार ख़त भी लिखा सो एक का भी जवाब तुम ने न
लिखा तुम्हारी नेक बख़्ती से यह बात बईद है जो
ऐसी ही ग़फ़लत करोगे तो यक़ीन है कि बहुत जल्द
ज़माने की ज़िंदगी से हाथ धो ओगे तुम को चाहिये कि
पहले ही इस ख़त के बहुत जल्द अपनी ख़ैर आफ़ियत

से घर के लोगों समेत कुशलता करो कि फ़िक्र जाती रहे और यह भी लिखना कि तिलक चढ़ गया या नहीं हम को रात दिन यही फ़िक्र रहती है कि बुधवार को हम वहां मौजूद नहीं हैं ऐसा न हो कि लड़कों की ग़फ़लत से बड़ों के सामने हम को लजाना पड़े बेटे मेरा जो काम करना हो दियानतदारी व मुस्तैदी व दिलजमई से करना और दूसरी तरफ़ के लोगों को हमेशः राज़ी व खुश रखना ऐसा न हो कि तुम्हारे सिर बदनामी आवे और उसके बाइस से हम को सिर झुकाना पड़े बहुतेरा मैं चाहता हूं कि बिना मेरे तुम कोई सामान कमी न करोगे लेकिन जो ज़रूरत हो तो चिंता नहीं हर एक काम ख़बर्दारी से करना चाहिये और सात रोज़ तक मैं तुम्हारे ख़त की राह देखता रहूंगा जो जवाब न आवेगा तो तुरत तुम्हारे पास चला आऊंगा क्योंकि फ़िकरें बहुत हैं और ७५) रुपिया ख़र्च ज़रूरी के वास्ते पहुंचाते हैं किफ़ायत हमेशः करते रहना ख़र्च बेफ़ायदा कभी न करना आगे तुम आप बुद्धिमान हो लिखने की कुछ ज़रूरत नहीं है लिख्या अवदुलग़नी-

१५- श्री चिरंजीव नेक बख़्ती के मेरे हुई मार्गि मान सलामत — पीछे शोक छाती से लगाने के मालूम हो कि मैं तुम को छोड़कर ३० जूलाई सन् १८७४ ई० सवेरी को ख़ैर सलाह से बनारस पहुंचा और राह में कोई मुश्किल नहीं पड़ी और यहां मेले में दस रोज़ से

દેના હુઈ કિ કમેટી સાબિક: કે થોડે દિન થે ઉસમેં રપોર્ટ
સાલ તમામ પેશ કરના થી સો કમેટી હોગઈ ઔર બહુત
સે મુદર્રિસોં કો જો કિ લાયક઼ ઔર મેહનતી વ કામ
અચ્છા કરતે થે ઉનકો ઇનામ દિયા ગયા હમ કો ભી
દો થાન તનજ઼ેબ કે ઔર ૫) રુપિયા નક઼દ ઔર ૫) રુપિયા
કી પઢને કી કિતાબેં સરકાર સે મિલી હૈં ઔર ઉસી તાર
કો જલસા આતશબાજ઼ી વગ઼ૈરહ કા ભી અચ્છાઈ કે
સાથ હુઆ જો તુમ યહાં હોતે તો બહુત ખ઼ુશ હોતે અફ઼
સોસ હૈ કિ તુમને ભી ઇસ અરસ: મેં અપની ખ઼ૈરઆફ઼િયત
સે ખ઼ુશ ન કિયા ખ઼ૈર જો કુછ હુઆ સો હુઆ આગે કો
ઐસા ન કરના ઔર મકાન કી મરમ્મત સે ગ઼ાફ઼િલ
ન રહના અગર કુછ રુપિયા જો તુમ્હારે પાસ મૌજૂદ હૈ
ખ઼રચ હો જાવે તો લાલા હજ઼ારી લાલ સાહિબ મહાજન
સે ૨૦) રુપિયા લે લેના ઔર હમારે નામ લિખવા દેના ઔર
માઈ કરમઅલી સાહિબ કા કોઈ ખ઼ત હમારે પાસ નહીં
આયા જો તુમ કો કુછ હાલ ઉનકા માલૂમ હુઆ હો
તો હમકો લિખના ઔર કિરાયાદારોં સે હમેશ: મહીના
મહીના કિરાયા વસૂલ કરતે રહો અગર દો યા તીન
મહીને ચઢ જાવેંગે તો મુશકિલ સે વસૂલ હોંગે ઔર
જો શખ઼્સ કિરાયા દેને મેં દેર કરે ઉસ સે તુરંત મકાન
ખ઼ાલી કરાકે દૂસરે કો બસા દેના ઔર સબ છોટે બડોં
કો સલામ દુઆ કહ દેના—જ઼િયાદા દુઆ લિખા
ફ઼તેહઅલી ને બનારસ સે

૨૬— શ્રી ચિરંજીવ આંખ કી પુતલી નેક બખ્તિયોં
કે સરે હુએ સલામત— પીછે દુઆ કે માલૂમ હો કિ
હાલ યહાં કા અચ્છા હૈ ઔર તુમ્હારી તન્દુરુસ્તી
હર દમ ચાહતા હૂં નોટ આયા નમ્બરી ૨૮૪૫૭ સો
૨૦૦) રૂપિયે કા પહુંચતા હૈ જિસ વક઼્ત રસીદ આજાવેગી
આધા દૂસરા નોટ રવાનઃ કિયા જાવેગા જબ સે કિ મૈં
તુમ્હારે પાસ સે યહાં આયા હૂં જૂડી તાઈ ઐસી આતી
હૈ કિ વગ઼ૈર મદદ દૂસરે કે બૈઠ ઉઠ નહીં સકતા તુમકો
ચાહિયે કિ દેખતે હી ઇસ ખ઼ત કે બહુત જલ્દ હમારા
બક્સ જિસમેં બહુતસી દવાઈ વગ઼ૈરઃ બંદ હૈં કિસી
મોતબર આદમી કે હાથ રવાનઃ કરો કિ જ઼રૂરત હૈ
ઔર જો શેખ હાફ઼િજ઼ અલ્લી સાહિબ પૈગામ બાદ સે આ-
હીં તો ઉનકો ૨૫) રૂપિયે ઔર એક જિલ્દ દીવાન
હાફ઼િજ઼ દે દેના ઔર રસીદ લેકર હમારે પાસ ભેજ
દેના ઔર લિખને પઢને મેં કભી ગ઼ફ઼લત વ સુસ્તી ન
કરના ઔર જો મૌલવી સાહિબ કો તનખ઼્વાહ નહીં
હો તો કુલ તનખ઼્વાહ ઉનકો દેકર હમકો ઇત્તિલા
કરના ઔર ઉનકી ખ઼િદમત કો અપની નેક બખ઼્તી
જાનના ઔર જહાં તક હો સકે હર રોજ઼ હેડમાસ્ટર
સાહિબ જિલ્લા ઇસકૂલ સે હિસાબ વગ઼ૈરઃ જારી રખ્ખા
કરો ઔર જો રક઼મ મદરસઃ કા ૯ બજે સે ૧૦ બજે દિન
કા હો તો ઇસકૂલ હી મેં જાકર ખ઼ૂબ સમઝ લિયા કરો
ઔર હમારી તરફ઼ સે હર એક ભાઈ બંદ કો સલામ ક઼.

દુઆ કહ દેના — લિખા અમીરખાં ૨૭ અગસ્ત
સન્ ૧૮૫૮ ઈસવી—

૨૭ — શરી ચિરંજીવ ગૌસઅલી આંખ્ખ વેઆલા ખૈરાતી-
લાલ જીવ જ઼્યાદા હો યન દૌલત તુમ્હારી —

પીછે દુઆ જ઼્યાદતી ઉમર ઔર દૌલત કે માલૂમ હો કિ યહાં ખૈરિયત હૈ ઔર તુમહારી તનદુરુસ્તી દરકાર ની ચાહિયે મેરે પહોંચે મેં તુમ સે જુદા હોકર ખૈરિયત સે જહાંનાબાદ મેં પહુંચા ઔર લાલા અશરફી લાલ સાહિબ સે મુલાકાત કી વહ બહુત આદર સે મિલે ઔર તીન દિન તક બરાબર ઝિયાફ઼ત કી ઔર અપને દફ઼તર મેં નૌકરી કા ભી ઉમેદવાર કિયા હૈ ખુદા ને ચાહા તો ૭ યા ૮ રોજ઼ મેં જ઼રૂર રોજ઼ગાર કી સૂરત હો જાવેગી ઔર લાલા અશરફી લાલ ભી યકીન હૈ બડે દિન કી તાતીલ મેં ઘર આવેંગે મૈં ભી જહાં તક હો સકેગા ઉનકે સાથ આઊંગા ઔર માલૂમ નહીં કિ પહલવાન જો કિ બમ્બઈ જાને વાલે થે ગયે યા નહીં અગર ન ગયે હોં તો ૨૭) રૂપિયે ઉનકો દેકર બહુત જલ્દ રવાના કર દેના ઔર કહના કિ દુન્હોન મેં જાકર જ઼રૂર ચચા સાહિબ સે હમારી ખૈરોઆફ઼િયત અર્જ઼ કરેં ઔર ઇન ૨૭) રૂપિયોં મેં સે ૨૦) રૂપિયા ઉનકે લડકોં કો દેદેં ઔર બાકી અપને ખર્ચ મેં લાવેં ઔર જવાહિર લાલ ઔર રાયા પરસાદ કો હમારા સલામ કહ દેના ઔર હમારી ખૈરોઆફ઼િયત

अख़्सा को इत्तिला करदेना ज़ियादा सिवाय दुआ उम्र व
दौलत के क्या लिखा जावे लिखा मोहनलाल भूपाल से
२७ शौवाल सन् १२९१ हिजरी. जवाब जिल्द अजना
ज़रूरी है -

सनदें

मुख़्तारनामा आम

मैं कि आमना बेगम. जोरू नवाब समादुद्दौला
रहमत अलीयां बहादुर रहनेवाली इसमाईल गंज
महल्ला. शहर लखनऊ की हूं जोकि मेरे बहुत मुक़द्दमे
अवध देश और ज़िले गोरखपुर की कचहरियों में हुआ करते
हैं और मुद्दई भी मुक़द्दमा करना मंज़ूर होता है और
मैं आप परदा में रहने के सबब से किसी कचहरी में पहुंच
नहीं सकती इसवास्ते हाजी महम्मद नासिरुद्दीन को
जोकि हमारा पुराना कारिंदा और जिसका हमको विस्सवास है
अपनी तरफ़ से मुख़्तार आम मुक़र्रर करके इक़रार
करती हूं और लिखे देती हूं कि मुख़्तार नासिरुद्दीन हमारे
सब मुक़द्दमों में कचहरी गौरनमेंट बहादुर व चीफ़
कमिश्नर साहिब बहादुर व साहिब कमिश्नर बहादुर व
फ़ैनांशियल कमिश्नर बहादुर व जुडीशल कमिश्नर व
सिविल जज बहादुर व कचहरी तहसील व थाना व
पुलिस व असिस्टंट कमिश्नर बहादुर व डिपटी कमिश्नर
व एकस्ट्रा असिस्टंट बहादुर व अदालत अपील
और सदर दीवानी व फ़ौजदारी बंदोबस्त व रजिस्टरी व

व अख़राजात कुल कचहरियों आलिये दीवानी व रेवे-
न्यू के ज़िलों के व मुल्क आईन वग़ैरः में जो कुछ पैरवी
व जवाबदही कोई अरज़ी नालिश की दे या आप मुद्दई
होकर दूसरे शख़्स से मुक़ाबिला करे या कोई सनद दे
या फेर ले या ज़रूरत के वक़्त कोई सनद किसी से
मांगे या किसी अरज़ी पर दस्तख़त करे या कोई
ज़ामिन या वारा हमारी तरफ़ से देवे या गिरो करे या
कोई वकील या मुख़्तार किसी मुक़द्दमा में अपनी
तरफ़ से मुक़र्रर करे या किसी क़दर रुपिया हम को
मिलने वाला अख़राजात से वसूल करे या किसी और
कचहरी से रुपिया डिगरी वग़ैरः का लेवे या कोई रसीद
हमारी तरफ़ से लिख देवे और मुख़्तार नामे हिदायत
का किया हुआ हम को अपने किये हुए की तरह क़बूल
व मंज़ूर है और सब काम किया हुआ मुख़्तार का ठीक
होगा इस वास्ते यह मुख़्तारनामा आम लिख दिया
कि आगे को सनद हो और ज़रूरत के वक़्त काम आवे
लिखा तारीख़ २५ मार्च सन् १८६७ ईसवी तथा ७
ज़ीक़ाद सन् १२८३ हिजरी दिन शुक्रवार दस्तख़त व
गवाही वग़ैरः के बाबत पर इसी तरफ़ होना चाहिये
इ० मुहर आमना बेगम गवाही फ़ुलाँ फ़िक़ारपंथा हो
गवाह शुद अली ख़ां रहने वाला लेडस्माईल ख़ां नौकर
लेडस्माईल ख़ां नौकर आमना आमना बेगम साहिबा
बेगम साहिबा

रजिस्टरी जो सनद और बैनामा वग़ैरः की पीठ पर होती है

नम्बर ५८५४ दफ़ा २९ किताब मुख़्तार नामा ज़ात
सन् १८६७ ईसवी में तारीख़ २५ मार्च सन् १८६७
ईसवी को १० व ११ बजे के भीतर आम मकान मुक़ाम के
सरकार से व फ़तेह अली खां व ज़ुलफ़िक़ार अली-
खां करार पर लिखे हुए गवाहों की ज़बान पहिचान
से और इनहीं के सामने यह काग़ज़ रजिस्टरी हुआ

मोहर सरिश्ता: दस्तख़त रजिस्टरार शहर

बैनामः गांव का

मैं कि मथुरा परसाद बेटा लालता परसाद क़ौम
कायस्थ सकसेना रहने वाला शहर लखनऊ महल्ला
पुल मोती लाल का हूं - मैंने अपनी ज़मींदारी [illegible]
बारा आना माल गुज़ारी मौज़ा [illegible] तहसील
व ज़िला लखनऊ [illegible] पुराना असली व दाख़िली उस
के जिस पर मेरा क़ब्ज़ा व दख़ल है आज तक उस में
और किसी का हिस्सा नहीं है - जिस के बेचने वग़ैरः
का मुझ को इख़्तियार है मैं सब हक़ मुनाफ़ा दाख़िली
व ख़ारिजी मय कुआं व दरख़्त फलवाले व बेफलवाले
व आपस जमैनद व बाग़ों और ताला व और आबादी
व सीर वग़ैरः हर तरह की ज़मीन को अपनी तन्दुरुस्ती
व ठीक अक़्ल बिना किसी की ज़बरदस्ती व लिहाज़ अपनी
ख़ुशी से रु ५००) रूपिया सिक्का चेहरे शाही पर कि

आये उसके ७५०) रूपिया होते हैं मुनशी देवी प्रसाद साहिब बेटा लाला लालता प्रसाद साहिब बैकुंठ वासीके हाथ जो मेरे सगे भाई हैं और साढ़े ज़मीदारी माल गुज़ारी मौज़ा निज़ाम पूर के हैं बेचा ख़रीदकिया और सब रूपिया ख़रीदार से वसूल पाकर बेची हुई ज़मीदारी पर ख़रीदार का क़बज़ा दख़ल करादिया पीछे लिखने इस बैनामः के मुझको और मेरे वारिसों को उस बेची हुई ज़मीन से किसी तरह का हक़ दावा नहीं है और न रहा और जिस वक़्त कोई शख़्स दावा करे जवाबदेना उसका मेरे ज़िम्मे होगा इन सब बातों का इक़रार करके यह बैनामा लिख दिया कि सनद रहे वरना रूपिया पाने का बाबत बैनामा के-

बाबत आमलेगीनो के मुजरा दिया	अब नक़द लिये
१०००) रूपिया	५००) रूपिया

लिखा तारीख़ २६ महीना अपरैल सन १८७४ ईसवी तथा सम्वत १९३१

रजिसटरी जो सनद की पीठ पर होती है

यह सनद लखनऊ के सब रजिसटरार के दफ़्तर में तारीख़ २७ अपरैल सन १८७४ ईसवी दिन सोम-वार को १ बजे के वक़्त पेश की गई-

दसतख़त साहिब सब रजिसटरार

દસતખ્યત મથુરાપરસાદ વકીલ મખ્યુદ
હુકમ આર લિખ્યને દુસ સનદ કા ઔર રસૂલપાને તૂફિર
દુસ કે કા મથુરા પરસાદ વેદા લાલતા પરસાદ કોમ
કાયસથ પેશકાખીદારી ઉ પટવારગીરી રહને વાલા
લખ્યનઊ મહલ્લા પુલ લાલા મોતી લાલ ને હમાને
સામને કિયા ઔર મથુરા પરસાદ પટવારીસોના સે જ
સે મૈં ખ્યુદ વાકિફ હૂં —
૨૭ આપરૈલ સન ૧૮૭૪ ઈસવી—
દસતખ્યત સવરજિસટરાર સાહિબ
દસતખ્યત મથુરાપરસાદ વકીલ મખ્યુદ
દુસ સનદ કી રજિસટરી નમબર ૧૪૩૪ સફા ૨૦૬
રજિસટર નમબર ૧ કજિલ્દ ૨૩ મેં કી ગઈ—
૨૭ આપરૈલ સન ૧૮૭૪ ઈસવી

દસતખ્યત સવરજિસટરાર
મોહર સરનિશાત:
સવરજિસટરાર

તસદીક કચહરી કલેકટરી—
૯૦ મથુરાપરસાદ વેચનેવાલા ગવાહી સોહનલાલ વેદા
વકીલ મખ્યુદ હરપરસાદ રહનેવાલા
મહલ્લા પુલ મોતીલાલ
ગવાહી રઘુધામલ
ગવાહી મનસુખમુકદ્દમ સૂખ્યા ગવાહી ફતેચંદ સાકિન પુલ
ગવાહી મૂલચંદ કાયસથ મોતીલાલ

મહકમઃ કલકટરી કોનસદીકો
જોકિ ઇસ બૈનામા સે તઅલ્લુક રખતા હૈ-

૧ કુમ આગસત સન્ ૧૮૭૪ ઈસવી કે હુકમ કે મુવાફિક નામ વેચનેવાલે કા ખારિજ કિયા ગયા ઔર નામ લેનેવાલે કા કાગજ પટવારી ઔર દફતર કાનૂનગો મેં લિખ્યા ગયા ઔર યહ સનદ નકલ લિખને કે પીછે ખરીદનેવાલે કો દી ગઈ- ૨૦ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫ ઈ૦

દસ્તખત હાકિમ

દસ્તખત સરિશ્તેદાર

ઇતિ

બૈનામઃ હવેલી કા

હમકિ વનપતરાય વેટા મૂલચંદ ઔર વસંતરાય વેટા નારાયનદાસ વેટા હોરીલાલ વેટા મૂલચંદ- ઊપર લિખે હુએ કૌમ કાયસ્થ સકસેના રહનેવાલે લખનઊ મહલ્લા ચૌક કે હૈં-

હમને અપની તનદુરુસતી મેં ઔર ઠીક અકલ સે વિના કિસી કે કહે સુને ઔર અપની ખુશીસે ૨ કે મકાન જોકિ ઉત્તર તરફ કે કોને મેં હૈ મય દો કોઠરી વગલી દોનોં તરફ ઔર આગે ઉસકે દાલાન ઉત્તરા-રુખ સે કિ અવ દાવાણા ઉસકે ઉત્તર તરફ સે વંદ હો કા મકાનાત લિખે ગયે કે દક્ખિન તરફ હોંગે વાલા ખાના સમેત ઉત્તર તરફ કા વિના છત કા મય કોઠરી વગલી પશ્ચિમ તરફ સવ પક્કી ઔર કચ્ચી નીમી ઉસ કે

आगार में है और दीवारें चारों तरफ़ की जो महल्ला में हैं जिनकी हद्दें नीचे लिखी हैं मेरे क़ब्ज़ा और मिलकियत में हैं उसमें से एक पक्की हवेली ख़ास कि जो हमारे वारिसों की दी हुई है और अब तक उस हवेली पर बिना किसी के साझे हमारा क़ब्ज़ा चला आता है सब हद्दों और हक़ों के समेत २००) रुपिया सिक्का चहरेशाही कि आधे उसके १५०) रुपये होते हैं हाथ मुनशी सीताराम साहिब बेटा आनन्दराम क़ौम खत्री उसी महल्ला के रहनेवाले के हाथ बेचा और बे किया और सब रुपिया ख़रीदार से मारफ़त मंसाराम साहिब भाई मेरो ख़रीदार के वसूल पाकर बेची हुई चीज़ पर ख़रीदार का क़ब्ज़ा व दख़ल कर दिया इस बैनामा के पीछे हमको और हमारे वारिसों को उस बेची हुई चीज़ पर किसी तरह का हक़ व दावा नहीं है और न रहा और जो कोई इस बेची हुई चीज़ पर दावा करे तो जवाब देही उसकी हम बेचने वालों के ज़िम्मे होगी इन सब बातों का इक़रार करके यह बैनामा लिख दिया कि सनद रहे- बेचे हुए मकानों की चारों हद्दें यह हैं

पूरबी हद्द	पच्छमी हद्द
ज़मीन हरसहाय बैकुंठ	आंगन दीवान ख़ाना
वासी के मकान की बेचने	ख़रीदार की और थोड़ी
ले की दीवार को छोड़कर	ज़मीन बनवारी की

દસ્તખતીપેહદઇ	ઉતારીપ હદઇ
મકાનખરીદારકા	ખ્યાસકાર ઝમીન વસંતરાય
	ઝૂલનારીનદાસ વેચનેવાલોં
	કી વેચી હુઈ દીવાનકો ફૂલ
	છોડ કર
વાલાપાનાવેચા	મકાનવેચા વસંત રાયવ
ચેનપતરાયને	નારાયનદાસને
૯૫) રૂપિયા કા	૨૫) રૂપિયા કા

લિખ્યા તારીખ ૨૫ મહીના જનવરી સન્ ૧૮૭૪ ઈસવી તથા સમવત ૧૯૩૦

રજિસ્ટરીસો બૈનામઃ કીયા ઠપર હોતી હૈ યહ સનદ સબરજિસ્ટરાર શહર લખ્નઉ કે દફ્તર મેં તારીખ ૨૬ જનવરી સન્ ૧૮૭૪ ઈ૦ રોઝ સોમવાર કો ૪ બજે કે વક્ત પેશ કી ગઈ–

દસ્તખત સબરજિસ્ટરાર સાહિબ

દસ્તખત	દસ્તખત	દસ્તખત
ચેનપતરાય	વસંતરાય	નરાયનદાસ

ઇસ સનદ કે લિખનેવાલા ઔર વસૂલ પાને રૂપિયા ઉસકે કા ચેનપતરાય બેટા મૂલચંદ ઔર વસંતરાય વ નરાયનદાસ બેટે હોતી લાલ કૌમ કાયસ્થ પેશઃ નૌકરી રહને વાલે શહર લખ્નઉ મહલ્લા ચૌક ને હમારે સામને ઇકરાર કિયા ઔર બહાદુરમલ બેટા ગંગારામ કૌમ બનિયા પેશઃ લેનદેન રહનેવાલા ઉસી

મ હલ્લા કે ઔર મોહનલાલ ને ઠાકુરદાસ વાપ
કૌમ કાયસ્થ પટવારી રહને વાલા મૌજા દલિપાપરગના
વિળૌર જિલા લખનઊ સનદ કે લેને વાલે કે લિયે
હુએ ગવાહોં ને ઉનકે પહિચાન કી ગવાહી દી ઔર
પટવારી મોહનલાલ કો હમ ખુદ જાનતે હૈં રફ
સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી વકીલ મ મોહ દી અવચાસ મુહર ન
દસ્તખત મવરજિસ્ટરાર

સાહિબ

દસ્તખત દસ્તખત દસ્તખત
ચનપતરાય વસંતરાય નગીનદાસ
દ૦ બહાદુરલાલ દ૦ મોહનલાલ પટવારી
ગવાહી બહાદુરમલ વકીલ મખુદ
ગવાહી નથૈમલ વનિયા ગવાહી લછિમન સહીવકીલ
ગવાહી મોહનલાલ વકીલ મ ખુદ ખુદ
દ૦ મવરજિસ્ટરાર
ઇસ સનદ કી રજિસ્ટરી નમ્બર ૧૦૦ સફા ૨૮૫
રજિસ્ટર જિલ્દ ૨૨ મેં કી ગઈ
દ૦ સવરજિસ્ટરાર
લિખા ૨૬ જનવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી
મોહનસન્નિશ્રાત:

બૈનામા

મૈં કિ મહમ્મદ ઇસ્માઈલ વેટા મહમ્મદ ઇબ્રાહીમ બેટા
મહમ્મદ હયાત રહને વાલા શહર લખનઊ મહલ્લા
ગોલા ગંજ થાના વજીરગંજ કા હૂં –
જો કિ એક જમીન જિસ કા નામ હાતા મકાન શમશુદ્દીન

का दी हुई सरकार मय थोड़ साल कचहरी व बंगला जूम का द दिनपा सकेत व दीवानी कचहरी मय साव हक़ हाकिली व पानो थो महल्ला सन्नाहत गांव में हैं कि जाग नक विना माहा दमने रायस के मेर क़बज़ा व हयात में मौजूद हैं जिसकी ओनी हददें यह है-

पूरबी हद्द	पश्चिमी हद्द
चलनू रासता	महमद वख्श खांसामां
	का मकान व मीता राम
	कुमहार व चलनू रासता
दक्खिनी हद्द	उत्तरी हद्द
सड़क व चलनू रासता	बाग़ महमद नजां

उसको आपनी तनदुरसती और ठीक अक़ल के हालत में बिना किसी के कहे सुने व बिना ज़बरदस्ती किये ३०७) रुपिया सिक्का चेहरः शाही पनकि आधे जिसके १५०) रुपिया होते हैं हाथ मुनशी देवी सहाय साहिब बेटे मुनशी राम सहाय साहिब डिपटी कलेक्टर बहादुर रहने वाले महल्ला पहिया गांव के बेचा और बे किया और रुपिया बेची हुई [illegible] का ख़रीदार से [illegible] वसूल पाकर आपने ख़र्च में लाया और क़बज़ा आपना उस बेची हुई ज़मीन से उठाकर क़बज़ा ख़रीदार का करा दिया अब मुझ को दावा कुल बेची हुई ज़मीन में बाक़ी नहीं रहा जो

આગે કો મૈં યા મેરે વારિસ દાવા કરેં તો હેચ હોવુમ વાસતે યેહ બેનામા લિખ દિયા કિ સનદ રહે ઓર ઝ઼રૂરત કે વક઼ત કામ આવે લિખ્યા ૨૫ અકતૂબર સન્ ૧૮૭૨ ઈસવી—

હસનખાન મહમ્મદ	ગવાહી દેવીદયાલ બેટા
ઇસમાઈલ વકીલ મશ્હૂદ	દીનદયાલ વકીલ મશ્હૂદ
ગવાહી રહમત અલી	ગવાહી મહમ્મદ બાકર બેટા
બેટા હશમત અલી	ઝાફર અલી વકીલ દેહી
રહનેવાલા મહલ્લા	દયાલ ઉમર પૂરૂ બરસ
મલાહાન ગંજ	નિશાની હાથ કી
ગવાહી ઉમેદનાથ બેટા	ગવાહી સાદિક અલી
ધનપતરાય રહનેવાલે	વકીલ ઉમેદનાથ
મહલ્લા ચોક ઉમર	નિશાની હાથ કી
૬૩ બરસ	

રખિસતની

યેહ સનદ વા યેહની સાહિબ બહાદુર રખિસટરા શહર લખનઊ મેં રોઝ઼ મંગલ તારીખ ૨૫ અકતૂબર સન્ ૧૮૭૨ ઈસવી રૂ ૪ બજે કે ભીતર રખિસટની કે વાસતે પેશ હુઈ—

દ૦ સાહિબ રખિસટરા	દ૦ મહમ્મદ ઇસમાઈલ વકીલ મશ્હૂદ

મુહમ્મદ ઇસમાઈલ પેશઃ ઝમીંદારી બેટા મહમ્મદ ઇબ્રાહીમ કૌમ શરીફ રહનેવાલે ગોલાગંજ મહલ્લા શહર લખનઊ

और लिखने वाला उम्र ६० बरस गोरा रंग आँखें छोटी न बड़ी डाढ़ी और मोछ सफ़ेद व सिर्फ़ हुलिया बदन न मोटा चौड़ा और ऊँचा है और कुल रुपिया इस सनद के पाने का इक़बाल किया और लिखने वाले को हम ख़ुद पहिचानते हैं लिखा २५ अकटूबर सन १८७२ ईसवी इस सनद की रजिस्टरी नम्बर १००० सफ़ा २५५ रजिस्टर नम्बरी २ क की जिल्द १२ में की गई लिखा २५ अकटूबर सन १८७२ ईसवी द० रजिस्ट्रार

द० मुहम्मद इस्माईल वक़ालतन ख़ुद

द० रजिस्ट्रार
मोहर सरिश्ताः साहिब
रजिस्ट्रार शहर लखनऊ

बैनामा

मैं कि कन्हैया लाल बेटा छोटे लाल क़ौम खत्री रहने वाला लखनऊ मुहल्ला सआदतगंज का हूँ- मैंने अपनी तन्दुरुस्ती व ठीक अक़ल में बिना किसी के सिखाए व बिना दबाव के अपनी ख़ुशी से एक हवेली पक्की पूरब व पश्चिम तरफ़ मय तमामी मकानात व उत्तर पूरब तरफ़ के सहदरे व दो कोठरी वाली- व दहलीज़ पूरबी- कुआँ पक्का व दो दालान एक तरफ़ पूरब के दूसरा पश्चिम तरफ़ के व ज़मीन उसकी तादादी २७० गज़ इलाक़ी दीवारें पूरब व पश्चिम व दक्खिन की जो कि मुहल्ला पुल मोती-लाल में है और हदें उनकी नीचे लिखी हैं जिस पर

बेनामः कबूला चला आता है और उसको बेच सकता हूं
हद्दें महकूको समेत मुनाफ़ा दाख़िली व ख़ारजी
(५५०) रुपिये सिक्का चेहरः शाही पर कि आधे
उसके २७५ रुपिये होते हैं हाथ मुनशी सदासुखलाल
साहिब बेटे मुनशी चंदनलाल साहिब क़ौम कायस्थ
रहनेवाले शहर लखनऊ महल्ला चौक के बेची और
बेकी और क़ीमत रुपिये ख़रीदार से वसूल पाकर हवेली
को बेचा है ख़रीदार का क़बज़ा दख़ल करा दिया इस
बेनामा के लिखने के पीछे मुझको और मेरे वारिसों
को उस बेची हुई हवेली में किसी तरह का हक़ और दावा
नहीं है और जो अगर कोई दावा करे तो जवाबदिही
उसकी मुझ बेचने वाले के ज़िम्मे होगी इन सब बातों
का इक़रार करके बेनामः लिख दिया कि सनद रहे
बेची हुई हवेली की चारों हद्दें शिवाला को छोड़कर

पूरबी हद्द	पश्चिमी हद्द मकानों के
चलती रास्ता	जाने का रास्ता
दक्खिनी हद्द	उत्तरी हद्द हवेली
चलती रास्ता	सैयद अहमद हसन की

लिखा २२ दिसम्बर सन् १८७० ईसवी तथा सम्बत
१९२७

रजिस्टरी करने का हाल

यह सनद सब रजिस्टरार शहर लखनऊ के दफ़्तर
में तारीख़ २२ दिसम्बर सन १८७० ईसवी दिन

बिरहसपति को २२ बजे के वक़्त पेश की गई —
द० सबरजिसटरार साहिब   द० कन्हैयालाल
लिखने इस सनद और वसूल पाने रुपिया बेची का
कन्हैयालाल बेटा छोटेलाल क़ौम खत्री पेशः —
नोकरी रहनेवाला शहर लखनऊ महल्ला साह-
कारान ख़ाना की निज़ामत ज़िलः रायबरेली ने
हमारे सामने इक़रार किया और बेचने वाले को हम
आप जानते हैं —
आखिर सतर इस सनद में लफ़्ज़ अकतूबर का कटा
हुआ है और लफ़्ज़ दिसम्बर बीच को लिखा गया
है और उसके नीचे दसतख़त मेरे मौजूद हैं। लिखा
२२ दिसम्बर सन् १८७० ईसवी —
द० कन्हैयालाल   द० सबरजिसटरार साहिब
इस सनद की रजिसटरी नम्बर १०८ व सफ़ा ३ हिस्से
रजिसटर नम्बर २क की जिल्द २२ में की गई लिखा
२२ दिसम्बर सन् १८७० ईसवी —
द० सबरजिसटरार साहिब
मोहर सबरजिसटरः सबरजिसटरार

बैनामा

हम कि मिरज़ा महम्मद हुसैन व मिरज़ा इनायत हुसैन व अब्बासी ख़ानम औलाद आग़ा मुहम्मद बाक़र रिसालदार रहनेवाले महल्ला निज़ामगंज के हैं —

जोकि २ क़ हाता मकान का उसका मय अपरैल व अमलत व अमद अपरैल और २ क़ दूसरा अपरैल और जिनका नीचे लिखे हुए जोकि महल्ला गोलागंज थाना वज़ीरगंज में है सरकार का हिस्सा हुआ माता की तरफ़ से जो कि पहली जोरू मेरे बाप की ने माता मेरी को दे दिए थे और आज तक वे मेरे हमारे क़ब्ज़ा में के क़ब्ज़: मेरे में चले आते हैं जिसकी चारों हद्दें यह हैं—

पूरबीय हद्द	पश्चमीय हद्द
चलन रास्ता	बेचल रास्ता व थोड़ी दीवार जिधराम सुनार
दक्खिनीय हद्द	उत्तरीय हद्द
चलन रास्ता	बाग़ नवाब अमीर मिर्ज़ा साहिब बिहिश्तवासी

सो हाता व मकान व असबाब व बिरादराने: को अपनी तनदुरुस्ती व ठीक अक़ल के व बिना किसी की ज़बरदस्ती अपनी ख़ुशी से चार सौ ४००) रुपिया पर कि आधे उसके २००) रुपिया होते हैं मुनशी हज़ारी लाल साहिब बेटा मुनशी राम परसाद साहिब डिपटी कलेक्टर बहादुर रहनेवाले महल्ला चौक के हाथ बेचा व बैकिरी और रुपिया सैंकड़ा सबका क़ब्ज़ा गवाहों से व सबूल पाकर बेची हुई चीज़ पर ख़रीदार का क़ब्ज़ा करा दिया और अब हम को और हमारे वारिसों को किसी तरह का दावा बेची हुई चीज़ या बेच के रुपिया

को ख़रीदार से नहीं है जो आगे को मैं या मेरे वारिस बाबत बेची हुई चीज़ के या बेच के रुपिया के दावा करें तो दावा उनका हाकिम वक़्त के सामने झूठा हो और जवाबदिही हम बेचनेवालों के ज़िम्मे है ख़रीदार से कुछ वास्ता नहीं है इस वास्ते यह पूरा बैनामा इसटेम्प के काग़ज़ पर लिख कर रजिस्टरी क़ाइदे के मुवाफ़िक़ करा दी कि आगे को सनद हो और ज़रूरत के वक़्त काम आवे ब्योरा बेचे हुए बिरवन का-

बिरवा नीब के ३ बिरवा लसोड़ा के २
बिरवा बेर का १ बिरवा अमरूद का छोटा १

लिखा २६ अकतूबर सन् १८७२ ईसवी

रजिस्टरी

यह सनद कचेहरी सब रजिस्ट्रार बहादुर शहर लखनऊ में रोज़ मंगल तारीख़ २६ अकतूबर सन् १८७२ ईसवी १ बजे दिन के भीतर रजिस्टरी के वास्ते पेश हुई-

द० सब रजिस्ट्रार द० मिरज़ा महम्मद हुसेन

मिरज़ा महम्मद हुसेन पेशः नौकरी बेटा आग़ा महम्मद बाक़र क़ौम शरीफ़ रहनेवाले महल्ला नेवाज़गंज और लिखनेवाला इस सनद का उमर २२ बरस गोरा अंग आँखें बड़ी दाढ़ी और मोछ सियाह क़द ५ फ़ुट ५ इंच है और मिरज़ा इनायत हुसेन पेशः नौकरी बेटा महम्मद हुसेन क़ौम शरीफ़ लिखनेवाला इस सनद का उमर १८ साल गोरा अं

ગા આંગે વડી નડાઢીન મોછ ડીલ પ્રકુટ ૧ કુંચ
હૈ ઓર અબવાસી ખાનમ પેશઃ ઉપર લિખા હુઆ
બેટી આગા મુહમ્મદ વાકર કોમ શરીફ રહને
વાલી નેગ્રાળગંળ ઓર ઇસ સનદ કો લિખને
વાલી ઉમર ૨૩ વરસ પરદાનશીન હૈ તીનોં લિખને
વાલોં ઇસ સનદ ને ઇસ સનદ કે લિખને સે હરફ
વ હરફ સુન કે પક્ર વાલ કિયા ઓર ૪૦૦) રૂપિયા
નકદ હમારે સામને વસૂલ પાયા ઓર મહમ્મદ
અલી ખાં પેશઃ જમીદારી બેટા હસન ખાં કા કોમ
પઠાન રહને વાલા મહલ્લા મહમૂદનગર શહર
લખનઊ કા ઓર અગિયા ડોમિન બેટી રામદીન
કોમ ડોમ રહનેવાલી હાલા ફકીર મહમ્મદ ખાં
મહલ્લા શહર લખનઊ ને તીનોં સનદ લિખને
વાલોં કી પહિચાન કી ઓર લિખે હુએ ગવાહોં
કી પહિચાન આગા મહમ્મદ વાકર પેશઃ જમીદારી
બેટા આગા મહમ્મદ જામિન કોમ શરીફ રહને
વાલે નેગ્રાળગંળ મહલ્લા શહર લખનઊને કી
ઓર ઇસ સનદ કે લિખને વાલે કો હમ આપ
જાનતે હૈં-લિખા ૨૬ અકતૂબર સન ૧૮૭૨
ઈસવી

દ૦ મિરજા મહમ્મદ હુસેન

દ૦ મિરજા ઇનાયત હુસેન વલ્દ ગુલામ ખુદ

દ૦ અબવાસી ખાનમ

દ૦ અગિયા મોહ્તલે દાન

ડોસિન નિશાની હાથ કી

વકીલ મહમમદ અલીખાં

દ૦ આગા મહમમદ

વાક઼ીફ વક઼ીલ મઝકુર

ઇસ સનદ કી રજિસટરી નમબર ૧૦૫૯ સફા ૩૭૧ રજિસટર નમબર એક કી જિલદ ૧૨ મેં કી ગઈ—

લિખા ૨૮ અકતૂબર સન ૧૮૭૨ ઇસવી

દ૦ સબ રજિસટરાર સાહિબ

મોહર સ નિશાન: સબ રજિસટરાર સાહિબ

બૈનામા મકાન કા

મૈં કિ હુલાસો બેટી નનહેમલ જોરૂ કાલકા—પરસાદ બેટા કામતા પરસાદ કોમ બિરહમની ગોડ રહને વાલી શાહજહાંપૂર મહલ્લા ચોક કી હૂં મૈં ને તનદુરસતી ઔર ઠીક અકલ કે વક઼ત મેં બિના કિસી કી જબર દસતી બલકિ અપની ખુશી સે એક હિસસા જમીન તાદાદી ૧૬૮ ગજ અરાજી ગજ સે જો ઉસી મહલ્લા મેં હૈ જિસકી હદદેં નીચે લિખી હૈં ઔર મેરા કબજા ચલા આતા હૈ જો કિ મેરી નનદ ઔર બેટે કા હિસસા હૈ બિના સાઝે કિસી દૂસરે કે ઔર ઉસકે બેચને કા મુઝ કો ઇખતિયાર હૈ મય સબ હકે ઔર હકોં મુનાફા દાખિલી ઔર ખારજી કે ૧૫૦) રુપિયા કલદાર ચેહરેશાહી જિન કિ આધે ઉસકે ૭૫) રુપિયા હોતે હૈં લછિમન પરસાદ

व मंगाली परसाद व मोहन लाल बेटे लाला हर-
परसाद क़ौम कायस्थ सबासेना रहनेवाले उसी
मुहल्ला के हाथ बेचा और बै किया और सब
नूपिदा ख़रीदार से ज़र मूल पाकर चीज़ बेची हुई पर
ख़रीदार का क़ब्ज़ा करा दिया इस बैनामा के लिखने
के पीछे मुझ को और मेरे वारिसों को इस बेची हुई
चीज़ में और नूपिदा बेच के पाने में किसी तरह का
दावा और मांग कोच नहीं है और न रहा और
जब कोई हिस्सादार दावा करे तो जवाबदिही मेरे
ज़िम्मे होगी इन सब बातों पर इक़रार करके यह
बैनामा लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त पर
काम आवे—

विवरा— हिस्सा ज़मीन का
१७८ गज़ ८ गिरह अंगरेज़ी गज़ से-
१० गज़ ८ गिरह मिनहाई उत्तर के कोने की तरफ़
अरज़ १ गज़ १२ गिरह लमबाई पूरब व पश्चिम
तरफ़ ६ गज़ जिस पर क़ब्ज़ा चंद्रिका परसाद नाई
का है १६८ गज़ ज़मीन बेची हुई अंगरेज़ी गज़ से
सिवाय विवरा नीचे के जो बैनामा से अलग है हिस्सा
पश्चिम ओर ख़रीदार की हवेली के पास ८७ गज़-
अरज़ पूरब व पश्चिम तूल उत्तर दक्खिन
६ गज़ १४ गज़ ८ गिरह
(ख) हिस्सा नीचे हवेली बैजनाथ बुधसेन बनिया

ટધુ ગજ઼ દક્ષિણ
ચૌડ઼ાઈ ૬ ગજ઼ લમ્બાઈ ૬ ગજ઼ દક્ષિણ
પૂરબ ૮ ગજ઼ પશ્ચિમ ૧૦ ગજ઼
(૩) હિસ્સા દક્ષિણીય નીવ કે કિનારે કે નીચે કિ
બેચનેવાલી ઇસ દસ્તાવેજ઼ કો કાટ લેવેગી - ૬ ગજ઼
ચૌડ઼ાઈ પૂરબ પશ્ચિમ ૨ ગજ઼ લમ્બાઈ ૩ ગજ઼
પૂરબીય હદ્દ પશ્ચિમીય હદ્દ
દીવાનચન્દ કી હવેલી નાથદાસ બની દાસ કી
બૈજનાથ વ બુધસેન હવેલી કા
બનિયોં કી
દક્ષિણીય હદ્દ ઉત્તરીય હદ્દ
ગોકુલચંદ બિરહમલ ચંદ્રિકા પ્રસાદ નાઈ કે
કી હવેલી કે આને મકાન કી દીવાર
જાને કી જ઼મીન
લિખા તારીખ ૨૪ મહીના જુલાઈ સન્ ૧૮૬૪ ઈ૦
તથા સમ્વત ૧૯૨૧-
૬૦ કુલાસી બેચનેવાલી કે ગવાહી ગુલજ઼ારી લાલ
ગવાહી દુનીચન્દ ખાં ગવાહી મીર મેહર અલી
ગવાહી ફકીરચંદ લાલી ગવાહી ભવાની બેટા મોહન
બકસ લાલ ધ્રુદ ગોપ વાની
ગવાહી પુરતનલાલ ગવાહી +
ગવાહી કલ્લુમલ વાની

इस बैनामा की रजिस्टरी

आज सोमवार के दिन १ अगस्त सन् १८९६ ईसवी
को ३ बजे फुलासो वेचनेवाली ने आप इस कचहरी
रजिस्टरी शाहजहांपूर में हाजिर होकर इस बैनामा
को रजिस्टरी कराने पर दी गवाही - गुलजारीलाल व
[illegible] मीर मेहर अली व [illegible] अली व
पुत्तनलाल व अहानी व कलनूमल वानी की लिखी
है मैंने नक़ल इस बैनामा की वास्ते करने दस्तख़त
रजिस्टरी के पेश किया और जो कि इस बैनामा में
लिखा हुआ है जवानी कहा कि ठीक है वेचनेवाली से
पूछा गया कि बैनामे तो तीन हिस्सा लिखे हैं और
इस बैनामा के ऊपर २ का हिस्सा लिखा है इसका क्या
सबब है जवाब दिया कि हिस्सा वेची हुई ज़मीन का
२ का है लेकिन तीन जगह नाप कर तीन हिस्सा बैनामा
में लिखे गये हैं और मीर मेहर अली बेटा मीर अन-
वर अली बेटा सैयद हशमत अली क़ौम से ६६
साठ बरस की उमर पेशा नौकरी पड़ोसी वेचनेवाली
के और कलनूमल बेटा बीबामल बेटा फ़त्ते चंद
क़ौम वानी उमर ३५ बरस पेशा असबाब दिखाने का
रहनेवाला शाहजहांपूर मंडल लाला चौक दो गवाह
किनारे पर लिखे हुए ने फुलासो वेचनेवाली की
सूरत पहिचान ने पर और वेच की असलियत पर
हलफ़ से रेकर्ड १ सन् १८९६ ईसवी के गवाही दी इस

वास्ते नक़ल इस बैनामा की किताब बैनामा की नक़लें
जिसमें होती हैं जिल्द ५ में सफ़ा २१-२६ सन १९०६ई० दर्ज
के नम्बर २३४५ पर लिख्या के तीन वर्क़ इस बैनामा की
रजिस्टरी के दस्तख़त करके रेजिस्टार किया और हुक्म
हुआ कि रसीद लिख्या के फुलासो बेचनेवाली को
हवाले कर दिया जावे-
और मालूम हो कि इस बैनामा में एक गवाह दी है

मोहर सरिश्ता   द० रजिस्ट्रार साहिब

रसीद बैनामा

मैं कि अब्दुल रहिमान रहनेवाला महल्ला फ़िरंगी
महल शहर लखनऊ का हूं - जो कि मैंने सब ज़मीन
जिसका कि मैं मालिक था और मेरे क़बज़ा में थी-
और सरकार की दी हुई जिस की चारों हद्दें यह
हैं —

उत्तरीय हद्द ज़मीन मिरज़ा साहिब के दरवाज़े का छोटा बाग़	पूरबीय हद्द चलन्तू रास्ता
पश्चमीय हद्द मकान ख़ान साहब व कुमहार व पीछे अस्तबल	दक्खिनीय हद्द चलन्तू रास्ता

उन पेड़ों समेत जो कि उसमें मौजूद हैं और छप्पर
घोड़सार व छप्पर बंगला रु० ७) रुपिया को कि
आये उस के २५०) रुपिया होते हैं लाला मथुरा-

પરસાદ સાહિબ બેટા મુનશી રામદયાલ સાહિબ સરિશતેદાર કચેહરી કલેકટરીકે હાથ બેચા ઔર બૈ કિયા ઔર ૫૦) રુપિયા બયાના કી તરહ સે લાલા મથુરાપરસાદ સાહિબ સે વસૂલ પાકર અપને કબ્ઝા મેં લાયા ઇસ વાસતે યહ રસીદ લિખ દી કિ આગે કો સનદ હો તારીખ ૨૬ અપરૈલ સન્ ૧૮૭૨ ઈસવી-

દ૦ અબદુલરહમાન ગવાહી ઇનાયત હુસેન
વક઼લમખુદ
ગવાહી પુનનૂલાલ ગવાહી લછિમીનરાયન

રસીદ

મૈં કિ અબદુલ અજ઼ીજ઼ બેટા મિરજ઼ા ઇલાહીબખ઼શ સાહિબ ક઼ૌમ મુગ઼લ રહનેવાલા લખનઊ હાતા મીર મુહમ્મદ સાહિબ કા હૂં-

ચૂંકિ ૮૦॥) કિ આધે ઉસકે ૪૦।=) હોતે હૈં બાબત એક તલવાર કી કીમત કે બનાબ બાબૂ રઘુવર દયાલ સાહિબ સરિશતેદાર મહકમા બાનિકમાસદરી સે મારફ઼ત ચંદૂખાં કાનિસટેબલ બાબૂ રઘુવરદયાલ સાહિબ કે વસૂલ પાયે અબ કોઈ હબ્બા મેરા બાબત કીમત ઉસ તલવાર કે જ઼િમ્મે બાબૂ સાહિબ કે બાક઼ી નહીં રહા ઇસ વાસતે યહ રસીદ લિખ દી હૈ કિ સનદ રહે ઔર કામ આવે- ગવાહી ફ઼તેહઅલી

દ૦ અબદુલઅજ઼ીજ઼ ગવાહી બુધબખ઼શ તારીખ઼ ૨૬
વક઼લમખુદ- ટિકટ ।) અપરૈલ સન ૧૮૭૨ ઈસવી-

रेहननामा मकान

मैं कि मंगले खां बेटा नथ्थू खां रहने वाला मुहल्ला यहियागंज शहर लखनऊ का हूं – जो कि एक मकान कच्चा खपरैल का उसी महल्ला में जिस का कि मैं मालिक हूं और मेरे क़बज़ा में है उस में किसी का साझा नहीं है उसकी चारों हद्दें यह हैं–

पूरबी हद्द
दीवार मसजिद

पश्चिमी हद्द
दीवार मकान मुनशी फ़क़ीर बख़्श साहिब

दक्खिनी हद्द
उसी मकान की दीवार मुनशी फ़क़ीर बख़्श के मकान से मिली हुई

उत्तरी हद्द
उसी मकान की दीवार रास्ते से मिली हुई सो

अब उसको अपनी ख़ुशी से ४०) रुपिया सिक्का एकहरेदार पर कि आधे उसके २०) रुपिया होते हैं लछिमिनियां जोरू सीतलप्रसाद बेगमगंज की रहने वाली के पास दो साल के वादे पर गिरो किया और जिस वक़्त कि रुपिया गिरो का वसूल पाया उसी वक़्त उस मकान पर गिरो रखने वाली का क़बज़ा करा दिया और क़रार किया उस का गिरवी के रुपियों के मुनाफ़ा पर गिरो रखने वाली को छोड़ दिया और इस मकान के गिरे पड़े की मरम्मत मेरे ज़िम्मे है इक़रार यह है कि वादे पर छुड़ा लूंगा और उस वादा के भीतर छुड़ाने

का कुछ लिखान सिवाय इसके नहीं है कि नाम वाकी वा दाराक का अहदा करूं इस वास्ते यह गीरवी नामा लिख दिया कि सनद रहे और वक्त जरूरत के काम आवै—

६० मंगाने यां	गवाही बीरअली बेटा नूर महम्मद नाला दिवैन· राय की बाजार का रहने वाला
गवाही लछिमन सिंघ· बेटा मंगली सिंघ· कालिकागोजका रहने वाला निशानी हाथ की)	गवाही विलायत अली बेटा करामत अली पाटे नाले का रहने वाला निशानी उसकी)

तारीख ३ नवम्बर सन् १८६५ ई सवी—

बैनामा मकान

मैं कि ज़हूर हसन बेटा मुहम्मद हसन कौम शेख पेशा दल्लाली रहनेवाला महल्ला पाटा नाला का हूं

जो कि एक मकान पक्का व कच्चा महल्ला पाटा नाला में है और उसकी चौहद्दी यह है—

पूरबीय हद्द	पश्चिमीय हद्द
करीम शाह की पुरानी नकिया की दीवार	बे चलतू रास्ता—
दक्खिनीय हद्द	उत्तरीय हद्द
पंडित मनोहरलाल की·	उसी मकान की दीवार—

दीवार

મિલી હુઈ ચલનૂ રાસ્તા
વ દરવાજા

જિસકા કિ મૈં માલિક હૂં ઔર ઉસ પર
કબજા મેરા હૈ અપને ખુસી બિના કિસી
કી જબર દસ્તી ઝનૂરાત સે ૩૫૦) રૂપિયા
સિક્કા ચેહરેદાર પર કિ આધે ઉસકે ૧૭૫)
રૂપિયે હોતે હૈં મુનશી રાધેલાલ બેટા શેખ
રહમત અલી મેરઠ કે પાસ ગિરો રક્ખા
ઔર સબ ગિરવી કા રૂપિયા મુનશી સાહિબ
સે વસૂલ પા કર કબજા કરા દિયા ઇકરાર
યહ હૈ કિ એક સાલ પીછે છુડા લૂંગા ઔર
જો વાદા કે અન્દર છુડાઊં તો ૩) રૂપિયા
મહીના કે હિસાબ સે સાલ ભર કા કિરાયા
ગિરવી કે રૂપિયે મેં મિલા કર એકહી સાથ
અદા કરૂં ઔર જો વાદા હો જાવે તો મુનશી
સાહિબ કો ઇખતિયાર હૈ કિ અપના રૂપિયા
ઉસી મકાન સે નાલિશ કરકે વસૂલ કરૈં
ઔર મરમ્મત જરૂરી મકાન કી મેરે જિમ્મે
હૈ અગર ગિરો રખને વાલા અપને પાસ સે
મરમ્મત કા ખરચ દે તો ભી મરમ્મત કા
રૂપિયા ઔર ગિરો કા રૂપિયા જોડ કર અદા
કરૂંગા ઔર મકાન કા કિરાયા ગિરવી કે
રૂપિયે કે મુનાફા પર ગિરો રખને વાલે કો

ગવાહી નિજામુદ્દીન ગવાહી મુહમ્મદ અહમદ ગવાહી રહમ ગવાહી દસ્તખત જહૂર હસન
વકલમ જહૂર હસન રઘનેલાલ પટવારી અલીયાં હીરાલાલ વકલમ ખુદ

माफ़ कर दिया और जो मकान में मैं आबाद हूंगा तो किराया माहवारी के हिसाब से देता रहूंगा कुछ उज़्र न करूंगा इस लिये चिह्ननामा लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त ज़रूरत के काम आवे—

लिखा २६ सफ़रुल् मुज़फ़्फ़र सन् १२७७ हिजरी

इक़रारनामा

मैं कि अली बख़्श बेटा सालार बख़्श रहने वाला महल्ला चौधरी का हूं—

जो कि मेरा विवाह ख़ैरातन बेटी करीमुद्दीन ख़ां के साथ हुआ है सो दिल थामई करीमुद्दीन ख़ां साहिब के वास्ते इक़रार करता हूं और लिखे देता हूं कि ख़ैरातन को रोटी कपड़ा देने में और भाई बिरादरी में आने जाने से किसी तरह कोई भांति की कमी न करूंगा और जुदा न करै जो ख़िलाफ़ इस इक़रार के करूं तो अदालत और पंचों का गुनहगार हूंगा और मेरे भाई बिरादरी जिन की मुहरें नीचे लिखी हैं ख़ैरातन के रोटी कपड़े के ज़िम्मेदार होंगे सो ये बातें इक़रारनामा की तरह लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवे—

तारीख़ २२ रबीउल् अव्वल सन् १२६२ हिजरी दिन बिरहस्पति—

हम सब लोग भी ख़ैरातन के
रोटी कपड़ा के ज़िम्मेदार हैं—

દ૦ ફિદા અલી   દ૦ સૈયદ અલી   દ૦ હુસેન અલી
વકલમ ખુદ   વકલમ ખુદ   વકલમ ખુદ
દ૦ મહબૂબ બખ્શ   દ૦ અલ્લાબખ્શ
વકલમ ફિદા અલી   વકલમ ખુદ   દ૦ અલીબખ્શ
૧૨/૭૬
ગવાહી રહીમબખ્શ   ગવાહી મુહમ્મદ બખ્શ ૧૨/૭૦   ગવાહી નજફ બખ્શ ૨૨/૬૮

હિબનામા

મૈં કિ શેખ ગુલામ રસૂલ બેટા શેખ રહીમ રસૂલ ઉમર અન્દાજન ૫૦ બરસ રહને વાલા મહલ્લા ચૌધરી શહર અહમદનગર કા હૂં —

એક મકાન પક્કા યા કચ્ચા જોકિ મહલ્લા ચૌધરી મેં હૈ બિના કિસી કે સાઝે યા ઝગડે કે અપને કબ્જા મેં હૈ ઔર ઉસકી ચારોં હદ્દેં યહ હૈં સો અપની ખુશી જીતેજી તનદુરુસ્તી ઔર અક્લ ઠીક કે દબાવ બિના કિસી કે સિખાયે બહકાયે ઇસ બાત કે ... ... ચેહ્રેદાર થા કિ આગે ઉસકે ... હોતે હૈં શેખ ખુદા બખ્શ બેટા શેખ સાહબલ્લા મેરે ... કે સાથ ... કે વાસ્તે પરવરિશ કરતા ઔર જિનો રખને વાલે સે સબ ... કા ... વસૂલ પાકર ઉસકા કબ્જા ... ઐસા કર દિયા ... હૈ કિ જિસ વક્ત ચાહે ખુદ હો જાયગા ઉસી વક્ત છુડા લૂંગા ઔર જો ... કે બીચ મેં જિનો રખને વાલે કો અપને ... કી જરૂરત હોગી તો

बिना किसी झगड़े व बखेड़ा के उसी मकान को दूसरे आदमी के पास गिरो करके सब रुपिया एक ही दफ़ा में दे दूंगा लेकिन ऐसा करने में आप अपना दस्तावेज़ रजिस्टरी शुदः यह गिरो करनेवाले के ज़िम्मे होगा और टूटे फूटे की मरम्मत मैं आप करता रहूंगा और सूद की जगह पर गिरवी रखनेवाला मकान का किराया लिया करे और जो करार के मुवाफ़िक़त न करूं तो गिरो करनेवाले को इख़्तियार है कि सरकार में नालिश करके उसी मकान से रुपिया अपना वसूल कर ले मुझको और मेरे वारिसों को कुछ हीला व हुज्जत न होगा इस वास्ते यह गिरो नामा लिख दिया कि सनद रहे और ज़रूरत के वक़्त काम आवे —

१० अलामत निशानी	गवाही मीर अमीर अली
शेख़ करीमुल्ला	कसबा बुढ़ाना के रहनेवाले
गवाही चुन्नी मुहल्ला-	मैं गिरो रखनेवाले को जानता हूं
दार रहनेवाला कूचा	दस्तख़त गनपतराम चपरासी वक़लम
ख़ज़ानाक उमर [illegible] बरस	ख़ुद
गवाही रमज़ानू उमर	हमारे सामने लिखनेवाले ने
लगभग [illegible] बरस	निशानी अपने हाथ से बनाई है

चारों हद्दें

पूरबी हद्द	मीर अमीर अली वक़लम
दीवान मकान व चबूतरा	ख़ुद
रास्ता	

વઞ્ચિમીપિહદ્દ ચુન્નીમહલ્લેદાર્ન્લામતિ
ચલ્લતૂગાસતા નિશાનીમુહર ૮
દક્ખિનીપિહદ્દ ઉત્તરનીપિહદ્દ
મડેહુર ચંડહલકી ચલતૂગાસતા વ દીવાર મકાન
ઝમીનસે મિલાહુઆ વ દરવાજા
લિખા રહ તારીખ નવમ્બર સન્ ૧૮૭૦ ઈસવીદિન
સિનહસપતિ—



રજિસટરી

આજ ૨૪ નવમ્બર સન્ ૧૮૭૦ ઈસવી કો ૩ ઘ ૪ બજે
દિનકો શેખ કરીમુલ્લા મૌજૂદ થે વ મીર અમીરઅલી
વ હુસેની મહલ્લેદાર ગિરો કરનેવાલે કો પહિચાનતે
હૈં યહ રજિસટરી નમ્બર ૨૬૮૮ વ સફહા ૨૯ કિતાબ
૧ જિલ્દનામ્બર વાલી સન્ ૧૮૭૦ ઈ૦ મેં લિખી ગઈ—
દ૦ ડિપટી રજિસટરાર સાહિબ

મોહર સરિશ્તા

સાહિબ રજિસટરાર

આજ ૨૪ નવમ્બર સન્ ૧૮૭૦ ઈસવી કો ફીસ ૧) લેકર
નકલ ગિરવીનામા લિખનેવાલે કો દી ગઈ—
દ૦ ડિપટી રજિસટરાર સાહિબ

रिहननामा

मैं कि ताज मुहम्मद ख़ां बेटा कम्मन ख़ां रहने वाला महल्ला चौबदानी सबज़ी मंडी से मिलाहुआ शहर लखनऊ का हूं—

जो कि एक मकान पक्का व कच्चा जो महल्ला चौबदानी में है और उसकी हद्दें नीचे लिखी हैं जो २५) रुपिया पर शेख़ अमजद अली बेटा शेख़ वाजिद अली मेरे साले के लड़के की तरफ़ से दार-अली गिरवी करनेवाले के गिरो था २६ जनवरी सन् १८६९ ईसवी के रिहननामा की बाबत से उसपर क़ब्ज़ा हमारा अबतक है अब उसको मैंने १८) रुपिया सिक्का चेहरेदार पर कि आधे उसके ९) रुपिया होते हैं पास मीर मेहर अली साहिब रहने-वाले कटरा हैदर बेग ख़ां के गिरो रखकर सब गिरो का रुपिया गिरो रखनेवाले से वसूल पाकर क़ब्ज़ा गिरो करनेवाले का अपना ऐसा करा दिया इक़रार यह है कि जिस वक़्त रुपिया गिरवी का अदा होजावे उसी वक़्त छुड़ा लूंगा उस वक़्त गिरो रखनेवाले को कुछ मकान के छोड़ देने में हीला व बहाना न होगा सो यह रिहननामा पूरा लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवे—

तारीख़ ३० दिसम्बर सन् १८७४ ईसवी—

પૂરવીય હદ્દ	પશ્ચિમીય હદ્દ
દીવાર મકાન	ઉસી મકાનકી દીવાર
ફઝલુલ્લાકી	દીવાલ ઓહની વચલનૂ વાસતા--
દક્ખિનીય હદ્દ	ઉત્તરીય હદ્દ
ઉસી મકાનકી દીવાર	મિલણા વેગકી દીવારસે
ફઝલુલ્લાકી કે મકાન મેં મિલી હુઈ	મિલા હુઆ

૯૦ ૨૨૨૩ ગવાહી ગવાહી

તાજમહમ્મદખાં ખુદાબક્ષ ગોપ છગનૂ

ગવાહી કરીમબક્ષ ગવાહી મુહમ્મદખાં રહનેવાલા મહલ્લા મુગ઼લપુરાના

તારીખ ૩૦ દિસમ્બર સન્ ૧૮૭૪ ઈસવી--

પટ્ટા વાવાન સન ૧૨૮૩					
નામ મોઝા	નામ જિમ કો પટ્ટા દિયાગયા	નામ જિસ કીતરફ સે પટ્ટા દિયાગયા	તાદાદ રકબા પટ્ટા		તાદાદ સાલાના
			નમ્બર ખેત	રકબા	નકદી
કસબા નિવતિની તહસીલ મોહાન	દિલદાર અલી	મિરજા મુગલ બેગ	ચાર	૩૬	૧૭
			બરિઆદે	૩	૪
			તરહીસર	૩	૪
			તરહારસ	૬	૨૭
			બત્રારદે	૨૭	૯૩
			છત્તારદે	૪૫	૭૭
			ચવારદે	૨૭	૩૦
		ફ૦ મિરજા મુગલ બેગ સાહેબ			
લિખા ૨ તામાર્દ સન ૧૨૮૩ ફ૦			૭ કિતા	૯૯	૨૨૭

ફસલી-	
લગાન વટાઈ	કૈફિયત
	યહ જ઼મીન તુમ કો જોતને બોને કે વાસ્તે એક સાલ સન ૧૨ ફસલી કે દી જાતી હૈ તુમ કો ચાહિયે કિ ઇસ જ઼મીન કો અચ્છી તરહ સે જોતો બોઓ ઔર લગાન કા રુપિયા બિના કિસી હીલા વ આયાફત જ઼મીંદાર વ આસામી કે કિસ્ત કિસ્ત અદા કરતે રહો વ અગર વ મૂસા વ નાવ વ રામ વ પીલ વ ઠાક્ય વગેરઃ વાસ્તે હક જ઼મીંદારી વ મેંડ વ ખાત્ય વગેરઃ જો દિયા જાતા હૈ લિયા જાયા કરેગા ઔર જબ ફસલ ખાલી હોગી તો તુમ કો બિના ફૈસલા જમા ઔર લેને દૂસરે પટ્ટા કે દખ્લિદાર જોતને બોને જ઼મીન કા ન હોગા નસ્વરહાર કો બકતી વ કમી જમા ઔર બેદખ્લી જ઼મીન કા ઇખ્તિયાર હૈ ॥

	ક઼બૂલિયત બાબત સન ૧૨૮૨					
નામ મોઝ઼ા ર પરગના	નામ ફિદવ ને ક઼બૂલિયત લિખી	નામ મુસ્તાજિર	તાદાદ રક઼બા ક઼બૂલિયત		તાદાદ સાલાના	
			નમબર ખેત	રક઼બા	નક઼દી	
ક઼સબા નિવૃતિની તહસીલ મોહાન	દિલદાર અલી	મીરઝ઼ા મુરતઝ઼ા બેગ	ચારાર૧	૨૫	૨૭	
			વર્ગીદ	૩૫	૫૫	
			તાદારર	૩૫	૩	
			તરહારસ	૬૫	૨૭	
			વનરારદ	૨૭	૬૫	
			ભાવારદ	૪૫	૭૭	
			થારદ	૨૫	૨૭	
	દ૦ દિલદાર અલી					
		દ૦ મીરઝ઼ા મુરતઝ઼ા બેગ ઝ઼મીંદાર				
લિખ્યા રમ્જ઼ાન સન ૧૨૮૨ ફ઼૦			૭ કિતા	૮૬૬	૨૬૬	

લગાન	ફ઼સલી-
પટાઈ	કૈફ઼િયત
	પહ જ઼મીન જોતને બોને એક સાલ સન્ ૧૨ ફ઼સલી કે વાસ્તે નમ્બરદાર સે લેકર કુબૂલ કરતા હૂં કિ અચ્છી તરહ સે જોત બોકે મુવાફ઼િક લગાન કા બિના કિસી હીલા વ ઍતરાજ઼ જમીની વ અસામીકે કિસ્ત કિસ્ત અદા કરૂં ઔર જ઼મીદારી કા હક દેને મેં મિસ્લ સૂખા વ પાલા વ ઊખ વ઼ગૈ૦ આફ઼તી કી તરહ બહાના ન હોગા। ઔર જબ ખ઼ાલી ફ઼સલ હો જાયગી તબ મહીના જેઠ મેં બિના દૂસરે પટ્ટા કે લેને વ ફ઼ૈસલા જમા કે જ઼મીન કો ન જોતૂંગા। ઔર કમી વ બેશી જમા ઔર બેદખ઼લી જ઼મીન શર્તેં ઊપર લિખી હુઈ કો છોડ઼તા પા બિના હુકમ વ બિના ફ઼ૈસલા જોતૂં બોઊં તો ઇખ઼્તિયાર હૈ કિ લગાન કુલ ક઼ાયદા કે મુવાફ઼િક મુઝ સે વસૂલ કર લેં કુછ ઉજ઼્ર ન હોગા।

पट्टा बाबत सन् १२८४ फ़सली-							
नाम मौज़ा व परगना	नाम असामी जिसके नाम पट्टा हुआ	नाम असामी जिसने पट्टा दिया	तादाद रकबा पट्टा		तादाद लगान साला		कैफ़ियत
			नम्बर खेत	रकबा	शरह नक़दी	शरह बटाई	
मल्लहौर तहसील व ज़िला लखनऊ	फ़तेअली	नबी-बख़्श	पड़ला मधुरा महाना बमुरा ११	२७ ६६ २५ २६		आधा तिहाई चौथाई है	हिफ़ाज़त जोतनेवाले सन् १२ फ़सली के जैसा लोग पट्टों में लिखा है
		द० नबी बख़्श कुर्मीदार					
लिखा ता० १ असाढ़ सन् १२८४ फ़सली-							

કબૂલિત વાવા સન ૧૨૮૪ ફસલી							
નામઓ ખેતરના	જમીન સરકારી ક.	જમીન સરકારી ક.	તારીખ કબૂલિયત		તારીખ સાલના		કેફિયત
			જમુબંધ સોગ	નક્કીવા	શાન નક્કી	શાન વધારી	
મલ્લહો નગદ સીલ વાળિના લખ્યા	ફસ ફસલી	નવી વધારા	પહેલા ૨ મજુરી ૬ મકાનો ૭ વસુલી ૨૨	૨૯ ૬૯ ૨૫ ૨૬		આવેલ તિહારી ચોથાઈન ૧	હિજરીન ગુમકોસ ૧૨ ફસલી કેવાસતે એકસાલ (રૂપીઆ)
				૯૩			
			૨૦ ફસલી આસન કાન				
લિખ્યા ૨ અસાડ સન ૧૨૮૪ ફસલી—							

सनद पटा किराया नामा

मैं कि दिलावर हुसेन खां बेटा हकीम अताहुसेन खां
खां क़ौम कम्बोह रहनेवाला मोहल्ला मुफ़्तीगंज
शहर लखनऊ का हूं —
जो मैं ने एक मकान पक्का जिसको खंडसार कहते
हैं जो मोहल्ला मुफ़्तीगंज शहर लखनऊ में है
लाला लछिमन परसाद व छुन्नन परसाद व
कालिका परसाद निर्ख़ी रखने वालों से ५ महीने के
वास्ते ६) रुपिया महीना किराया पर खंडसार करने
के वास्ते लिया इक़रार यह है कि लाला साहिबों
को किराया मकान का महीना महीना देता रहूंगा
और ५ महीना पीछे मकान खाली कर दूंगा उज्र
हीला व हवाला बीच में न लाऊंगा इस वास्ते यह
किराया नामा लिख दिया कि सनद रहे —
लिखा २६ तारीख़ महीना दिसम्बर सन् १८९० ईसवी

द० दिलावर हुसेन खां — गवाही हनुबूलाल
गवाही करीम खां — गवाही सुखदेव परसाद
वक़लम ख़ुद

फ़ैसला पंचायत

फ़ैसला पंचायत सामने लछमी नरायन पंचायत
को दोनों तरफ़ों ने क़बूल किया

लछमी नरायन पंच

२८ अप्रैल सन् १८९६ ईसवी

जोकि लाला दुर्गा परसाद और कालिका परसाद और मनोहर लाल ने मुझको पंच वास्ते फ़ैसला करने झगड़ा मकानात मौरूसी व साहे के जोकि शहर लखनऊ महल्ला मल्लाहन गंज में हैं मुक़र्रर किया सो फ़रीक़ों में उनकी क़ीमत दरया-फ़्त जोकि पूरी हुई है नीचे लिखी है और मकानात मौरूसी की क़ीमत २७०३) रुपिया की है — और हिस्सा हर एक साहिब का तादाद में ९०१) रुपिया के हुआ —

नम्बर	नाम मकानात	क़ीमत		हिस्सा दुर्गा परसाद	हिस्सा कालिका परसाद	हिस्सा मनोहर लाल
(१)	दीवानख़ाना	११२५)				
		ख़ामीज़, अमला				
		५२५)	६००)	(१) १७५)	(२) १७५)	(३) १७५)
(२)	आबदारख़ाना पक्का	१७७)		(१)	(२)	(३)
	मिनहा करना दीवानख़ाने से	५२५)	२२५)	५९)	५९)	५९)
(३)	हवेली मौरूसी	२२५॥)	९७७॥)	(१)	(२)	(३)
		१२०३)		४०१)	४०१)	४०१)
(४)	कच्चा गारख़ाना	९९)		(१)	(२)	(३)
				३३)	३३)	३३)

(५) कचवा बैठका मौरूसी
हवेली से मिला हुआ ९९) ३३) ३३) ३३)
९०१) ९०१) ९०१)

और एक हिस्सा ज़मीन जो दीवान खाना के पूरब तरफ़ है उसको कालकाप्रसाद और मनोहरलाल ने २५०) रुपियों को मोल लिया है और लाला दुवारकाप्रसाद ने एक हवेली और दुकानें जो दीवानखाना के दक्षिन तरफ़ हैं ५००) रुपियों की हरप्रसाद और जवाहिर लाल बनियों से मोल लिया है और मौरूसी मकान में कालकाप्रसाद ने अपने पास से एक मकान २५०) रुपियों का बनवाया है अब सब साहिबों की मरज़ी से और उनके ख़ानदानी दस्तूर से कि जो उन्हों ने मेरे सामने किया यह बात क़रार पाई कि जिसमें किसी का हरज न हो कि हाल की मोल ली हुई हवेली भी मौरूसी जायदाद में मिलाकर आपस में बांट हो जावे सो उन मकानों की भी क़ीमत मौरूसी मकानों की क़ीमत से मिलाकर एक एक शख़्स को जो रुपिया मिला वह नीचे लिखा है -

दुवारकाप्रसाद	कालकाप्रसाद	मनोहरलाल
१४०९)	१२२९)	९३९)

मौरूसी मकानों का हिस्सा	हाल में हवेली मोल ली हुई की क़ीमत
९०७)	५०८)

कालकापरसाद मनोहरलाल

मौरूसी मकानोंका हालमें मोल ली मौरूसी हालमें मोल
हिस्सा ६००) हुई जमीनकी की- मकानोंका लीहुई जमीन
मत ७५) हिस्सा ६००) कीलायोकी कीमत ७५)

रूपिया मौरूसी मकानों की लागतका
२५०)

बांट हवेलियोंका अलबत्ता ईह काम बाकी रहा जो इस तरह पर बांटी गई—

(१) दुवारकापरसाद (२) कालकापरसाद
१२७५) ७३८॥)

दीवानखाना कालकापरसाद हवेली व गावखाना
११२५) वमनोहरलाल दुकानें जो पक्के दीवान
से जो हालमें जमीन दुवारका खानासे मिला
लीगई २५०) परसादसे हुआ २७७)
लीगई ४५०)

(३) मनोहरलाल लायो कच्चा
२६००॥) गावखाना

मौरूसी हवेली कच्चा बैठका ४६॥)
२२०३) ९६)

गावखाना लागत मौरूसी मकान
कच्चा लायोका की बाबत जो कालका-
४६॥) परसादने पाया २५०)

ઉસ ઊપર કે હિસાબ લિખે હુએ કે મુતાબિક મનોહરલાલ
કે હિસ્સે મેં ૩૫॥) રૂપિયા ઇસ તરહ સે ચાહિયે–
જો દુર્ગાપ્રસાદ ઔર જો કાલકાપ્રસાદ
કો પાને હૈ ૨૩૪) કો પાને હૈં ૪૯૨॥)
સો દુર્ગાપ્રસાદ ને તો ૨૩૪) જો કિ ઉનકો મનોહર-
લાલ સે મિલને થે છોડ દિયે ૨૫૮॥) મેં સે જો કિ મનોહર
લાલ સે કાલકાપ્રસાદ કો મિલને થે ઉસ મેં સે દુર્ગાપ્રસાદ
ને ૭૫) રૂપિયા કાલકાપ્રસાદ કો અપને પાસ
સે દેને કબૂલ કિયે ઔર દુર્ગાપ્રસાદ ૨૦૭) ઔર
બદલે મનોહરલાલ કે કાલકાપ્રસાદ કો અપને પાસ
સે દેવે ઔર મનોહરલાલ યહ ૨૦૭) રૂપિયા બિના સૂદ ચાર
બરસ પીછે દુર્ગાપ્રસાદ કો દેવે અબ બાકી રહે ૨૫૧॥)
જો કાલકાપ્રસાદ કો મનોહરલાલ સે મિલના ચાહિયે
સો મનોહરલાલ ૨૫૧॥) નકદ કાલકાપ્રસાદ કો દેવે
ઔર બાકી ૩૦૭) રૂપિયા ૨૦૭) સાલાના કે હિસાબ સે બિના
સૂદ કાલકાપ્રસાદ કો દેવે ઔર કાલકાપ્રસાદ ૨ કો
બરસ મેં હવેલી મૌરૂસી ખાલી કર દેવે–
ઔર માલૂમ હો કિ બાંટે હુએ મૌરૂસી મકાનોં કો છોડ કર
એક મકાન પક્કા મૌરૂસી હવેલી સે મિલા હુઆ કિ જિસ
મેં હિસ્સાદારોં કી બહિન રહતી હૈ વહ બદસ્તૂર અપની સાદે
મેં રહે ઔર ઉસ મકાન કે ઊપર કા બાલાખાના જબ તક
કિ જિંદા હૈ મનોહરલાલ કે કબજા મેં રહે ઔર માલૂમ
હો કિ બાંટી હુઈ મૌરૂસી હવેલી કી હદ્દ પશ્ચિમી જુનૂબ

के नीचे तक है उस से आगे हद्द मकान साहेब की है कि जिसका बांट नहीं हुआ है लेकिन मनोहर लाल के हिस्सा में दीवार उत्तरीय जीना तक आ गई है और मनोहर लाल को खुसूसियत है कि वालाखाने को हस्बदार करके पाट लें—

सो हुकुम हुआ कि

एक एक नकल इस फैसला की हर शख्स को दी जावे कि मुवाफिक उसके करते रहें—

लछिमी नरायन

द० कुंवरकाप्रसाद	द० कालकाप्रसाद	द० मनोहरलाल
कायस्थ रहनेवाला	कायस्थ रहनेवाला	कायस्थ रहनेवाला
लखनऊ बाजार	मीना बाजार शहर	शहर लखनऊ
गाजा टिकैतराय	लखनऊ	पुत्र मोतीलाल
गवाही गनेशराय बेटा	गवाही कन्हईलाल	गवाही तेजीलाल
मुन्नालाल कायस्थ	बेटा बख्शीराम कायस्थ	बेटा मेवाराम
रहनेवाला मुहल्ला	रहनेवाला महल्ला	कौम कायस्थ
रकाबगंज लखनऊ	रकाबगंज लखनऊ	रहनेवाला सो-
		नापाना तहसील
		बछिरावां लखनऊ
गवाही हरप्रसाद	गवाही सिताबराय	गवाही नूर मुहम्मद खां
रहनेवाला नौमहल्ला	रहनेवाला महल्ला	बेटा फिदाहुसेन खां रहने
सुखुलीगंज	कश्मीरीटोला	वाला महल्ला नवाब-
		दी वकील महमूद —

तमस्सुक

मैं कि पितम्बर नाथ कौम खत्री की रहनेवाला महल्ला दरियागंज शहर लखनऊ का हूं— जो कि मैंने २५) कि आधे उसके १२॥) रुपिया होते हैं जनाब हाफ़िज़ अब्दुल्वाहिद खां साहिब से बिना सूद कर्ज़ लिये और अपने खर्च में लाया इक़रार यह है कि यह रुपिया सात महीना पीछे बल्कि वादा के अंदर ही ज़रूर अदा करूंगा कुछ हीला व बहाना न करूंगा जो सात महीने पीछे अदा न करूं तो आठवें महीने हाफ़िज़ साहिब को इख़्तियार है कि मेरी जायदाद मन्क़ूला ग़ैर मन्क़ूला से अपना करके वसूल कर लें मुझ को और मेरे वारिसों और जो कोई मेरी जगह पर होगी उनको कुछ हीला व बहाना न होगा सो यह तमस्सुक लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवे—तारीख़ १ महीना जून सन् १८६६ ई०

द० पितम्बर नाथ	गवाही राम सहाय	गवाही सरजू
दरियागंज का रहने	बेटा हर सहाय	परसाद
वाला बक़लम ख़ुद		

रजिस्टरी

नम्बर ५१२६ व सफ़ा ५१२७ किताब तमस्सुकों सन् १८६६ ई० में तारीख़ २ जून सन् १८६६ ई० ५ बजे दिन के बीच में इन को आगे रामसहाय और सरजूपरसाद कि जो किनारे पर लिखे हुए गवाहों की पहिचान से यह कारवाई रजिस्टरी हुआ—

द० रजिस्ट्रार साहिब	मुहर सरिश्ते साहिब रजिस्ट्रार

तमस्सुक

मैं कि हरसहाय बेटा चंदी सहाय क़ौम बिरहमन रहने-
वाला महल्ला रकाबगंज शहर लखनऊ का हूं—
जो कि ४८) सिक्का चेहरेदार कि आधे उसके २४)
रुपिया होते हैं लाला रामनरायन दास साहिब क़ौम खत्री
अगरवाल रहनेवाला महल्ला खतरी टोला से
॥) माहवारी सूद के हिसाब से क़र्ज़ लेकर अपने
ख़र्च में लाया हूं इक़रार करता हूं व लिखे देता हूं कि
यह क़िस्तबंदी की तरह ४) रुपिया महीना देता रहूंगा
और सूद ४) महीना में से सूद महीना का मुजरा देकर
बाक़ी मूल में वज़ा करता जाऊंगा कुछ हीला व हवाला
बीच में न लाऊंगा और अगर किसी महीने में इत्तिफ़ाक़
से न अदा करूं तो दूसरे महीने में १०) दस रुपिया ज़रूर
दूंगा और जो दो महीने पीछे दो महीने का न अदा करूं तो
तीसरे महीने में लाला साहिब को इख़्तियार होगा कि
मेरी जायदाद मनक़ूला व ग़ैर मनक़ूला से नालिश करके
वसूल करलें सूद को और मेरे वारिसों व जो मेरी जगह
पर हों से कुछ हीला व हवाला न होगा इस वास्ते यह
तमस्सुक लिखदिया कि सनद रहे और ज़रूरत के वक़्त
काम आवे— लिखा २७ मई सन् १८६६ ईसवी—

द० हरसहाय बिरहमन गवाही मुक़ीम खां
रकाबगंज का रहनेवाला
गवाही समसन खां गवाही दौलतराय

तमस्सुक

मैं कि बैजनाथ बेटा मोतीलाल क़ौम बनिया अगरवाल रहनेवाला मुहल्ला मोलवी गंज का हूं—

जो कि मैं ने एक हवेली पक्की जिसे दीवान खाना कहते हैं मकानों समेत व बिला व कारखाना और जो ज़मीन कि उसमें है वाक़ा टिकैत गंज में जिस पर मेरा क़बज़ा व दख़ल है २५०) रुपिया सिक्का कलदार पर कि आधे उसके ७५) होते हैं मुनशी रामाकिशन साहिब व महाराज बहादुर साहिब व सरदूप साहिब बेटा लाला उमराव लाल बैकुंठ वासी क़ौम कायस्थ उसी मुहल्ला के रहनेवाले के हाथ गिरों करके सनद गिरवीनामा पर २५ तारीख़ नवम्बर सन् १८५० ईसवी को रजिस्टरी करा दी है—

यह उसकी सनद बैनामा जायदाद की ७५०) रुपिया सिक्का कलदार के उस पर लिये हुवे गिरवीदारों को लिखवा कर २५०) सिक्का कलदार सिवाय उस ऊपर गिरवी के रुपिया के पहिले के ऊपर लिये हुवे गिरो रखने वाले और अब के खरीदारों से क़ीमत के रुपियों में से वसूल पाकर अपने खर्च में लाया हूं इक़रार यह है कि जब यह सनद इस बैनामा की पूरी हो जावेगी तो जो रुपिया कि अब मैं ने एक रुपिया सैकड़ा के हिसाब से लिया है सूद समेत और जो कि गिरवी का रुपिया ऊपर लिया था वह सब लाला

માલિકોં આગાલે ગિરવી રખને વાલોં વ   ખકે ધની-
હાનોં કો મુજરા વ હિસાબ કરૂંગા ઔર જો ખુદા ન કરે
કિ સનદ બૈનામા મેં કુછ હીલા હોવે તો કુલ રૂપિયા સૂદ
સમેત જો કિ ઇસ સનદ મેં લિખા હૈ ગિરવી કા રૂપિયા
ભી મિલા કર બજૂર બિના હીલા વ બહાના ગિરો રખને
વાલોં કો અદા કરૂંગા કુછ ઝગડા વ હીલા કભી
બીચ મેં ન લાઊંગા ઔર બિના સનદ મેં લિખે હુવે
રૂપિયા અદા કરને કે ઇસ ગિરો રખા હુઆ ચીજ
કો ન છુડાઊંગા ઔર જો ઇસ સનદ પર લિખે હુવે
રૂપિયોં કો થોડે થોડે દૂંગા તો ઇસ સનદ કી પીઠ પર
લિખવા લૂંગા બિના સનદ કી પીઠ પર લિખા હુઆ
રૂપિયા નાતો બાકી કહને સે પારસીદ પા.ફાગખતી
કે ૨ કા પૈસા ભી મુજરા ન પાઊંગા સો યહ સનદ તમસ્-
સુક કી લિખ દી હૈ કિ સનદ રહે ઔર વક્ત જરૂરત
કે કામ આવે-

ગવાહી હરનરાયન   ગવાહી રામ અધીન

લિખા ૨૫ જનવરી સન્ ૧૮૫૨ ઈસવી - તથા
સમ્વત ૧૯૦૭

વકાલતનામા   ટિકટ કીમતી ।)

ઠાકુર બલદેવ સિંહ બેટા માન સિંહ રહને વાલા મૌજા
પૈકાર પરગના મન્ના તહસીલ બાડી જિલા સીતાપુર
મુદ્દઈ-

बनाम

सीताला बेवा वारिसा महावीर सिंह रहनेवाली मौज़ा लाल-
पुर परगना सिदरा ताहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ-
मुद्दालालैहा-

दावा दिलापाने १३ क़िते खेत व १२॥) सूद —

मैं कि सिताला बेवा गिरवर सिंह क़ौम ठाकुर जोरू महावीर
सिंह बैकुंठ वासी रहनेवाली मौज़ा लालपुर परगना सिदरा-
ताहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ की हूं -

जो कि सिरनामा पर लिखे हुवे मुक़द्दमा में विनायक
परसाद साहिब वकील अदालत को अपने तरफ़ से
वकील मुक़र्रर करके इक़रार करती हूं और लिखे
देती हूं कि वकील साहिब जो कुछ इस मुक़द्दमे में
दौड़ व मेहनत व जवाबदिही व लिखकर करें वह
सब करारदाद वकील साहिब की मुझ इक़रार करने-
वाली को अपने आप किये हुवे की तरह क़बूल व मंज़ूर
है और होगी इस वास्ते यह वकालतनामा लिख दिया
कि सनद रहे और काम आवे-

तारीख़ २६ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी —

द० निशानी सिताला इक़रार करनेवाली की	गवाही बेनीलाल मोहर्रिर वकील साहिब रहनेवाला अशरफ़ाबाद बक़लम
गवाही बहादुर सिंह	ख़ुद

વકાલત નામા મુદ્દઈ કી તરફ઼સે

ખુદા બખ્શ મુદ્દઈ   મુત્રાફ઼િક દફ઼ા ૩૨૪
તાળીરાત હિંદ

બનામ

લાલતાપ્રસાદ વ મગાનંત સિંઘ વ દેવી બખ્શ વ
હનૂમાન   મુદ્દઆ અલૈહુમ-
ટિકટ ।।) કા

મૈં કિ ખુદા બખ્શ બેટા હુસેન બખ્શ રહનેવાલા મહલ્લા
અશરફાબાદ શહર લખનઊ કા હૂં—
ઇસ મુક઼દ્દમા મેં અપની તરફ઼ સે પંડિત પરાનનાથ
સાહિબ કો વકીલ કરકે ઇક઼રાર કરતા હૂં કિ જો કુછ
વકીલ સાહિબ મેરી તરફ઼ સે પૈરવી વ કારરવાઈ વ જવાબ
દિહી કરેં વહ સબ મુઝ કો ખાસ અપને કિયે હુએ કી
તરહ સે ક઼બૂલ વ મંજ઼ૂર હે સો યહ વકાલત નામા લિખ-
દિયા કિ સનદ રહે ઔર જ઼રૂરત કે વક઼્ત કામ આવે-
તારીખ઼ ૨૩ સિતમ્બર સન્ ૧૯૦૯ ઈસવી-

દ૦ ખુદા બખ્શ   ગવાહી કરીમ- બખ્શ વલ્દ ખુદ   ગવાહી હસન અલી રહને વાલા ગણીર- ગંજ

મુદ્દઆ અલૈહુમ કી તરફ઼સે વકાલત નામા
ટિકટ ।।) કા

ટિકટ ।।) કા ચિપકા હૈ
મૌલવી ખુદા બખ્શ   મુદ્દઈ

વનામ

લાલતા પ્રસાદ વ ભગવંત સિંધ વ દેવી વખ્શ વ

હનૂમાન પ્રસાદ

જુરમ માનપીટ   મુદઇલ્લાલ્લેહુમ

મૈં કિ લાલતા પરસાદ કોમ કાયસ્થ નમબરદાર મોઝા

રામદાસપૂર વ ભગવન્ત સિંધ ઠાકુર વ દેવી વખશ

વ હનૂમાન વેટે શિવ વખ્શ રહનેવાલે નિગોહાં કે હૈં-

જો કિ હમ લોગોં ને ઉપર કે લિખે હુવે મુકદ્દમા કી

પૈરવી વ જવાવદિહી કે વાસ્તે લાલા મૈનો પરસાદ

સાહિવ કો વકીલ મુકરર કિયા જો કુછ વકીલ

સાહિવ જવાવદિહી કરૈં - ચાહેં કાગજ પેશ કરૈં યા

ફેસલે ખાસ હમ લોગોં કે કિયે હુવે કી તરહ હોગા હમ

કો મંજૂર હૈ સો યહ સનદ વકાલતનામા કી તરહ

લિખ દિયા કિ સનદ રહૈ ઓર વકત પર કામ આવૈ-

દ૦ લાલતા પ્રસાદ   દ૦ ચિન્હ ભગવંત સિંધ
                                                    ડ

વકલમ ખુદ

દ૦ દેવી વખ્શ   દ૦ હનૂમાન વકલમ ખુદ

વકલમ ખુદ

ગવાહી રામ ઓતાર   ગવાહી રહીમુદ્દીન

લિખા તારીખ ૨૩ દિસમ્બર સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી-

ઝમાનત નામા

મૈં કિ શુબરાતી બેટા લાલ મુહમ્મદ કૌમ નાઊ રહને વાલા મહલ્લા મક્કા કી બાગ શહર લખનઊ કા હૂં—

જો કિ અલી હસન બેટા પૈરૂ રહને વાલા મોઝા માલી તહસીલ વ ઝિલા નવાબગંજ પાસ મહમ્મદ અલી મુહીઉદ્દીન સાહિબ હેડમાસ્ટર ચૌકે કે નૌકર હૈં ઔર મુઝ સે મોલવી સાહિબ ૨૫) રૂપિયા કિ આધે ઉસકે ૧૨॥) રૂપિયા હોતે હૈં ઝમાનત માંગતે હૈં સો મૈં અપની ખુશી વ રાઝી વ ઠીક અકલ વ તનદુરુસ્તી કે વક્ત મેં ઇકરાર કરતા હૂં ઔર લિખે દેતા હૂં કિ જો મુઝ સે નૌકરી કે વક્ત મેં કહા જાવેગા વહી કરતા રહૂંગા ઔર કોઈ ચીઝ ઝબરદસ્તી વ બિના મરઝી કે કભી ન લૂંગા જો બદદિયાનતી યા બેઈમાની સે કુછ લે લૂં તો ઝમાનત કા ઉતના હી રૂપિયા જિતના કિ ઊપર લિખા હૈ મેરી જાયદાદ મનકૂલા ઔર ગૈર મનકૂલા યા મેરે વારિસોં સે વસૂલ કિયા જાવે મુઝ કો યા મેરે વારિસોં ઔર જો મેરી જગહ પર હોંગે ઉનકો કુછ હીલા હવાલા ન હોગા ઇસ વાસ્તે યહ સનદ ઝમાનત કી લિખ દી ઔર રજિસ્ટરી કાયદા કે મુવાફિક કરા દિયા કિ સનદ રહે ઔર વક્ત પર કામ આવે—

૬૦ ચીન્હ શુબરાતી   ગવાહી હાફિઝ ઈદૂ

गवाही सैयद आग़ा अली
बेटा सैयद असग़र अली
रहनेवाला गुसातमनगर
बक़लम ख़ुद

गवाही सैयद अमजद हुसेन
रहनेवाला ताहसीन अली खां की
मसजिद के पिछवाड़े जो चौक
मे मिली हुई है

गवाही अहमद अली
बेटा शुबराती ज़मानत
लिखनेवाले का

लिखा तारीख़ २३ जनवरी सन् १८७६ ईसवी—

ज़मानत नामा

मैं कि हैदर बख़्श बेटा क़ादिर बख़्श क़ौम शेख़ रहने वाला महल्ला मुफ़्तीगंज शहर लखनऊ का हूं— जो कि गुलज़ार अली बेटा हिमायत अली रहने वाला महल्ला मुसाहिब गंज का अपनी जोरू गुमानी बेगम बेटी सैयद मुहम्मद तक़ी के मारने पीटने के वास्ते से अदालत साहिब सिटी मजिस्ट्रेट बहादुर शहर लखनऊ में क़ैद हुआ है और मुझसे उसी अदालत में ज़ामिनी मांगी जाती है सो मैं गुलज़ार अली के काम का ज़ामिन होकर इक़रार करता हूं कि आगे को गुलज़ार अली कभी गुमानी बेगम को नहीं मारे पीटेगा और जो मारेगा तो मैं उसकी जवाबदिही करूंगा—

द० हैदरबख़्श बक़लमख़ुद गवाही फ़क़ीर अहमद ख़ां
गवाही गोपीनाथ गवाही मामन ख़ां

लिखा तारीख़ २४ नवम्बर सन् १८७३ ईसवी—

મહઝ઼રનામા

સવાલ કરતા હૈ ઔર ગવાહી અપને હક઼ મેં ચાહતા હૈ કરીમુદ્દીન બેટા રહીમુદ્દીન શાહજહાંપૂર કા રહને-વાલા મહલ્લા ચૌક બડે કાજ઼િયોં વ મુફ઼્તિયોં ઔર સબ મહલ્લા કે રહનેવાલોં સે ઇસ મુક઼દ્દમા મેં કિ મૌજ઼ા મહમૂદપૂર પરગના ફ઼રીદપૂર જ઼િલા બરેલી બાપદાદે સે મુદ્દઈ ઇક઼રાર કરનેવાલે કી જાગીર મેં મુઆફ઼િક ફ઼રમાનોં ઔર પરવાને નાજ઼િમોં મુલ્ક કે દેહન- ઔર ઇસ વક઼્ત કે હાકિમોં કે જમા કો છોડ સિવાય માલ સરકાર માફ઼ છોડા હુવા હૈ સો અબતક મેરા કબ્જ઼ા ઔર ઇત્તિફાક ઉસ ગાંવ મેં હૈ ઇન દિનોં ખુદા કી મરજ઼ી સે ૧૫ રબી ઉસ્સાની કો લગભગ ૨ બજે રાતકે મેરે મકાન મેં ચોરી હોગઈ ઔર ચોરીકે માલ કે સાથ કાગ઼જ઼ સનદ માફ઼ી ઉસ મૌજ઼ા કા ભી જોકિ ઉસમેં રક્ખા થા ચલા ગયા ઔર ચોરી હો ગયા સો જો સાહિબ યહ હાલ જાનતે હોં ઇસ કાગ઼જ઼ પર અપની ગવાહી ઔર મોહર કરદેં ઔર જો સાહિબ લિખના ન જાનતે હોં વહ અપની તરફ઼ સે ગવાહી કરાદેં કિ ખુદા ઉનકો બદલા નેક દે ઔર સબ લોગોં કે નજ઼દીક ભલા હો-

લિખા તારીખ ૨૫ રમજ઼ાનુલ મુબારક સન ૧૨૬૪ હિજરી-

ગવાહી	ગવાહી	ગવાહી	ગવાહી
મોહર કાજ઼ી	મોહર મુફ઼્તી	કરીમ હુસૈન	નવાબઅલી મુલ-

૧૨૫૨ લાખા ૧૨૩૧

ગવાહી ગવાહી ગવાહી

ગવાહી ગવાહી ગવાહી
અલી બક્ષ સાદુલ્લાખાં ઇનાયતુલ્લાખાં
વજ઼ીરાલમ ખુદ નિઝામદીન
ગવાહી
[illegible] અલી
બેટા અકબર અલી

નસબનામા

બડે ખાનદાનોં [illegible] અચ્છે ભલોં કે લોગોં કો
માલૂમ હો કિ શેખ મુહમ્મદ અકબર બેટે શેખ ગુલામ
મુસ્તફ઼ા બેટા શેખ ગુલામ શેખ [illegible] સિદ્દીકી
કી હૈં બાપ ઔર માં કી તરફ઼ સે નસલ મેં ઠીક હૈ ઔર
બહુત દિનોં સે મૌઝા લોહંગી તહસીલ વ જ઼િલા મુલતા-
પુર મેં રહતે હૈં ઇન દિનોં શેખ મુહમ્મદ અકબર સરકાર
અંગરેજ઼ી કી તરફ઼ સે તહસીલ કસબા પવાંયી જ઼િલા
શાહજહાંપુર મેં પેશકાર હૈં જિસ જગા ચાહેં દરિયાફ઼્ત
કરલેં ઇસ વાસ્તે યહ સનદ નસબનામાકી લિખ દી કિ
સનદ હો–
લિખા ૧૬ રજબ સન ૧૨૮૨ હિજરી

રેહન

ખુદા કી તારીફ઼ કે પીછે અચ્છી નસલ વાલે સાહિબોં
પર ઝાહિર રહે કિ મૈં શેખ ઇનાયત હુસેન બેટા શેખ હૈદર-
હુસેન બેટા શેખ ઝુલફ઼િકાર હુસેન બિહિશ્ત વાસી
રહને વાલે પુરાના મહલ્લા ઇસમાઈલ ગંજ શહર-

लखनऊ आगा कल्ब हुसैन मरहूम के खुदा जाने के बाद उस से मरहूम नकावगंज शाहर लखनऊ में रहता हूं मेरे बाप दादे हमेशा शाही ज़माने में बड़ी बड़ी नोकरीयां पर रहे हैं सो बाप मेरे अमजदअली शाह बिहिश्त वाशी के वक्त में आ दिखावे के दारोग़ा थे और मेरे नाना रहीम बख़्श वेटा फ़कीर बख़्श बिहिश्त वाशी अवतक वाजिद अली शाहबाद शाह जो आजो अबुर्थ में थे उन के जीवखास के दारोग़ा हैं और मैं इन दिनों अंगरेज़ी असबाब की सोदागरी का पेशा करता हूं और एक दुकान मेरी चीनी बाज़ार लखनऊ में है और एक कानपूर से मुक़ाम मछली बाज़ार में है वहां का वहोवस्त में आपही करता हूं और वहां का बंदोवस्त मुआरा जहां चाहें पूछ जांच लें और सलाम—

निकाह नामा या महरनामा

खुदा की तारीफ़ के पीछे ठीक अक़्ल व तनदुरुस्ती के वक़्त मैं अबदुल अज़ीज़ बेटा दुलाही बख़्श रहनेवाला महल्ला चोवदारी का दूकानदार हूं कि मुवाफ़िक़ हुकम खुदा और रसूल खुदा के कहने से ख़ानुम निसां बेटी अली हसन खां को जनाब सैयद मुहम्मद जान साहिब बेटा सैयद मुशताक़ अली साहिब बिहिश्त वाशी की वकालत से और खुदा बख़्श साहिब बेटा क़ादिर बख़्श बिहिश्त

વારી રહનેવાલા ઉસી મહલ્લા કે વ રમજાનખાંસાહિવ
વેટા રજાખાં સાહિવ રહનેવાલા મહલ્લા નગરપિરકો
ગવાહી સે કિ દોનો સાહિવ વડે ઇનસાફ કરને વાલે
ઓર પરહેજગાર હૈં ૧૦૦૦) રુપિયા સિક્કા જિનકા
નિસફ રકમ રાઇજ હૈ મહર કે વદલે અપને નિકાહ મેં
કબૂલ વ મંજૂર કિયા ઇસ વાસતે યહ નિકાહનામા કાજી કે
મુવાફિક લિખ કર રજિસટરી કરા દિયા કિ સનદ રહે ઓર
વક્ત જરૂરત કે કામ આવે—

લિખા ૨૭ શાવાનુલ મુઅજ્જમ સન ૧૨૯૨ હિજરી

૬૦ અવદુલ અજીજ ગવાહી કરીમ ખાં
વકલમ ખુદ
ગવાહી રજવ અલી ગવાહી આગાજાન

વસીયતનામા

યહ દુનિયા મિરાત લોક હૈ એક ન એક દિન સવ કો
છોડના પડેગા ઇસી વાદ્સ સે મૈં અપને સવ હક જો મેરે
વાજિવ વ લાજિમ થે અદા કર દિયે ઓર અવ મેરે
જિમ્મે કોઈ કિસમ કા કરજા યા હિસાવ ઝહૂરા
કા વાકી નહીં રહા હૈ સો મૈં ચાહતા હૂં કિ મેરે પીછે મોજે
હસનપુર વ સફદરગંજ વ મેહદીગંજ વ મુહીઉદદીન પૂર
જો ગોંડા મેં હૈ છોડકર વ સવ મેરા માલ વ અસવાવ વ
વાગોં વ મકાનાત વ નકદ રૂપિયા વ નોટ ઓર દૂસરી જાયદાદ
મનકૂલા વ ગૈરમનકૂલા વ ગાંવ પટેદાર વ પાડા ઓર
માતી વ પટવારી વ વાકરગંજ જો જિલા રાયવરેલી મેં હૈં ઓર

दूसरी जायदाद व हिस्से दहली बैंक व लोहे की सड़क व
कोठी नील जो ज़िला मुरादाबाद में है और कारख़ाना
गुदाम जो कलकत्ता व मठटीपनी दोनों बेटों हामिद अली
ख़ां व महमूद अली ख़ां को बराबर हिस्सा दिया जावे और
मौज़े हसनपूर व सफ़दरगंज वग़ैरः कोअला मदनी सेमई
की सालाना आमदनी मालगुज़ारी का सरकार को
रुपिया देकर और पटवारियों की तनख़्वाह व ख़र्चा
दीहात व नौकरों की तनख़्वाह जो कि तहसील वसूल व
देख भाली व बंदोबस्त गांव के ५००००) रुपिया हैं इनमें से
३६०००) रुपिया सालाना मेरे मक़बरे में ख़र्च किया जावेगा
जिसकी बाबत पहले एक वसीयतनामा तारीख़ २७ जून
सन् १८६६ ईसवी को लिख चुका हूं उसके मुवाफ़िक़ काम
करना होगा बाक़ी १४०००) रुपिया सालाना में एक मदरसा
मेरे नाम से जारी किया जावेगा और उनमें अकसर मुहताजों
और वे वारिस लड़कों की पढ़ाई उस वक़्त के हाकिमों की
मरज़ी से हुआ करेगी सो यह सनद वसीयतनामा की लिख
दी कि सनद रहे और काम आवे—
लिखा २९ तारीख़ अगस्त सन् १८७६ ईसवी

द० ज़ामिन अली ख़ां बक़लम ख़ुद

गवाही बाक़र अली ख़ां गवाही अहमद हुसेन ख़ां
गवाही अमजद अली ख़ां गवाही फ़रखुंद अली
गवाही रहमत अली ख़ां गवाही करीम बख़्श रिसालदार
गवाही बहादुर अली ख़ां बक़लम ख़ुद गवाही रफ़ीउद्दीन

हिबानामा बएवज गांव बदले में बख्शदेने की सनद

मैं कि करामत अली खां बेटा रहमत अली खां। कौम पठान रहनेवाला शहर लखनऊ महल्ला अमीनाबाद का हूं—

जो कि मैंने सलेमपूर व करनपूर व रामनगर व फतहगंज व कठवारा जो तहसील जिला रायबरेली में हमारी जमीदारी मोल लिए हुए हैं और अबतक हमारे कबजा व दखल में बिना किसी के साझे के हैं और कहीं गिरो या बैया किसी तरह की जिम्मादारी जमानत वगैरः में फसे और अटके नहीं हैं हमने अपनी खुशी और तनदुरुस्ती और ठीक अकल के वक्त बिना किसीकी जबरदस्ती बल कि अपनी खुशीसे अपने मानजे शेख आजम अली बेटा शेख जाफर अली को एक अंगूठी के बदले में बख्श दिया — और उसी वक्त शेख आजम अली का कबजा और दखल मालिक का ऐसा बख्शे हुए गांवों पर करादिया इस वास्ते अब हमको और हमारे वारिसों और जो हमारी जगह पर होंगे बख्शी हुई जायदाद पर हक नहीं रहा जो हम या और कोई आदमी दावा करे तो इस सनद की रुहसे बिलकुल झूठा और नाजायज हो इस लिए यह सनद हिबानामा बिल एवज की लिख दिया कि सनद हो और वक्त जरूरत

કે કામ આવે - લિખ્યા તારીખ ૨૫ જુલાઈ સન ૧૮૭૬ ઈસવી

૬૦ કરામત અલીખાં   ગવાહી ખુદાબીરખાં

બકલમ ખુદ

ગવાહી ફેજખાં   ગવાહી શુજાઅત અલીખાં

બેટા કરામત અલીખાં -

હિબાનામા વિલાયતજી

મૈં કિ વેણીનાથ બેટા હેમનાથ બેટા સિદ્ધિનાથ કૌમ ખત્રી રહનેવાલા શહર બનારસ મહલ્લા તિરકન્દા કા હૂં -

જો કિ એક પક્કી હવેલી કીમતી અન્દાજા ૨૫૦૦) રૂપિયા જો મહલ્લા તિરકન્દા મેં મેરે કબજા - ઔર દખલ મેં હૈ બિના કિસી કે સાઝે કે મેરી હૈ ઔર આવગત મેરે કબજા ઔર દખલ મેં હૈ ઉસકી ચારોં હદ્દેં યહ હૈં -

પૂરબી હદ્દ ખુદ્દૂ દરજી કે મકાન કી દીવાર	પશ્ચિમી મુન્શી રામનાથ સાહિબ કી દીવાર ઔર દીવાનખાના
દક્ખિની હદ્દ રાસ્તા	ઉત્તરી હદ્દ ઉસી મકાન કી દીવાર ઔર દરવાજા

અબ ઉસકો તન્દુરુસ્તી ઔર ઠીક અકલ કે વક્ત અપની ખુશી સે બિના કિસી કે સિખાયે વ ઉભારને કે ચારોં હદ્દોં સમેત ઔર સબ હક દાખિલી ઔર ખારજી કે લાલા રામદાસ બેટા કાલીદાસ બેટા નારાયન દાસ

क़ौम कायस्थ इसी महल्ला के रहनेवाले हो कि मेरे बड़े भाई हैं बख़्श दिया और हिबा किया और उस मकान पर लाला रामदास का क़बज़ा मालिक का ऐसा करा दिया और खुद को और मेरे वारिसों और जो कि मेरी ज़ात पर होंगे इस मकान पर कुछ दावा और सरोकार नहीं है और जो कोई वक़्त में और मेरे वारिस या जो मेरी ज़ात पर हों दावा करैं तो उस वक़्त के हाकिम के सामने झूठा और क़ाबिल सुनने के नहीं होगा इसलिये यह सनद हिबानामा की लिख दिया कि सनद रहै और वक़्त पर काम आवे-

द० बैजनाथ १२४७ — गवाही मोहनलाल बेटा बैजनाथ

गवाही रहीम खां रहनेवाला महल्ला लिनकनद्य — गवाही कालीपरसाद बक़लम ख़ुद

गवाही चीनह फ़क़ीरे महल्ला-

दा० न बक़लम कालीपरसाद

लिखा तारीख़ २४ फ़रवरी सन् १८७१ ईसवी-

फ़ारग़ख़ती

मैं कि महबूब अली बेटा मासूम अली रहनेवाला शहर लखनऊ महल्ला मुफ़्तीगंज का हूं—

जो कि मैं २१ जून सन् १८७४ से ३१ अगस्त सन् १८७६ ईसवी तक कुल ८ महीने शेख़ अबदुल करीम साहिब के पास नौकर रहा और कुल अपनी तनख़्वाह शेख़ साहिब

से वसूल पाई अब कोई पैसा कौड़ी बाक़ी नहीं रही। इसलिये यह फ़ारगख़ती को सनद लिख दी कि सनद रहे और ज़रूरत के वक़्त काम आवै।

द० महबूब अली   गवाही सुखदेव परसाद

गवाही रहीम बख़्श

तारीख़ ३ सितम्बर सन् १८७४ ईसवी—

मैं कि फ़लां बेटा   क़ौम

रहने वाला   परगना   ज़िला

का हूं

मैं ने ठीक अक़ल और तन्दुरुस्ती के वक़्त बिना किसी ज़बरदस्ती और सिखाये हुए अपनी ख़ुशी से मौज़ा फ़लां परगना फ़लां मय अमली और दाख़िली खेतों और माल सिवाय समेत और ज़मींदारी की रक़में दस्तूर चौकीदारी और रसूम पटवारी सिवाय घेगाड़ी भूसा व चरी वग़ैरः दोनों फ़सलों की और एक गाड़ी कंडे और ३) भेंट के और ख़ूराक ज़मींदार और नंबरदार की होने के वक़्त और २॥) इनाम दसहरा के दिन हर साल नम्बरदार के सिपाहियों को और ४) भेंट नम्बरदार की और १) सैकड़ा हिसाब कराई मुतसद्दियों के बदले   रुपिया मालिक को ठेके दार पर कि आये उस के   रुपिये हुए वह सन् १२   फ़सली से लेकर सन् १२   फ़सली तक पांच साल के वास्ते बिना किसी

हीला और आफ़त ज़मीनी व आसमानी के जैसे सूखों
का आ पड़ना और बर्फ़ पाला व पत्थर पड़ें और
जो अनाज अस्लता हो जावे और पामाली व घटाना
व बढ़ाना लगान कुछ भी हाकिम का ठीक किया हुआ
और कम करना हुकम सरकार इत्यादि वग़ैरः के ज़मींदार
नम्बरदार दूसी मौज़ा से कटकना लेकर अपने ज़िम्मे
क़बूल किया इक़रार है कि कटकने का रुपिया साल
साल फ़सल फ़सल और क़िस्त क़िस्त मुताबिक़
सरकारी क़िस्तों के अदा करता रहूंगा जिस वक़्त रुपि
या दाख़िल करूंगा उसी वक़्त दाख़िला ले लिया करूंगा
बिना दाख़िला के जो ज़बानी रसूल बतलाऊं झूठ हो
और जो कभी कोई क़िस्त ठीक वक़्त पर अदा न कर
सकूं तो सूद उसका ॥) रुपिया सैकड़ा महीना के हिसाब
से दूंगा और ज़मींदार नम्बरदार को अख़्तियार
है कि जायदाद के बचाव और बाक़ी का रुपिया पहुंचाने
और आगली क़िस्त के पहुंचाने के वास्ते सज़ावल
तहसील और शहना मुक़र्रर करें तनख़्वाह और
उन की ख़ूराक मेरे ज़िम्मे होगी ख़ास तहसील में इनकार न
करूंगा और जो रुपिया मारफ़त सज़ावल तहसील और
शहना व मुक़द्दम और पटवारी उस गांव के आसामी
से वसूल होवे उसमें से पहले नौकरों का महीना और
सूद और पिछिली क़िस्तों का रुपिया निकाल कर के
बाक़ी रुपिया हमारे चुकौता के रुपिये में जमा करें और

आसामियों को अपनी नेकी से खुश और राज़ी रखकर हर साल खेतों के जोतने बोने में बड़ी मेहनत करता रहूंगा और सरकारी क़ानून के ख़िलाफ़ जो कि आज कल जारी है और आगे को जारी होवें कोई काम न करूंगा — और कारिन्दा और चौकीदार और किसान लोगों की मेहनत का हक़ पुराने क़ायदे से या हाकिम के हुक्म के मुवाफ़िक़ देता रहूंगा और जो कोई आदमी बदमाशी करेगा या कोई बदमाश गांव में बसेगा और झगड़ा बखेड़ा फ़साद करे या माल चोरी का या मेड़ तोड़ना या हल चलाना सीर ज़मीन के होगी इत्तिला उसकी थाना या तहसील या हाकिम परगना या जिस जगह मुनासिब होगा करके उन बातों का झगड़ा मिटा दिया करूंगा और जवाब दिही उसकी मेरे ज़िम्मे है गांव के नम्बरदार से कुछ सरोकार न होगा और कुल हुक्म कचहरी कलेक्टरी और फ़ौजदारी और दीवानी और आबपाशी वगैरह की करना मेरे ज़िम्मे है और लगानी ज़मीन को बेलगानी व बेलगानी को लगानी न करूंगा और गांव की निगहबानी व हद्दें व पूरा पेड़ व फ़स्ल नम्बरदार की व गांवों के और आपसे आप जमे हुए पेड़ और रफ़ा बंजर व आबादी व खेत और मेंड़ व रास्ता की करूंगा नम्बरदार की बिना मरज़ी एक डाल भी किसी तरह के पेड़ की न कटने दूंगा और मैं भी न काटूंगा और जो कोई आदमी बिना मरज़ी काटेगा उसका जैसा चाहिये बंदोबस्त करके

उसकी इजाज़त बिला गांव के ज़मींदार को न दूंगा और
हरगिज़ अदा न करूंगा और जिस वक़्त कि इस गांव
की ज़मीन सड़क और पड़ाव व गैर: में आवेगी और
कोई रुपया देगा तो उसके बदले का ज़मींदार मालिक है
वक़्त रुपिया लगाने मियाद कटकना न करने मुद्दई
इक़रार करने वाले का है जियादा न होगा और जो साल
तमाम में कटकने का रुपिया बाक़ी रहे तो नम्बरदार
को इख़्तियार है कि कटकना रहकर के अपना बाक़ी
रुपिया जायदाद मनकूला और गैर मनकूला मेरे से
वसूल कर लेवे मुद्दई को कुछ हीला मियाद कटकने का
न होगा और जिस वक़्त कि इस गांव की ज़मीन सींची
जावेगी नरख के मुवाफ़िक़ सिंचाई का रुपिया किसानों
से वसूल करके नम्बरदार के पास दाख़िल करूंगा—
और कटकने की मियाद के पीछे मुद्दई को दावा सीर की
ज़मीन का या कोई नई बात जो अपने कटकने के वक़्त
में करूंगा न होगा और कटकने के वक़्त में जो ज़मीन
किसानों से जो मरे और भाग जाने वालों की होगी
किसी दूसरे आसामी को जोतने बोने को दूंगा फिर
पीछे ज़मींदार और नम्बरदार को इख़्तियार है जिस
को चाहे देवें और ज़मीन जो कि जमई है उसको बढ़ाई
और घटाई को जमई न करूंगा उसको उसी तरह रखूंगा
और जहां तक हो सकेगा आसामियों से मिल कर
पैदावार जमा बढ़ाऊंगा जो बढ़ाऊंगा तो पटवारी के

કાગળ મેં લિખા હૂઆ સબ વાતોં પર જો કિ ઊપર લિખી
હૈં ઇક઼રાર લાકર ઇક઼બૂલિયત લિખ દી કિ સનદ
રહે ઔર જ઼રૂરત કે વક઼્ત કામ આવે-
તારીખ ૨૧ નવમ્બર સન્ ૧૮૦૬ ઈસવી-

પટ્ટા ફ઼સ્લોં કે નામ બેટા
કૌમ રહને વાલા-

જો કિ તુમને અપની ખુશી સે દરખ્વાસ્ત પટ્ટે કા ના
મૌજ઼ા પરગના ગાંવ કે
સમેત ફ઼સ્લી ઔર હાસિલી માલ મહિત સિવાય જુમાત
જ઼મીદારી-દસોંધ-ચૌકીદારી-ઔર રસૂમ પટવારી સિવા
દો ગાડ઼ી ભૂસા ઔર ચરી દોનોં ફ઼સલ-એક ગાડ઼ી કંડા
ઔર દોના કે વક઼્ત નજ઼રાના ઔર જ઼મીદાર કી ખુરાક
વ ભેંટ કે બદલે ૩) રૂપિયા ઔર ૩॥) દસહરા કે દિન
હરસાલ નજ઼રાના કે સિપાહિયોં કો ઇનામ ઔર ૨)
રૂપિયા ભેંટ નજ઼રાના વ ।) આના સૈકડ઼ા હિસાબાના
મુતસદ્દિયાન બદલે રૂપિયા સિક્કા ચેહરે
દાર કિ આયે ઇસકે રૂપિયા હુએ પાંચ સાલ કે
વાસ્તે સન્ ૧૨ ફ઼સલી સે લેકર સન્ ૧૨ ફ઼સલી
તક બિના દીલા જ઼મીની ઔર આસમાની આફ઼તોં કે
જૈસે સૂખોં કા આના ઔર પાલા વ તથયોં કા પડ઼ના
જ઼નાજ઼ કા સસ્તા હો જાના વ બર વાહી વ ઘટાના ઔર બઢ઼ાના
લગાન હુકમી હાકિમ મુક઼ર્રર કરને વાલે કા ઔર

કમ ખેતી વ કમ તરદ્દુદ વ બૂઢ઼ા આને રઈઅતઃ કો પાસ હમ
ઝ઼મીંદાર નમ્બરદાર હમ સોણા કે ઘી રહ.કબૂલ ઔર
મંજૂર હુઈ તુમકો ચાહિયે કિ દિલ જમઈ સહિત અપના
રૂપયા ઔર દખલ કરકે કટક ને કે રૂપિયે સાલ સાલ
ફ઼સલ ફ઼સલ કિસ્ત કિસ્ત સરકારી કિસતોં કી તારીખ઼
અદા કરતે રહો જમા સે જ઼્યાદઃ કભી ન દેના હોગા ઔર
જો રૂપિયા દાખ઼િલ કિયા કરો ઉસકા દાખ઼િલા લે લિયા
કરો બે બિના દાખ઼િલા કે જ઼બાની વસૂલ પાના ભોગે
તો નહીં સુના જાયગા ઔર જો કોઈ કિસ્ત ઠીક વક઼્ત પર
ન અદા કર સકોગે તો ઉસકા ૨) રૂપિયા મહીના સૈકડ઼ા
બ્યાજ દેના હોગા ઔર હમ જમીંદાર વ નમ્બરદાર કો
ઇખ઼્તિયાર હૈ કિ જાયદાદ બચાને ઔર બાકી કા રૂપિયા
વસૂલ કરને ઔર દાખ઼િલ કરને કે વાસ્તે આગે કી કિસ્ત કે
મઆમ્લ તહસીલ ઔર શહના મુક઼ર્રર કરેં તનખ્વાહ
ઔર ખ઼ુરાક તુમ્હારે જ઼િમ્મે હોગી ખ઼ાસ તહસીલ સે ઉજ઼્ર
ન કર સકોગે જો રૂપિયા આ પડ઼ેગા મઆમ્લ તહસીલ
ઔર શહના વ મુક઼દ્દમ ગાંવ વ પટવારી કે કિસાનો
સે વસૂલ હોગા ઉસમેં સે પહિલે નૌકરોં કી તનખ્વાહ
ઔર પિછલી કિસ્ત કા સૂદ નિકાલ કરકે બાકી રૂપિયા
તુમ્હારી જમા મેં જમા કિયા જાયગા ઔર નિયાર કો
અપની ભલી ભાંતિ સે ખુશ રખકર સાલ સાલ ખેતી કી
બઢ઼તી અચ્છી તરહ સે બીજ રઈઅતઃ કી બુવાઈ મેં બડ઼ી
મેહનત કરતે રહો ઔર સરકાર કે કાનૂન કે ખ઼િલાફ઼ જો

आग कल जानी है। या आगे को जानी होवैं कोई काम न
करो और काटकार व चौकीदार और दूसरे गांव के
किसानों की मेहनत का हक़ पुराने क़ायदा के मुवाफ़िक़
या जैसा हाकिम हुकुम देवैं नहो और जो बदमाश कोई
गांव में आबाद होगा या कोई बदमाशी करेगा या
फ़साद करने वाले व डाका करने वाले आपुस में लड़े
व माल चोरी व मेड़ गिराना व हल चलाना सीर व
गासता के होगा उसकी इत्तिला थाना या तहसील या
हाकिम परगना या जिस जगह मुनासिब हो करके उस
हुवाई को रफ़ा करा देना होगा और उसकी जवाबदिही
तुम्हारे ज़िम्मे होगी हम ज़मींदारों में कुछ वासता
न होगा और कुल हुकुम कचेहरी कलेकटरी और
फ़ौजदारी और दीवानी और आबकारी वगैरःका
जो करना तुम्हारे ज़िम्मे होगा और लगानी ज़मीन
को बेलगानी और बेलगानी को लगानी न करो और
गांव की सरवरदानी व हदी व हद्दें और बिरवा व
फल व फलदार बागों व बिरवाजो आपही आप
हुवे हों व आफ़त वंजर व आवादी और खेत व मेड़
वग़ैरः की क़रारे रहो बिना हम नम्बरदार के हुकुम
एक डाल किसी तरह की न काटने दो और न आप
काटो और जो कोई आदमी बिना हुकुम काटेगा।
उसका बंदोबस्त जैसा चाहिये करके इत्तिला उस
की हम गांव के ज़मींदार को करोगे और हरजा अदा

करोगे व जिस क़दर ज़मीन इस गांव की पहाड़ या सड़क वग़ैरः में आवैगी या कंकर खुदैगा उसके बदला के मालिक हम ज़मींदार हैं व क़दर रुपिया आगा मियाद कटकना तक तुम्हारा हक़ होगा और जो साल तमाम में रुपिया कटकना का बाक़ी रह जावैगा तो हम को इख़्तियार है कि कटकना रद करके बाक़ी अपना रुपिया तुम्हारी मनक़ूला व ग़ैर मनक़ूला जायदाद से अदालत में नालिश करके वसूल करलेवें तुम को कुछ उज़र मियाद कटकना का न होगा और जिस वक़्त इस गांव की ज़मीन सींची जावे रुपिया पानी की सिंचाई का जैसा रवाज है किसानों से तहसील करके हमारे पास दाख़िल करो और नहीं तो तुम्हारे दाख़िल किये हुवे रुपिया में से मुजरा लिया जायगा - और कटकने की मियाद के पीछे तुम को दावा ज़मीन सीर या कोई नया काम जो अपने कटकने के वक़्त में करोगे न होगा और कटकना के वक़्त में जो ज़मीन कि असामियों मर हुवे और भाग जानेवालों की होगी अपने कटकने की मियाद तक दूसरे आसामी को देसकोगे फिर हम ज़मींदार नम्बरदार को इख़्तियार है जिसको चाहें देवें और जमई ज़मीन की घटाई और बढ़ाई की जमई न करोगे लेकिन उसको वैसा ही रक्खोगे और जहांतक होसकेगा आसामियों से खिलकर धर की तरह जमा न बढ़ाओगे जो इज़ाफ़ा करोगे तो पटवारी के काग़ज़ में लिखा दिया

जो सो यह पट्टा लिख दिया कि सनद रहे—
तारीख़ २१ नवम्बर सन् १८७६ ईसवी—

आ़क़नामा

मैं कि बदलू बेहना बेटा छेदी बेहना रहनेवाला मौज़ा लोंहगी तहसील व ज़िला सुलतानपुर का हूं— जो कि मैं अपने बेटे कल्लू से उसके कुराह चलने व बेजा कामों से नाराज़ और बहुत नाखुश हूं सो कल्लू को मैं ने अपनी फ़रज़ंदी से आ़क़ किया मेरे पीछे उसको हिस्सा नहीं पहुंचता है इस वास्ते यह सनद आ़क़नामा की लिख दी कि सनद रहे और आगे को काम आवे—

तारीख़ २७ नवम्बर सन् १८६७ ईसवी—

द० बदलू बेहना　　　　गवाही मंगुवा बेहना

गवाही शेख़ मुक़ीम　　　　गवाही फ़क़ीरे भिश्ती

जुलाहा

अमानतनामा

इसके लिखने की यह वजह है कि शेख़ सआ़दत अ़ली बेटा शेख़ शहामत अ़ली रहनेवाला मुहल्ला अबूतुराबखां का कटरा शहर लखनऊ ने ५०००) रुपिया मेरे पास अमानत की तरह पर रक्खे हैं जिस वक़्त शेख़ सआ़दत अ़ली साहिब चाहें मेरे पास से ले जावें और जो वह मर जावें तो उनके पीछे जो

कोई शरा शरीफ़ के क़ायदा से उनकी जायदाद - और मालिक उनके लड़का का होगा चनोकि वा मुख्तार विना होता और विना लड़का उसी वर्सा मांगते ही हैं दूसरा सो यह सनद अमानत नामा की लिखदी कि सनद रहे और ज़रूरत के वक़्त काम आवे-

लिखा तारीख़ २४ मई सन् १८७० ईसवी-

द० हीरालाल महाजन	गवाही फ़क़ीर चंद साहूकार
रहनेवाला मुहल्ला चौक	उसी मुहल्ला के रहनेवाले
गवाही हरप्रसाद गुमाश्ता	गवाही अछिमन मशदि
हीरालाल साहिब	सरिश्तादार दफ़्तर डिप्टी कमिश्नरी

इसतिफ़ता या विवसथा

क्या कहते हैं उलमाए दीन और बड़े मुफ़्ती दीन शरा के इस मुक़द्दमा में-

कि एक औरत और उसकी लड़की दोनों ने दूध पिलाना इख़्तियार किया माने एक लड़के अमरू को दूध पिलाया और बेटी ने एक लड़की हिन्दा को तो अमरू का विवाह हिन्दा के साथ शरा से दुरुस्त है या नहीं-

रेवान

इस मुक़द्दमा में उलमाए दीन क्या कहते हैं कि शरा या कोई और हिस्सा आदमी मुर्दा का या अमल किया गया या और किसी जानवर का ख्याल

હુન્ના ચાહિયે જો નમાલૂમ જાનાયા કી ઉસ વક્ત વહના
દુરુસ્ત હૈ યા નહીં-

તલાક઼ નામા

ઇસકે લિખને કા યિહ બાઇસ હૈ કિ જોકિ અશરફ-ઉન્નિસા બેગમ ઈ બનત સે મુવાફ઼િક઼ શરા શરીફ઼ કે મેરે નિકાહ મેં હૈ આજ કલ મૈં ને અપની ખ઼ુશી સે ઉસ કો તલાક઼ દી ઔર તલાક઼ દેના ઉસ કે હક઼ મેં કહ-દિયા ઔર ઇક઼રાર કિ મહર શરઈ થા અશરફુલ-નિસા બેગમ કે હવાલે કર દિયા ઔર પીછે હોજાને ઈ મહીને કે ઉસ કો ઇખ઼્તિયાર હૈ કિ જહાં ચાહે યા નકરે મુઝ સે કોઈ ઇલાક઼ા ઉસ સે રાબતા ઔર નાતે કી નહીં હૈ સો યિહ સનદ તલાક઼ નામા કી લિખ દી કિ સનદ રહે ઔર વક઼્તે ઝરૂરત કામ આવે-

તારીખ઼ ૨૫ સફ઼ર સન્ ૧૨૭૭ હિજરી
દ૦ શરફુદ્દીન ખ઼ાં બેટા કમરુદ્દીન ખ઼ાં
રહને વાલા મોજ઼ા ... તહસીલ ...
જ઼િલા બરેલી
ગવાહ શુદ નાસિર ખ઼ાં   ગવાહ શુદ હૈદર ખ઼ાં વલદ ...

તલાક઼ નામા

મૈં કિ કરીમ ખ઼ાં બેટા રહીમ ખ઼ાં ક઼ૌમ પઠાન રહને-વાલા મહલ્લા સરાય માલી ખ઼ાં કા હૂં-
જોકિ ઝુલૈખ઼ા બેટી મુહમ્મદ મુકીમ કી બ...

रूपै मैंने साथ विवाही गई थी विना किसी की दबाव दस्ती व सिखलावे रुपै ठीक अक़्ल व तनदुरुस्ती के हालत अब मैंने उसको अपनी ख़ुशी से तलाक़ दिया और जिसका महर था वह मैंने हुस्नी अली मुहम्मद व करीमबख़्श गवाहों के मुक़ाबिले में अदा करने के हवाले किया गया सो मुतल्लक़ा को इख़्तियार है कि जिसके साथ चाहे अपना निकाह करले मैं मुद्दई को मुतल्लक़ा से कुछ सरोकार नहीं है इसवास्ते यह सनद तलाक़नामा की लिख दी कि सनद रहै और वक़्त ज़रूरत के काम आवै –

लिखा तारीख़ २७ फ़ीरोज़ह सन् १२८० हिजरी

द० १२८९   गवाही शेख़ अली

करीमख़ां

गवाही अली मुहम्मद   गवाही करीमबख़्श

इति

कचहरी के काग़ज़ात

दिकलचिपका है   अर्ज़ी दावा

मुहम्मद अबदुल्ला खां बेटा मुहम्मद अमीर अली-खां क़ौम पठान पेशः नौकरी रहनेवाला महल्ला मुफ़्ती-गंज शहर लखनऊ का हूं —   मुद्दई

बनाम

देवसिंह बेटा गणपत सिंह क़ौम अहीर काश्तकार रहनेवाला महल्ला सलामी गढ़ी क़सबा काकोरी

मुद्दईयान ने लिखा कि—

मुद्दई अलैह

इस्मदियान मय पेशा ९६ सन् १९१६ की बाकी—

दाखिल

हिसाब थाने १२॥ बाकी आसाम सन् १२८१ फसली

आसामी महीना २२ अगस्त ९६ पुर जो कि फसल की आसामी मे

है निसबते बाकी है दूसरा हुक्म है कि मुद्दई अलैह ने ११ २२

माह रहते सो हाजिरी की तरह सो मुद्दई से आया

मौजा औरा उसने से १२॥ नकद लिया और बाकी नहीं

देता है यह हुक्म जिस का दावा किया गया है सन् १२८१

फसली तथा सन् १९७४ दूसरी जो मुद्दई आलम ने

देना आदि था और रुपी गवाही पैरवी की है उसके—

साथ हूं कि दावा किया गया हुक्म आसामी के फसली

समेत हिसाब था

नम्बर	नाम मौजा	तारीख पहली	तारीख आखरी
९६७२	मलकपुरा	१२	२१)
			१२॥ वसूल
			१२॥ बाकी

मैं मुद्दई कि नाम मेरा कुल आसामी मैं लिखा है पढ़ करके

करता हूं कि मेरी समझ बूझ में जो कुछ इसमें लिखा है

ठीक और दुरुस्त है—

द० महम्मद अब्दुल्लाह खां

वकलम खुद

[illegible]

सन्नत कृपणार्थ मार्गशिर वदी ५ -
अरदीफ़ातः

आपकी हाला लगाम

इ.खान रु. हिजरी ... सन् १२६६ हिजरी -
रिकार्ड (३) जानिब कार्डे

जोमी सिंघ वैद्य मज्ञानी सिंघ कौम ठाकुर गरहने [illegible]
मदीपान मौफ़ा कस्बी पसरूख परगाना निपनोम
गहसील [illegible] लाजम के -   मुहर्रम

[illegible]

मंगल सिंघ वेद्य . भगतसिंघ कौम ठाकुर गरहने [illegible]
का मुक़ाम [illegible] मुहर [illegible] -
हाशा
हिन्दुपाने रु बाकी [illegible] सन् १२६७ [illegible]
[illegible] २४ [illegible] जोकि [illegible]
मे है [illegible] किया मुहर्रम की ७१.१५ मे

મુદ્દઆઅલૈહ જોતે હૈ કિ જિસકી મિયાદ આખિર મહીના નવમ્બર સન્ ૧૮૭૧ ઈસવી કો હોગઈ ઔર દિહ કૃપિયા મુદ્દઆઅલૈહ કો તમી દેના થા ઔર મુદ્દઆઅલૈહ ને ગફ઼ાણા કરને સે અબ તક નહીં દિયા સો વહીનાગ આખિર મહીના નવમ્બર સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી દાવા કરને કી હૈ ઉમેદવાર હૂં કિ તહકીકાત કે પીછે દાવા દિલાયા કૃપિયા અદાલત કે ખરચા સમેત દિલા પાઊં—

નમ્બર	નામખેત	તાદાદ ઝમીન	તાદાદ લગાન
૩૩ દર	કલુરા	૬૨૭	૫)
			+ વસૂલ
			૫) બાકી

મૈં મુદ્દઈ કિ નામ મેરા ઊપર અરજ઼ી દાવા મેં લિખા હૈ ઇકરાર કરતા હૂં કિ જહાં તક મેરી જાન બૂઝ હૈ જો કુછ ઊપર અરજ઼ી દાવા મેં લિખા હૈ ઠીક ઔર દુરુસ્ત હૈ—

૭ ૬૦ નિશાની ઔસેરી સિંઘ

મેગણી ગાવાહીસિંહ ક્રીમ

ઠાકુર નહેવાલા હાફુદીન મહજીવાલા

મઠ ગીર ખૂષિતજ મસૂલીવાલા

ઠે ગીસ મસાણિતલા બ્રહ્મ કો ગાલીશ

ર ઠગનગઢી મખ્ખતજ કે ગી

ઠેખમ ગાઠમાદ ઘટનાખ્ખા ઠી

અર્જી દાવા દીવાની

ટિકટ ॥)

વખતાવર વેટા મહાવીર કૌમ બિરહમન પેશઃ કાશ્તકારી રહનેવાલા કલ્લી પચ્છિમ પરગના બિજનૌર તહસીલ વ ઝિલા લખનઊ—

મુદ્દઈ

બનામ

મલ્હૂ વેટા મોહના કૌમ લોધા પેશઃ મજદૂરી રહનેવાલા ઉસી ગાંવ કા—

મુદ્દાઅલેહ

દાવા

દિલાપાને ૨૦) રૂપિયા બાબત નુકસાન ખપેડ઼ આંવકે જો મૌજા કલ્લી પચ્છિમ પરગના બિજનૌર મેં મુદ્દઈ કે લગાએ હુએ થે જિસકે ગવાહ ભી હૈં જિસકા બિવરા યિહ હૈ કિ તારીખ ૨૩ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી કો મુદ્દઆઅલેહ ને અદાવત કી રાહ સે ખપેડ઼ આંવ મુદ્દઈ કે લગાએ હુએ અપને જાનવરોં સે ચરવા કર ઔર ખુદ તોડ઼ કર ફેંક દિયા કિ જિસસે મુદ્દઈ જો નુકસાન કા દાવા કરતા હૈ મુદ્દઆઅલેહ કે ઝિમ્મે હુઆ ઔર માલૂમ હો કિ મુદ્દઆ અલેહ પર ૩) જુરમાના થાના મોહનલાલ ગંજ સે હો ચુકા હૈ સો વહી તારીખ ૨૩ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી દાવા કરને કી બાબત પાઈ—ઉમેદ-વાર હૂં કિ તહકીકાત કે પીછે દાવા કિએ ગએ રૂપિયા કી

ડિગરી આદાલત કે ખરચા સમેત મુદ્દઈ કેહક મેં બનામ
મુદ્દઆ અલૈહ જારી ફરમાઈ જાવે-

બાબત નુકસાન પેડ આંબ

+ રસૂલ

૨૭) બાકી

મેં મુદ્દઈ કિ નામ મેરા દુસ આરજી મેં લિખ્યા હૈ દુસબાત
કા દકરાર કરતા હૂં કિ બયાન દુસ આરજી કા ઝહાં તક
કિ મુઝ કો ઇલમ વ યકીન હૈ સહી હૈ—

૬ ૯૦ નિશાની દસ્તખત મુદ્દઈ

અંગરેજી દસ્તખત મુદ્દઈ કેહક
બાલા મૌઝા ફલની પરગના
બિજ અંગરેજી મીન ગુઝીલા બખત
તારીખ ૨૭ માહ જૂન સન ૧૯૦૮ ઈ૦

વકાલતમ શિવ નરાયન આરજી નવીસ

આરજી દાવા દીવાની

ઠાકુર બલદેવ સિંહ બેટા મારુ સિંહ કોમ પવાંર પેશા
જમીંદારી રહનેવાલા મૌઝા જૈસાનપુર પરગના મછરેટા
તહસીલ બાડી ઝિલા સીતાપુર

મુદ્દઈ

બનામ

સિતાલા બેટા રાજિસા મહાવીર સિંહ કોમ પવાંર રહનેવાલા

मौज़ा लालपुर परगना महोना तहसील मलिहाबाद
ज़िला लखनऊ मुद्दआलेहा

दावा

दख़ल पाने २६ किते खेत जिनके नम्बर नीचे लिखे हैं जो मौज़ा लालपुर में हैं और २०॥) सूद रिहन नामा रजिस्टरी किया हुआ १५ अगस्त सन् १८७२ ईस्वी कि जिसका विवरा यह है ७५) कि महावीर सिंह मुद्दआलेहा के बाप ने ऊपर लिखे हुवे किते को गिरवी के बदले ७५) रूपै ४) सैकड़ा माहवारी तारीख़ १५ अगस्त सन् १८७२ ईस्वी पास मुद्दई के गिरवी करके हवाले किया कि सूद साल साल का अदा करेंगे और असल रुपिया आख़िर जेठ सन् १२८२ फ़सली तथा ३१ मई सन् १८७५ ईस्वी अदा करेंगे और जो वादा पूरा न हुआ तो महाजन को खेतों पर दख़ल होगी सो सूद के रुपिया में से ३) रुपिया अदा किया बाक़ी असल और सूद का रुपिया जिसका दावा किया गया है नहीं अदा किया है और वादा की मियाद हो गई सो अब मुद्दई उम्मेदवार है कि रिहन नामा की शरायत के मुवाफ़िक़ खेत के किते पर दख़ल दिलाया जावै और २०॥) सूद की डिगरी मुद्दई को मिलै—

असल जिनके बदले दख़ल	सूद
चाहिये ७५)	२३॥)
किते का विवरा	३) वसूल
	२०॥) बाक़ी

रकितों का विवरण

नम्बर खेत	नाम खेत	बीघा जमीन
१०	कलनरा	ऽ१५
१२	रेतन	ऽ१२
२१	मध्या	३॥
६६	पीनहा	३॥
१०७	"	३॥८
१११	—हाटाली	३॥६
२६	मध्या	३॥४
४८	नेकुरा	३॥७
४६	खकुमिरा	३।१
११६	—नहाटाली	५॥५
१५६	महा	३॥७
१७६	जोन	ऽ४
मिनजुमला १७२	सुबना	३॥५
		२०७ऽ।

मैं मुहद्दई इकरार इस बात का करता हूं कि कहना मेरा ठीक है —

द० बलदेवसिंघ

बलदेवसिंघ मुहद्दई
गवाही ...

अर्जीदावा लगान

मुसाहिब अली जमींदार व नम्बरदार मौज़ा बिजनौर
खास तहसील ज़िला लखनऊ

मुद्दई

बनाम

जियालाल बेटा छेदी क़ौम अहीर रहने वाला ग्राम नगर मज़रा बिजनौर व काश्तकार मुद्दअलेह

दावा

दिलापाने १७) बाबत बटाई क़ीमत नाज गेहूं और सरसों लगभग २७) मन कुल पैदावार ४८) मन में से फ़सल रबी सन १२८३ फ़सली बाबत ज़मीन ५२ नम्बरी १३१८ जोकि बिजनौर में है और उसके ग्राम ही में है इस तरह पर कि मुद्दअलेह ने ऊपर लिखी हुई ज़मीन तीन मुद्दई कि बटाई पर काश्त की है और कल तारीख २४ मार्च सन १८७६ ईसवी को मुद्दअलेह गेहूं और सरसों पैदावार रबी सन १२८३ फ़सली ज़मीन की काटकर सब आप उठा ले गया मुद्दई को बटाई में से एक दाना नहीं दिया सो वही तारीख २४ मार्च सन १८७६ ईसवी दावा की करार पाई—

नम्बर	नाम खेत	ज़मीन	लगान	नाज कच्ची तौल से	
१३१८	मटियार	५२	बटाई		४८)
				गेहूं	सरसों
				४७)	१७) मन

હિસ્સા હિસ્સા મુદ્દઈ અલાલોદીહ

વટાઈ ૨૪ મન

બાકી

૨૪) ગેહૂં સરસોં ૨૪ મન કીમતી

મુસલ્લ લગાન ૨૪)

મૈં મુદ્દઈ કિ નામ મેરા ઇસ અરજીમેં લિખા હૈ ઇકરાર ઇસ બાત કા કરતા હૂં કિ બયાન ઇસ અરજી દાવા કા સહી હૈ કિ મુદ્દ કો ઇલમ ઔર યકીન હૈ ઠીક હૈ—

૬૦ રમઝાન અલી
વકીલ મુદ્દઈ

અરજી ફિદવી મુસાહિબ અલી
ગુજરી ફીદાવા બીવ દાવા કમવા વિણનોર
પ્રીહાલત હસી અવૃિલા લખનઝ મુદ્દઈ
તારીખ ૨૦ માર્ચ સન ૧૮૯૭ ઈસવી

અરજી દાવા લગાન

મરે ફનદ હુસેન વેટા સૈયદ ખાહિમ હુસેન રહને વાલા વિણનોર નમવરદાર ગિરો રખનેવાલા ઙડિકગીદાર હિસ્સા ૧) તાલિબ હુસેન વાવત મૌઝા અહમદપૂરપગાન વિણનોર તહસીલ લખનઊ મુદ્દઈ

વનામ

અલી હસન વેટા ઇમદાદ હુસેન નમ્બરદાર વકાશતકાર

ज़मीन मौज़ा अहमदपुर परगना व तहसील ज़िला लखनऊ— मुद्दआ अलैह

दावा

दिलापाने २९।) बाक़ी लगान ज़मीन ३।१९ बिसी मौज़ा में जिसके नम्बर नीचे लिखे हैं बाबत साल तमाम सन् १३०३ फ़सली मेरा हक़ और डिक्री अदालत दीवानी मुवाफ़िक़ मंशाए ज़िम्न २ दफ़ा ८३ ऐक्ट लगान सन् १८६८ ईसवी—

दोनों तरफ़ों में बटवारा होगया है और मुद्दई तहसील का सामी वारगीरी हिस्सा की आपका ता है वह ज़मीन काश्त मुद्दआ अलैह की है लगान मुद्दआ अलैह के ज़िम्मे देना वाजिब है मगर वह मांगने और तक़ाज़ा करने पर वादा होने पर भी एक महीना आगे क़िस्त सरकारी से नहीं देता है सो उम्मेदवार हूं कि पीछे तहक़ीक़ात ज़रूरी के डिक्री दावा कि रुपये की मुद्दई के हक़ में बनाम मुद्दआ अलैह ख़र्चा समेत दी जावे तारीख़ दावा करने की १ अप्रैल सन् १८७६ ईसवी एक महीना आगे क़िस्त सरकारी से—होवे

नम्बर	नामखेत	तादाद ज़मीन	तादाद वसूल	बाक़ी
२७७	तराई	३।१	लगान +	२९=)
२८५	रेहन	३।१	ही)	
२९८	दूलाराम	३।३	ई=)	

जु[illegible]

દસ દાવા કા વદીન મેરી સમઝ બૂઝ મેં ઠીક ઔર દુરુસ્ત હૈ
દ૦ સૈયદ ફરઝંદ હુસેન વકીલ
દ૦ ફરઝંદ હુસેન નમ્બરદાર
મૌજા અહમદપૂર બકલમ ખુદ

ગવાહશુદ દ૦ ફરઝંદ હુસેન નમ્બરદાર
મૌજા [illegible] ૨૯ [illegible] કરતા હૂ ૨૯।૨૭
મૌજૂદ [illegible]
[illegible] ૨૭ [illegible]
[illegible] દ૦ [illegible] ૨૭ [illegible]

અરજી દાવા ફૌજદારી

સપની ઔરત સાકૂ પાસી રહનેવાલી મઝારાનપૂર
પરગના નિગોહાં તહસીલ મોહનલાલ ગંજ મુદ્દઇયા—

બનામ

શિવદીન ચૌકીદાર મઝારાનપૂર પરગના નિગોહાં તહસીલ
મોહનલાલ ગંજ મુદ્દઆલૈહ—
મુકદ્દમા મારપીટ હલકી મુતાબિક દફા ૩૨૩
તાજીરાત હિંદ—
ગરીબપરવર સલામત જનાબ આલી

जो पूजा देवस्थान मौज़ा भगवानपुर में चढ़ता है वह
सदा गोइति लेता है उगहनी मेरे ख़सम के नाम थी सो
महीना माघ सम्वत १९३१ में जिस को महीना भर हो गा
उसी पूजा के उगहने के दिन और सूने गेहूं कच्ची तौल
आध पाव देवस्थान से मुद्दैया उठाती थी उसी पर मु-
द्दआअलैह ने ज़मीन में गिराकर लात और घूंसा
से मार पीट किया और सैकड़ों गाली दीं जिसकी रपोर्ट
थाना मोहन लाल गंज में लिख्या चुकी हूं और सब गांव
के रहनेवाले गवाह हैं सो उम्मेदवार हूं कि पीछे दरियाफ़्त
तहक़ीक़ात गवाही गवाहों के मुद्दआअलैह को सज़ा
दी जावे—

अरज़ी फ़िदविया सखनी जोरू
साधू पासी गोइंति रहनेवाली
भगवानपुर ताल्लुक़ा रहीमनगर की
सन् १८७४ ई० मुवर्रख़ी
निशानी सखनी

अरज़ी दावा फ़ौजदारी

ख़ुदाबख़्श वल्द ग़ुलाम-अब्बास क़ौम शेख़ पेशा: नौकरी रहनेवाला महल्ला अशरफ़ाबाद शहर लखनऊ — मुद्दई

बनाम

नं० १ — लालता परसाद वल्द ठाकुर परसाद रहनेवाला

લછમનકો મુદ્દઈઆલ્લેહ નમ્બર ૨ ઔર ભગવંતસિંઘ બેટા
શિવદીન સિંઘ રહને વાલા ગામ દાસપૂર નમ્બર ૩ હૈ ઔર
બખ્ખશ બેટા નામાલૂમ રહનેવાલા પિપરમનમુદ્દઈઆલ્લેહ
નમ્બર ૪ ઔર હનૂમાન બેટા શિવ બખ્શ રહનેવાલા મોણ
નિગોહાં મુદ્દઈઆલ્લેહ નમ્બર ૫ મુદ્દઈઆલ્લેહુમ
જુર્મ મુંદર્જે દફા ૩૨૪
તાજી રાત હિંદ
ગૌરીબપરવાર સલામત ઔર ૮ સિતમ્બર
સન હાલ વક્ત ૭ બજે દિન કો મુદ્દઈઆલ્લેહુમ કપર
લિયે હુએ લાઠી બાંધે હુએ મોણા ગામદાસપૂર મેં થાના પર
જહાં મુદ્દઈ મુહમ્મદ હુસૈન અલી હિસસાદાર (॥=) કી
તરફ સે રહતા થા આએ ઔર નબી બખ્શ ને મુદ્દઆલ્લેહ
નમ્બર ૨ ને હાથ મુદ્દઈ કા ખીંચ કર ઉપર કે બાહર
ડાલ દિયા ઔર લાલતા પરસાદ મુદ્દઈઆલ્લેહ નમ્બર
૧ ને ગોલ્લસલફસાદી ઔર ઇસ લડાઈ કી ગઈ હૈ એક
લટ્ઠ મુદ્દઈ કો સિર પર ઇસ જોર સે મારા કિ સિર ફટ ગયા
ઔર હડ્ડી સિર કી ટૂટ ગઈ ઔર ભગવંતસિંઘ ને એક
લાઠી કાંધે પર મારી કિ ઉસ કો મેંહદી હુસૈન મૈંને લડ઼કે ને
રોકા કિ ભગવંત સિંઘ ને ઉસ કો ઉઠા ઉઠા કર દબોચા ઔર
ગલા ઐસા દબાયા કિ કરીબ થા કિ આંખેં નિકલ પડ઼ેં ઔર
લાલતા પરસાદ ઔર નબી બખ્શ ઔર હનૂમાન પરસાદ
મુદ્દઈઆલ્લેહુમ મુદ્દઈ કો લાઠિયોં સે બરાબર મારતે રહે
કિ ઇસી બીચ મેં મદદ આલી ઔર મુવાફિક આલી ને

आकर मेंहदी हुसेन को आवंत सिंघ से और मुद्दई को
आदमियों की मार से बचाया और इस तरह से उनको समझाया
जो यह लोग उस वक़्त न पहुंच जाते तो ज़रूर मुद्दआ
अलैहुम मुद्दई को मार डालते फिर मुद्दई बेहोश हो-
गया यह मुद्दई को थाना मोहन लाल गंज में सवार करा के
लाये मुद्दई ने रपोट लिखवाई थी और मुद्दआ अलैहुम
से अदावत की यह वजह है कि मुद्दई का रुपिया लालता
परसाद के जिसमे बाबत हिसाब समझौता ठेकादारी बाक़ी
है जिस की नालिश उसी रोज़ करनेवाला था यह ख़बर
लालता परसाद ने सुना और अपने नौकर चाकर मार
पीट की और नालिश न करने दिया अगरचे दावा दरोग़:
सब लिया फुला मैंने पास तैयार था और यह इरादा
था कि ठेका की सनद छीन लेवें और कुल मुद्दआ अ-
लैहुम बाबत दंगा और फ़साद के सज़ा पा चुके हैं जिस
के मुक़द्दमे में अदालत में मौजूद हैं पूछने पे वक़्त
बयान करूंगा—

अरज़ी मुद्दई बख़त वेला गुलाम अब्बास
दस्तख़त मुद्दई तारीख़ २१ सितम्बर सन् १८७५
ह० मुद्दई—

અરજી દાવા ફોજદારી

અમૂલી સિંઘ બેટા પિરથી સિંઘ કૌમ ઠાકુર પેશઃ નોકરી
રહને વાલા સહર વાળાર હાલ મુદ્દઈ

બનામ

તુલસીરામ બેટા અહલાદ બિરહમન વ સીતારામ બેટા
ગંગાદીન વ દુરગા બેટા તુલસી રામ કૌમ બિરહમન રહને
વાલે મૌજા સિરસ પરગના મોહનલાલગંજ - મુદ્દઆઅલૈ-
હુમ

મુકાબિલા દફા ૩૨૩
તાજીરાત હિંદ

ગરીબ પરવર સલામત જનાબ આલી

હાલ યહ હૈ કિ તારીખ ૨૬ જનવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી કો
મુદ્દઈ રાસતે કટવાને દો દરખત આમકી ઔર દો કોઠી
બાંસ જો કિ લાલા બેટા દેવીદીન જિનકા મુદ્દઈ નોકર
હૈ અપર લિયે હુવે ગાંવ મેં ગયા થા ઔર મજદૂર મુકરર
કરકે દરખતોં કે કાટને કા લગા લગવા દિયા ઉસી વકત
મુદ્દઆઅલૈહ ને જલદી કે સે આકર મના કિયા કિ
દરખત મત કાટો મજદૂરોં ને કાટના બંદ કર દિયા મુદ્દઈ
ને કહા કિ ઇન દરખતોં કો લાલા બેટા દેવીદીન બિયપારી
જિનકા મુદ્દઈ નોકર હૈ બસહર બિરહમન સે ખરીદ કિયા
ફિર મુદ્દઆઅલૈહ નમબર ૨ વ ૩ લાઠી બાંધે હુવે
આયે ઉસી વકત તીનોં મુદ્દઆઅલૈહુમ મુદ્દઈ કો
લાઠી વ લાત વ ઘૂંસા મારને લગે કિ મુદ્દઈ લાઠી કી
ચોટ સે બેહોશ હોકર ગિર પડા એક ધોતી ઔર એક

ड्रुपदा और पुत्र नकुल एक कुल्हाड़ी छीन लिया और कहा कि जिनदा यहां से चले जाओ मुद्दई बड़ी मुश्किल से भोजा सिर संडा पराना भोवाड़ा में गया ६ दिन तक पड़ा रहा ७ सातवें दिन जब मुद्दई को कुछ ताक़ात हुई जिवना पड़ा अदालत तक जिनदा हाज़िर आया जोकि मुद्दआलेह ने मुह को नाहक़ मार पीट किया है सो उमेदवार हूं कि मुवाफ़िक़ अनशा दफ़ा ३२४ ताज़ीरात हिंद मुद्दआलेह को बुलावे जावें और पीछे तहक़ीक़ात जुर्म के मुद्दआलेह को सज़ा दी जावे - मालूम हो कि निशान जब अपर पुटबा के और दहने पैर और बायें हाथ में है -

अरज़ी
अमृत सिंह रहनेवाला मटरबाज़ार
मौका लाला किशनजी मुद्दई तारीख़ २ जनवरी
सन् १८७४ ईस्वी बक़लम मंगली परशाद अरज़ी
लिखनेवाला -

સમમન મુદ્દઆઅલૈહ કે નામ વાસતે તનક઼ીહ
મુક઼દ્દમા મુરાફ઼િઆ દફ઼ા ૪૧ ઐક્ટ ૮ સન્ ૧૮૭૯ ઈ૦
ઈસવી નમ્બર મુક઼દ્દમા ૭૨

ઐક્ટ લગાન કી અદાલત મેં ઇજલાસ કપતાન ક્રેમન
સાહિબ અસિસટનટ બહાદુર કમિશનર લખનઊ
મુક઼ામ ઇમામ બાડ઼ા નાઝ઼િમ સરાય—
અનોસેરી સિંહ રહને વાલે ઞ પટ્ટીદાર મૌઝ઼ા કલલી
પચ્છિમ પરગના બિજનૌર તહસીલ ઝ઼િલા લખનઊ
મુદ્દઈ

બનામ

મંગલ સિંહ ક઼ૌમ ઠાકુર રહને વાલે ઞ કાશતકાર
મૌઝ઼ા કલલી પચ્છિમ— મુદ્દઆઅલૈહુમ
દાવા ૭) બાબત બક઼ાયા લગાન—
બનામ મંગલ સિંહ બેટા પાલ સિંહ ક઼ૌમ ઠાકુર રહને
વાલે ઞ કાશતકાર મૌઝ઼ા કલલી પચ્છિમ—
જો કિ અનોસેરી સિંહ મુદ્દઈ બેટા મુલ સિંહ રહને
વાલે પટ્ટીદાર મૌઝ઼ા કલલી પચ્છિમ ને નાલિશ
તુમ પર ઇસ અદાલત મેં વાસતે દિલાપાને ૭) રૂપિયા
બાબત બક઼ાયા લગાન કી હૈ સો તુમ કો હુકમ હોતા હૈ
કિ તુમ તારીખ઼ ૨૫ મહીના માર્ચ સન્ ૧૮૮૪ ઈ૦
વક઼્ત ૧૦ બજે દોપહર ઇસ અદાલત મેં આપ યા
અપને કારિન્દા કે માર્ફ઼ત યા વકીલ અદાલત
કે જો અચ્છી તરહ સે મુક઼દ્દમા કા હાલ જાનતા હૈ

और सब बातों का जवाब जो इस मुकद्दमा के बारे में पूछी जावें देसके या उसके साथ कोई ऐसा आदमी हो कि जवाब ऐसे सवालों का देसके जवाब देने वाला और सेरीसिंघ के वास्ते हाजिर हो और वही तारीख जो तुम्हारे हाजिर होने के लिये मुकर्रर है वही तारीख मुकद्दमा के फैसला की तजवीज हुई है सो तुम को चाहिये कि आपने सब गवाहों को उसी तारीख पर हाजिर करो और तुम को इत्तिला दी जाती है कि जो तुम २५ तारीख को हाजिर न होगे तो मुकद्दमा बगैर हाजिरी तुम्हारे सुना और फैसला किया जावेगा - सिवा इसके तुमको चाहिये कि आपने साथ जिसको कि मुद्दई देखना चाहता है और कोई दूसरी सनद जिसको तुम आपने जवाब देने की मजबूती के लिये जरूर समझते हो लाओ

तारीख १९ फरवरी सन् १८७६ ईसवी—

दस्तखत जज तजवीज करनेवाला

यादद्दाश्त— तलबाना मियाद मुकर्रर।

अदालत इस सम्मन के जारी होने में पहले दाखिल होना चाहिये और तारीख रसीद से मुद्दआ अलैह को कम से कम ७ दिन वास्ते मोहलत हाजरी और जवाब देही के मिलना चाहिये—

સમ્મન — વા હુકમ નામા ગવાહ યા દૂસના આદમી મુવાફ઼િક દફ઼ા ૨૫૦૭ ૨૫૯, ૨૫૨, ૨૫૩, ૨૬૫, ૨૬૬, ૨૨૯, ૨૩૬, ઐક્ટ ૮ સન ૧૮૫૯ ઈસવી-
નમ્બર મુક઼દ્દમા -
ઐક્ટ લગાન કી અદાલત ડિપ્ટી કલક્ટર ... જ઼ાની-
લાલ સાહિબ ઐક્સટ્રા અસિસ્ટન્ટ કમિશ્નર
બહાદુર મુક઼ામ -
અૌસેની સિંઘ વેટા મૂલસિંઘ ક઼ૌમ ઠાકુર રહને-
વાલા વ પટ્ટીદાર મૌજ઼ા કલ્લી પચ્છિમ પરગના
બિજનૌર - મુદ્દઈ

વનામ

મંગલ સિંઘ ક઼ૌમ ઠાકુર રહને વાલા મૌજ઼ા રેજ઼ન-
મુદ્દઆઅલૈહ
દાવા ૩) વક઼ાયા લગાન
વનામ અમર્વંત વેટા વખ઼તૌરી ક઼ૌમ બિરહમન રહને-
વાલા કલ્લી પચ્છિમ-
ઇસ મુક઼દ્દમા મેં તુમ કો વાસતે દેને ગવાહી મુવાફ઼િક
દરખ઼વાસત મુદ્દઈ —
ઇસ અદાલત મેં ૫ તારીખ઼ મહીના જૂન સન ૧૮૭૬ ઈસવી
વક઼્ત ૧૦ વજે હુકમ દિયા જાતા હૈ ઔર વાવત
અખ઼્ત્યાર કે વાહ કે કિસી કે સાથ મેળાપાના હૈ
તારીખ઼ ૨૬ મહીના મઈ સન ૧૮૭૬ ઈસવી-
દસ્તખ઼ત જળતળવીજ કરનેવાલા

૧— હાકિમી અદાલતી દેને કે વાસ્તે દી—

૨— સનદોં કી પેશી (મુખતાર) દી—

૩— હાકિમી વાસ્તે દેને અદાલતી ઔર પેશી સનદ—દી

૪— જવાબદિહી નાલિશ બાબત રોકને દા હનાર બીચ દેને ફ્યાદ ડિકરી—

તમ્બીહ— જો શખ્સ બુલાયા ગયા કોઈ તરફદાર મુકદ્દમા કા હો યા કિ સમ્મન ફકત વાસ્તે પેશી કિસી સનદ વગૈર હાકિમી હો તો ફિકરા અનદાખ્ત કે લિખના ચાહિયે—

યાદદાશ્ત— તલબાના સિવાય મુકર્રર ખરચ ગવાહી સમ્મનસે પહલે અદાલત મેં દાખિલ હોના ચાહિયે।—

ફરમાસ જનાબ પંડિત પ્રેમનાથ સાહિબ તહસીલદાર તહસીલ મલિહાબાદ ઝિલ્લા લખનઊ—

દફા ૨૫૨

રેકટ ૧૦ સન્ ૧૮૭૨ ઈ૦ સમ્મન બનામ

મુદ્દઆ અલૈહ

મનસા નામ બેટા ગાયા કિશુન કૌમ બનિયા રહનેવાલા મુનશીગંજ— મુદ્દઈ—

બનામ

હીરાસિંઘ બેટા મનના લાલ કૌમ અહીર રહનેવાલા ઈસાપૂર મુદ્દઆ અલૈહ

મુવાફિક દફા ૩૫૨ વ ૩૨૩ મજમૂઆ તાજીરાત હિંદ મંસા નામ બેટા ગાયા કિશુન રહનેવાલા મુંશીગંજ

તહસીલ મલિહાબાદ જિલા લખનઊ —
સો હાજિર આના તુમ્હારા વાસ્તે જવાબદિહી મુકદ્દમા
કે કિ તુમને તારીખ —
જુરમ મારપીટ —
કિ જિસ જુરમકી તારીખ દફઅ ૩૫૨ ઔર ૩૨૩ તાજી
રાત હિંદ મેં લિખી હૈ જાનૂ હૈ સો હુકમ દિયા જાતા હૈ
કિ તુમ તારીખ ૬ અગસ્ત સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી કો મુકામ
તહસીલ મલિહાબાદ હમારે ઇજલાસ મેં હાજિર હો
તાકીદ જાનો —
દ૦ પંડિત પેમનાથ સાહિબ તહસીલદાર —
ઓહદા તહસીલદાર સાહિબ —
ઇખ્તિયારાત મજિસટ્રેટ દરજા દૂસરા —
મુકામ તહસીલ મલિહાબાદ —
તારીખ ૨૦ જુલાઈ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી —

મોહર
સરિશ્તએ તહ
સીલદારી મલિ
હાબાદ

રાનદરીયાફતાની

ઇજલાસ પંડિત પેમનાથ સાહિબ તહસીલદાર મજિસ્
ટ્રેટ દરજા દૂસરા
તારીખ ૨૦ અક્ટોબર મુકામ લખનઊ

બનામ અફસર પુલિસ સાહિબ
થાના મલિહાબાદ

જો કિ મુન્નાખાં વલદ ચુન્નાખાં કોમ પઠાન રહનેવાલા

बख़्शीपूर थाना मलिहाबाद व सबब जुर्म मारपीट दफ़ा ३२३ व ३२४ ताज़ीरात हिंद पकड़ने क़ाबिल हैं और इस जुर्म का बयान दफ़ा ३२३ व ३२४ मजमूआ ताज़ीरात हिंद में लिख्या है इस वास्ते तुमको हुकम दिया जाता है कि मुद्दआ अलेह मुन्नाखां को पकड़ कर के हमारे सामने हाज़िर लाओ इस मुक़द्दमा में ताकीद जानो–

हुकम

जो मुद्दआ अलेह मुन्नाखां खुद मुचलका और ज़मानत ५०) रुपिये की दाख़िल करै और ज़मानत मोतबर बाबत ५०) की तारीख़ ६ अगस्त सन १८७४ ईसवी को हमारे सामने हाज़िर होने के वास्ते देवै तो उसको छोड़ देना वाजिब है–

लिख्या तारीख़ ३० जुलाई सन १८७४ ईसवी–

दस्तख़त

तहसीलदार साहिब — मोहर सरिश्ता तहसीलदारी मलिहाबाद

इश्तहार गवाहों के बुलाने की अदालत से–

टिकट ।) टिकट ।) का चिपका है–

औसेरी सिंघ बेटा नत्थू सिंघ क़ौम ठाकुर रहनेवाला वा नम्बरदार मौज़ा कल्ली पच्छिम परगना बिजनौर

मुद्दई

बनाम

मंगलसिंह कोम ठाकुर रहनेवाला कल्लीपच्छिम परगना बिजनौर — मुद्दआलेह

दावा रु १) बकाया लगान

गरीबपरवर सलामत जनाब आली

इस मुकद्दमा की पेशी ५ जून सन १८७६ ईसवी की मुकर्रर है सो नीचे लिखे हुवे गवाहों को मुद्दालेह वाले लोग पीछे तहकीकात के मेरा पैरवी किया जावे

नाम गवाहों के -

नाम गवाहों के जिनको मुद्दालेह में बुलवाना मंजूर है -		नाम गवाहों के जिनको मैं मुद्दआलेह ने साथ हाजिर लाऊंगा	
गंगादीन नम्बरदार मौजा कल्लीपच्छिम		भगवंतसिंह कोम बिरहमन रहनेवाला मौजा कल्लीपच्छिम	भवानीप्रसाद कायस्थ का- सिंह गंगादीन
तलबाना	खुराक	तलबाना	खुराक
१)	२)	१)	१)

दस्तखत मंगलसिंह कोम ठाकुर रहनेवाला कल्लीपच्छिम परगना बिजनौर तारीख २४ मई सन १८७६ ईसवी

दरख्वास्त

इनकार नीलाम जायदाद मदयून डिगरी जिसका इश्तिहार नीलाम हो चुका है और रसीद कुल रुपिये डिगरी जो बाबत के फैसला मे मदयून डिगरी से वसूल हो चुका है—

नारायन प्रसाद रहनेवाला दनहौना — डिगरीदार

बनाम

बख्श हलवाई रहनेवाला दनहौना

मदालिया

(१३) डिगरी

मैंकि नारायन प्रसाद बेटा बख्शी राम माड़वारी रहनेवाला दनहौना का हूं—

मैंने रुपये लिये हुवे मुकद्दमा मे मुद्दई को नीलाम कराने दुकान बख्श डिगरीदार का जो कि मैं ने खरीद और उसको नीलाम का इश्तिहार ७ मई सन १८७४ ई० का कराया था मंजूर नहीं है क्योंकि बख्श डिगरीदार ने मेरा देना अदा किया अब मुद्दई को बख्श से कुछ लेना नहीं है सो रसीद (१३) की दाखिल अदालत करता हूं कि आगे को सनद रहे— और कानून के मुताबिक काम आवे—तारीख २ अप्रैल सन् १८७५ ईसवी—

६० टिकट ~) गवाही होलतराम वकील मुद्दई

नारायनप्रसाद बेटा छोटूराम गवाही हानारायन रहनेवाला दनहौना

मुचलका हाज़िरी मुद्दआअलैह

मागी पी जोरू मथुरा कौम पासी रहनेवाली मरावान्-
पूर तहसील मोहनलालगंज मुद्दई।

बनाम

शिवदीन चौकीदार कौम पासी रहनेवाला मरावान्-
पूर मुद्दआअलैह

मैं कि शिवदीन बेटा भग्गू चौकीदार मौज़ा मरावान्-
पूर तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ का हूं-
इस मुक़द्दमा में मैं मुद्दआअलैह हूं, इक़रार करता
हूं कि जबतक मुक़द्दमा फ़ैसल न होगा बराबर अदालत
में हाज़िर रहूंगा और जो गैरहाज़िर हूं तो १) रुपिया
जुरमाना दूंगा इस वास्ते यह मुचलका लिख दिया
कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवे-
तारीख़ ४ मार्च सन् १८७६ ईसवी

द० निशानी दस्तख़त शिवदीन — गवाही
बक़लम बिन्दा बक़्क़ाल ∽ — शिवदयाल
बक़लम ख़ुद

गवाही
निशानी हीरा बिरहमन — गवाही उमेदराय
∽

मुचलका हाज़िरी मुद्दआअलैह

मैं कि मेडीलाल कौम अहीर रहनेवाला
बख़्शीपूर का हूं-
इक़रार करता हूं कि सीताराम मुद्दई के मुक़द्दमा

મૈં રામલાલ તહસીલ મલિહાબાદ મેં તારીખ ૨૪ જનવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી કો વરક઼ ૧૦ વજે દિન કે ૩ સીરક઼ાત ઔર ઉસી કચેહરી મેં મુક઼દ્દમા જુર્મ દફ઼ા ૩૭૯ ઔર ૩૫૨ તાજ઼ીરાત હિંદ મેં નિસ્બત મુદ્દઈ સીતારામ કે હાજ઼િર તહસીલ હૂં ॥ ઔર ગૈર હાજ઼િરી કરૂં તો ઇક઼રાર કરતા હૂં કિ ૨૫) રૂપિયા સરકાર મેં દાખ઼િલ કરૂં - લિખા તારીખ઼ ૨૮ જૂન સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી -

૬૦ સેઢીલાલ

(મુચલકા લડાઈ ઝગડા ન કરને કે વાસ્તે)

મૈં કિ ભવાની દીન વલ્દ દેવી દીન કૌમ ઠાકુર રહને વાલા મૌજ઼ા પરગના હૈદરાબાદ જ઼િલા બરેલી કા હૂં -

જો કિ સરકાર સે ઝગડા ઔર લડાઈ ન કરને કે વાસ્તે એક સાલ તક કે મુચલકા માંગા જાતા હૈ ઇસ વાસ્તે મૈં ઇક઼રાર કરતા હૂં કિ સાલ ભર તક ઝગડા ફ઼સાદ ન કરૂંગા ॥ ઔર ઐસા કોઈ કામ ન કરૂંગા ॥ જિસ સે ઝગડા વગૈરઃ કા શક હો ઔર જો ઇસ મુચલકા કે ખ઼િલાફ઼ કરૂં તો ૫૦) રૂપિયા જુરમાના સરકાર મેં દાખ઼િલ કરૂં - તારીખ઼ ૨૪ મઈ સન ૧૮૭૨ ઈ૦

દસ્તખ઼ત હાકિમ

૬૦ ભવાની દીન ગવાહી ઇસ્માઈલ, ગવાહી ચંબીલે કુમાર

ઇશ્તિહાર નીલામ

બ સબબ ડિગરી ડિક્રી મુવાફ઼િક઼ દફ઼ા ૨૪૬ ૨ કોડ ૮ સન્ ૧૮૫૯ ઈસવી -

નમ્બર મુક઼દ્દમા ૨૮૩

अदालत दीवानी इजलास पंडित श्रीराम नरायन साहिब
बहादुर एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिशनर ज़िला लखनऊ

मुक़ाम

विनायक प्रसाद रहने वाला मौज़ा कटौंजा ब्यास परगना
महोना तहसील मलिहाबाद—

डिकरीदार

बनाम

गुलाम अली हलवाई रहने वाला मुनशीगंज तहसील मलिहा-
बाद ज़िला लखनऊ

मदयून डिकरी

तादाद रुपिया डिकरी ८२।) सिवाय खर्चा—

सबब इजराय डिकरी बाबत मुक़द्दमा नंबर ८३।) के
जो डिकरीदार को देना वाजिब है इश्तिहार दिया जाता है
कि तारीख़ ८ मई सन १८७५ ईसवी वक़्त १२ बजे के मुक़ाम
मौज़ा हज़ मुताल्लिक़ गुलाम अली वल्द अहमद अली क़ौम हलवाई
रहने वाला मौज़ा कटौंजा ब्यास तहसील मलिहाबाद ज़िला
लखनऊ—

मुद्दआ अलैह मुक़द्दमा की जायदाद जो फ़ेहरिस्त
में लिखी हुई है उसका नीलाम आम मुताबिक़ हुक्म इस
अदालत के होगा—

तारीख़ २५ महीना मार्च सन १८७५ ईसवी—

जज तजवीज़ करनेवाला

फ़ेहरिस्त

एक मुसाफ़िर के क़रारदाद बाबत एक दुकान किराये की हद्दें नीचे लिखी हैं इटौंआ में है-

हद्द पूरबी किसी दुकान का दरवाज़ा

हद्द उत्तरी [illegible]

हद्द दक्खिनी [illegible]

हद्द पश्चिमी किसी दुकान की दीवार से मिली हुई

दस्तख़त- तलवाना फ़ारीहान फ़लाने डिकनी के-

पहले मिसाह मुक़र्रर पर लाहालत में दाख़िल होना चाहिये

अर्ज़ी

ग़रीबपरवर सलामत- जनाब आली

अर्ज़ यह है कि मुझ को आज एक बड़ा ज़रूरी काम है- और बिना बंदोबस्त उस काम के मेरा बड़ा हरज है और सिवाय मेरे दूसरे से उसका बंदोबस्त हो नहीं सकता है सो उम्मेदवार हूं कि आज चार घंटा की रुख़सत ११ बजे से ३ बजे तक सरकार से बख़्शी जावे- ग़रीब का हद्द अदब [illegible] आपका [illegible] होगा और हक़ वाले का हमेशा चमकता रहे-

अर्ज़ी फ़िदवी [illegible]

[illegible]

[illegible]

तारीख़ [illegible]

सन् १८७५ ई॰

रुक्का

गरीबपरवर सलामत   जनाब आली

इन दिनों पानी न बरसने के सबब से बड़ी गरमी होती है और जनाब ने मदरसा का वक़्त बदल दिया है सो हम लोगों में से अकसर लड़के ऐसे हैं कि दो दो तीन तीन मील से और भी ज़ियादा से मदरसा में हाज़िर होते हैं फिर तो गरमी और धूप और लू में दस बजे आना और चार बजे जाना दिक़्क़त से ख़ाली नहीं है और ऐसे आने जाने में बीमारी का भी शक है सो यह अरज़ी हुज़ूर में देकर उम्मेदवार हैं कि जब तक बरखा न हो मदरसा का वक़्त बदल कर ६ बजे से १० बजे तक बहाल किया जाये ज़ियादा जनाब और अफ़ज़ूं इलाही दौलत और इक़बाल आपका हमेशा बढ़ता रहे

अरज़ी क़ासिम बख़्श व ग़ैरह
फ़िदवियान विद्यार्थियान
इं० ७ जू० ६ ज़िला
इस्कूल उन्नाम

अरज़ी

जनाब साहिब डिपटी कमिशनर बहादुर ज़िला सीतापूर

जनाब आली

गरीबपरवर सलामत

हाल यह है कि मैं इलम फ़ारसी और उर्दू को अच्छी तरह

से जानता हूं और गिरिजी भी सरकारी इस्कूल में दाखिल
कर चुका हूं सो लियाक़त और इस्तेदाद मेरी नक़ल सार्टी
फ़िकट दी हुई जनाब साहिब डायरेक्टर बहादुर सरिश्ता
तालीम अवध जो इस अरज़ी में शामिल है उससे बख़ूबी
मालूम होती है इसके सिवाय काररवाई अदालत भी बख़ूबी
अच्छी तरह से कर सकता है क्योंकि तीन महीना अदालत
दीवानी ज़िला बहराइच में मोहर्रिरी कर चुका हूं और मुद्द
त से मुझको अमिला अवढ़ती अमला की थी और अब आजकल
हुज़ूर के दफ़्तर में दो तीन जगह ख़ाली होने वाली हैं सो मैं
भी उमेदवार हूं कि ग़रीब को मेहरबानी करके उनमें से
किसी न किसी जगह पर मुक़र्रर फ़रमाइये कि बदौलत
हुज़ूर अपनी मुराद को पहुंच कर दौलत और इक़बाल के
बढ़ने की दुआ करता रहूं—

ज़ियादह हद्द अदब—

ख़ुदा आपकी दौलत और इक़बाल को हमेशा रोशन रक्खे

अर्ज़ी ग़रीब कन्हैया उमेदवार
मर्क़ूमह ता० १० दिसम्बर
सन् १८७५ ईस्वी

रूबकार

रूबकार सदर सरिश्ता तालीम इजलास में साहिब डायरेक्टर आफ़ पब्लिक इनसट्रकशन अवध तारीख़ २६ अगस्त सन् १८७६ ईसवी-

मोहर सरिश्ता
नम्बर २६

हुकम हुआ।

जो कि अज़ दरख़्वास्त अफ़सर मुदर्रिस उनाम लिखी हुई तारीख़ १८ अगस्त सन् १८७६ ईसवी बाबत इसके कि ८ महीना पाने वाले लड़कों में से ६ को १ सितम्बर और १५ को २८ नवम्बर सन् १८७५ ई० से और १५ को ३० जनवरी सन् १८७६ ई० से महीना दिया गया सो अब ज़ाहिर है कि लड़कों को महीना आख़िर तारीख़ अगस्त सन् १८७६ ईसवी से बख़्शा जावे या इश्तिहार सालाना तक हुकम मुनासिब से इत्तिला दी जावे अंगरेज़ी में लिखी हुई साहिब इनसपेकटर बहादुर मदारिस सरकिल ग़रबी अवध तारीख़ २४ अगस्त सन् १८७६ ईसवी इस दफ़्तर में आई सो ख़िदमत में साहिब इनसपेकटर बहादुर मदारिस सरकिल मग़रबी मुल्क अवध लिखा जावे कि बनाम साहिब चीफ़ कमिश्नर बहादुर मुल्क अवध की ख़िदमत में दरख़्वास्त की गई है कि महीना लड़कों को १ सितम्बर सन् १८७६ ईसवी से कि जो फ़ेहरिस्त वज़ाइफ़ में छपी हुई है और जिसको डिप्टी इनसपेकटर ठनामने ज़मूद दिया हो।।। इति।।मत्त सन्

१८७६ ईसवी तक वहाँ हो जावें लेकिन अभी हम ठीक
नहीं कह सकते कि मंजूर होगा या नहीं—
दस्तख़त जनाब साहिब डाइरेक्टर बहादुर
अवध—

परवाना

हुक्म से— साहिब बहादुर डाइरेक्टर आफ पबलिक
इन्सट्रक्शन अवध—

मोहर सरिश्ता
डाइरेक्टरी

दस्तख़त साहिब डाइरेक्टर साहिब बहादुर—

शराफ़त पनाह मौलवी इनायत अली अव्वल
मुदर्रिस मदरसा महोली खुश रहो—

दरख़्वास्त लिखी हुई २२ अगस्त सन् १८७६ ईसवी
आपको लिखा जाता है कि क़ायम मुक़ाम मुदर्रिस जेल
सीतापूर मुंशी काली परसाद साहिब की जगह पर २०)
रुपिया महीना पर नौकर रक्खे गये आपको चाहिये कि
मुदर्रिस दूसरे मदरसा महोली को चारज देकर आपने
काम पर जल्द से जल्द सेन्ट्रल जेल में हाज़िर हूजिये
और आपकी सार्टीफ़िकट भी इस परवाना के साथ
भेजी जाती है इत्तिला के वास्ते आपको लिखा गया—
तारीख़ २६ अगस्त सन् १८७६ ईसवी—

दरख्वास्त नक़ल हुकम पाने के वास्ते - टिकट ।)

दरख्वास्त देनेवाले का नाम	अन्न पहुस समद ख्वां बाशिंदा मुंशी कुमतिराज अली साहिब नम्बरदार - दान क़स्बा बिजनौर -
नाम हाकिम	जनाब फ़ाज़िली लाख्व साहिब ऐक्स्ट्रा अस्सिस्टैन्ट कमिशनर बहादुर ज़िला लखनऊ ——
नाम फ़रीक़ैन	मुसम्मात ... अली रहने वाली क़स्बा बिजनौर - मुद्दई - बनाम शिवलाल वो ... हीन ... अन्न पहुस समद ख्वां मुद्दआअलैहिम
सूरत मुक़द्दमा	दावा रु ... बाबत ... बटाई रबी सन् १२८३ फ़सली -
तारीख़ फ़ैसला	९ जून सन् १८७६ ईस्वी
नाम मौज़ा ...	क़स्बा बिजनौर तहसील व ज़िला लखनऊ
खुलासा	दरख्वास्त है कि नक़ल तजवीज़ ... अंग्रेज़ी के वास्ते अपील के मुहर की ... से मिल जावे

सवाल

ખાનાવસ્લી

ખોકિ નકલ હુકુમ લેના ફૈસલા ઔર તજવીજ અંગ્રેજી વાસ્તે જરૂરત અપીલ કે મુદ્દ સવાલ દેને વાલે કો દરકાર હૈ સો દ્સ સવાલ કો હુજૂર મેં દેકર ઉમેદવાર હૂં કિ નકલ કાપિ કે મુવાફિક મુહ સવાલ દેને વાલે કો હુજૂર સે મિલ જાવે—

સવાલ એક નકદ ૫ | કાગજ સાદા ટિકટ ॥) સમેત એક

ઔવીલ અવ્દુલસમદ ખાં કારિંદા મુન્શી ઇમતિયાજ અલી સાહિબ મુમતાજ દાર કસબા વિજનૌર તહસીલ ઔર જિલા લખનઊ તારીખ ૭ જુલાઈ સન ૧૮૬૮ ઈ૦ દસ્તખત અવ્દુલસમદ ખાં વકલમ મુહ

વકલમ વહાદુરસિંહ અરજીનવીસ

ઇશ્તિહાર દા નોટિસ

માલૂમ હો કિ મેમ્બરાન દેહલી સુસાઇટી કે હુકમ સે મુવાફિક માસ્ટર લછમનદાસ સાહિબ વાઇસપ્રેસીડેન્ટ સુસાઇટી ને વિલિયમ નોવાસ સાહિબ કી તારીખ અમીરો કા તરજુમા અંગરેજી સે ઉરદૂ જબાન મેં કિયા હૈ ઔર દેહલી સુસાઇટી કી તરફ સે પહિલે હિસ્સા કા તરજુમા

છપકર તૈયાર ભી હો ગઈ હૈ - ઇસ હિસ્સા મેં અમેરિકા
કો અગલે ઝમાને સે દરિયાફ઼્ત હોને સન્ ૧૪૯૨ ઈ૦ ઈસવી
તક કા બહુત સાફ઼ સાફ઼ હાલ હૈ ઔર જહાજ઼ ચલાને કે
કામ કી તરક્કી ઔર ઉસ મુલ્ક કે માલૂમ કરને કી
જો જો તજ઼્વીજ઼ેં જિસ જિસ વક્ત પર કી ગઈ થીં ઉન સબ
કા સાફ઼ સાફ઼ બયાન ભી હૈ - ઇસ કિતાબ કી મોટાઈ ૨૪૬
સફ઼ા કી હૈ ઔર કિતાબ પીછે ॥) કીમત ઔર ૩ મહસૂલ
ડાક કા મુકર્રર હૈ જિન સાહિબોં કો ખરીદારી ઇસ કિતાબ
કી મનજ઼ૂર હો વહ ॥=) ભેજ કર કમતર અજ઼ જાયબ ખાના
કાશી નાથ મોહતમિમ દેહલી સુસાઈટી સે મંગાલેં—
દસ્તખ઼ત કાશીનાથ મોહતમિમ દેહલી
સુસાઈટી— ૧ અગસ્ત સન્ ૧૮૬૬ ઈ૦

ઇશ્તિહાર—

મુવાફ઼િક હુક્મ સાહિબ ડિપટી કમિશ્નર બહાદુર
ઝિલા ફ઼લાં—

જ઼ાહિર હો કિ ગુલાબરાય બેટા મહતાબરાય કૌમ
બનિયાં રહને વાલા મહલ્લા—
ઉમર ૩૬ સાલ કાલા રંગ છોટા ડીલ બડી બડી આંખેં
દાહને હાથ મેં છઃ ઉંગલી— સાહિબ દીન બેટા નસીરદીન
રહને વાલા મહલ્લા— કો જુર્માના કર ઔર ૩૦૦)
નક઼દ ઔર ૧૪૬૦) કે દસ નોટ ઔર કુછ ઝેવર ઔર
અસબાબ લેકર છિપ કર ભાગ ગયા હૈ સો યહ ઇશ્તિહાર
જારી કિયા જાતા હૈ કિ જો શખ઼્સ ગુલાબરાય કો અહલકાર

में हाज़िर लावेगा उसको ५००) रुपिया सरकार से इनाम
मिलेगा—

तारीख़ ३० अक्टूबर सन् १८७५ ईसवी—

दस्तख़त साहिब डिपटी कमिश्नर बहादुर
ज़िला—

डिकरी अदालत द्वितीई

नम्बर मुक़द्दमा २२०   सन् १८७५ ईसवी—

अदालत दीवानी साहिब ऐकसट्रा असिस्टेन्ट
कमिश्नर बहादुर—

सीतलप्रसाद बेटा छोटूलाल बनिया रहने वाला—
और दूकानदार दरौंजा परगना महोना— मुद्दई

बनाम

इमाम ख़ां बेटा छोटे ख़ां शेख़ पठान रहने वाला और
दूकानदार दरौंजा परगना महोना— मुद्दाअलेह

दावा ७५) रुपिया बाबत रजिस्टरी किये हुवे तमस्सुक के
आज यह मुक़द्दमा इजलास पंडित श्रीराम नरायन
साहिब ऐकसट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर बहादुर
ज़िला लखनऊ में सामने सीतलप्रसाद मुद्दई
और गोपाल नरायन वकील मुद्दाअलेह के वास्ते
सुनने और बहस के पेश हुआ और जो सबूत ज़बानी
व लिखा हुआ मुद्दई और मुद्दाअलेह ने पेश किया
वह सुना गया और जो दोनों तरफ़ों के गवाहों ने बयान
किया उस पर अच्छी तरह से ग़ौर किया गया सो

अदालत हुकम देती है और डिकरी करती है डिकरी ७॥)
असिल और सूद सीतल परसाद मुद्दई के हक़ में बनाम
हुसामी हलवाई मुद्दआअलैह ही जावे और ख़रचा फ़रीक़ैन
मुद्दआअलैह इसी ऊपर डिकरी जारी की जावे-
आज तारीख़ २९ फ़रवरी सन १८७५ ईसवी यह डिकरी
अदालत की मुहर और हमारे दस्तख़त से तैयार हुई-

हिसाब ख़रचा मुद्दई		ख़रचा मुद्दआअलैह	
जिसमें मुद्दआअलैह		जिसमें मुद्दआअलैह	
इस्टाम्प क़ानूनी	३॥=)		×
तलबाना	॥=)		×
मेहनताना वकील	३॥)	३॥)	मेहनताना
मुतफ़र्रिक़ात	॥) वकालतनामा	॥)	वकालतनामा
जोड़	६॥)	४॥)	

दस्तख़त हाकिम

दरख्वास्त इजराय डिगरी की मुद्दई सआदत अली बिन दिलावर अली कुन्जलाल पण्डित श्रीकृष्ण नाम ... साहिब रेवेन्यू असिस्टेंट कमिश्नर बहादुर ज़िला लखनऊ
दिक्कत ।। दिवाकर ।। का विषय कहिं

नाम दफ़्तर मुकद्दमा	
तारीख़ फ़ैसला	२० फ़रवरी सन् १८७४ ईसवी —
नाम मुद्दई और मुद्दालैह	रामप्रसाद रहने वाले मौज़ा इटौंजा मुद्दई डिक्रीदार कुमारसिंह लधवाई रहने वाले मौज़ा इटौंजा — मुद्दालैह सहित मद्दईन
अपील हुई या नहीं	नहीं हुआ
डिक्री की बाबत अपील हुई या नहीं	नहीं हुआ
कुछ बाकी है या नहीं	कुछ
तादाद डिक्री की	(१) असल डिक्री की ६५) असल मुद्दा २॥) खर्च मय सूद ३) खर्चा तलबाना ३) दरख्वास्त ।।) (१) तलबाना बाबत कुर्की नीलाम ।।) फ़ीस वकील ३)
वसूल	कुछ नहीं
डिक्री की बाकी	कुल बाकी
नाम व सुकूनत व पता मुद्दालैह	कुमार सिंह लधवाई रहने वाला मौज़ा इटौंजा मुतअल्लिक तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ —
सरकार से क्या मदद चाहिये	क्योंकि मुद्दालैह ने कोई रुपया डिगरी का नहीं दिया सो मदद सरकार से दरख्वास्त करता हूं कि कुर्की की वारंट जारी हो और दूकान मुद्दालैह की जिसकी चारों हद्दें नीचे लिखी हैं और कीमत में अंदाज़न कुछ की होगी कुर्क और नीलाम होकर डिक्री का रुपया दिलाया जावे — पूर्व ... उसी दूकान का दरवाज़ा उत्तर ... दूकान ... दक्षिण ... दूकान ... पश्चिम ... दूकान ... पश्चिम की ओर ... मौज़ा इटौंजा का ... कोठी ... हुई तारीख़ २२ फ़रवरी सन् १८७४ ईसवी दस्तख़त नाम सरनाम डिक्रीदार माफ़त गोपाल-नरायन वकील —

फ़िक़रा मुसलमानों के इजराय डिक्री रूपिया मुद्दई पूरा की जायदाद
ग़ैर मनक़ूला मुन्दर्जे फ़िहरिस्त ज़ैल ... सन् १८७५ ईसवी की
अदालत में पंडित श्याम नरायन साहिब एक्स्ट्रा असिस्-
टंट कमिश्नर बहादुर ज़िला लखनऊ
नम्बर मुक़द्दमा
नाम पता रहनेवाला मौज़ा ढौंगा परगना महोना तहसील
मलिहाबाद— डिक्रीदार

बनाम

कुमाली कलवार रहनेवाला [illegible]

महकूम डिक्री

मुबलिग़ ...) डिक्री का रूपिया ...) मय ख़र्चा हाल

बनाम कुमाली वग़ैरा क़ौम कलवार रहनेवाला मौज़ा
ढौंगा तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ— महकूम
इस मुक़द्दमे में - इस हुक्म नामे से तुम को बदल ने जायदाद
मुफ़स्सिले ज़ैल जैसा नीचे लिखा है बेचने और बख़्शने या
और किसी तरह से मनाही की जाती है और कोई शख़्स
मोल और बख़्शिश या किसी और तरह से न लेवे क्योंकि
वह जायदाद हुक्म से इस मुक़द्दमा में क़ुर्क़ की गई है
तारीख़ २ माह मार्च सन् १८७५ ईसवी

जज तहरीर करनेवाला

फ़िहरिस्त हक़ मुश्तरिका महकूम बाबत एक दूकान जो
ढौंगा में है उसकी चारों हद्दें यह हैं—

पूरबी हद्द उसी दूकान का दरवाज़ा

[illegible]

क़ीमत अंदाज़न ५४)

[illegible]

हद्द पश्चिमी पहिंगोनाऊ की दीवार से मिली हुई

यादद्दाश्त तलबाना पहले हस्ब हुक्मनामा के जारी होने से मियाद मुक़र्ररा पर अदालत में दाख़िल होना चाहिये - तलबाना २)

अपील

दुमामी बेटा छोटे क़ौम हलवाई रहनेवाला और दूकानदार कुठौंधा परगना महोना तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ-

मुद्दआअलैह अपीलेनट

बनाम

राम पुनसाद बेटा छोटू राम क़ौम माड़वारी रहनेवाला और दूकानदार कुठौंधा परगना और तहसील और ज़िला रेज़न् मुद्दई रेसपानडेनट

दावा ५४) रुपिये मय असल और सूद बाबत तमस्सुक के

अपील नाराज़ी फ़ैसला पंडित शालिग्राम नायब साहिब रेकसट्रा असिसटनट कमिश्नर बहादुर लखनऊ -

तारीख़ २६ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी

१— मुद्दई ने दावा असल और सूद समेत तमस्सुक से किया लेकिन कोई सबूत इस बात का नहीं है कि मुद्दई ने तमस्सुक का रुपिया अदा किया था यह आप ही मुद्दई के बयान से साबित है कि पहले ५) पांच ही रुपिये अपीलेन्ट को दिया था जिसके पीछे २५) जिनका कोई सबूत नहीं है—

२— अपीलेन्ट ने यह रुपिया मुद्दई से प्रागदत्त का क़र्ज़ अदा करने के वास्ते लिया था और उसको दिला दिया—उसको रुपिया देना अपीलेन्ट के देने के बराबर था जब उसको रुपिया नहीं दिया गया तो क्योंकर अपीलेन्ट से पा सकता है—

३— और जो यह ख़याल किया जावे कि जब प्रागदत्त को दिलाया गया और प्रागदत्त ने नहीं पाया तो प्रागदत्त मुद्दई पर नालिश करे और मुद्दई अपने फ़रेब से इस नालिश में फ़ायदा उठावे तो भी मेरी उस दूकान में किराया पर तीन साल तक २) दो रुपिया महीना पर रहा और कुछ बाबत किराये के नहीं दिया उसमें मुजरा करके प्रागदत्त को हुक्म नालिश का होना—

४— अदालत मातहत ने बग़ैर मुजरा देने रुपिया किराये के जो कि अपीलेन्ट को मिलना थे जिसकी बाबत मुद्दई ने भी कोई उज़्र नहीं किया था ख़िलाफ़ मंशा दफ़ा २२१ ऐक्ट ८ सन् १८५९ ईसवी— डिगरी दी गई—

५— जो मुद्दई मेरी दूकान में २) दो रुपिया माहवारी

किताब दिये न गए होता तो कुल छः साल के सूद का कभी न दावा करता तो यह साबित है कि वे किताब दिये गए और किताब उसके ज़िम्मे देना वाजिब है—

६— समझने की बात है कि अगर मुद्दई ने रुपिया दिया होता और किताब का रुपिया उसके ज़िम्मे देने को न होता तो कभी इस क़दर अरसा तक अपना दावा न करता—

७— जब असल ही रुपिया का देना साबित नहीं है तो उस का सूद कैसा और कहां दिलाया जाय यह सब ऊपर लिखा हुआ हुज़ूर में देकर उम्मेदवार हूं कि पीछे रहने फ़ैसला मातहत के अपना रुपिया खर्चा दिलाया जाऊं—

अपीलेन्ट कि नाम मेरा इस
अरज़ी में लिखा है इकरार करता
हूं कि बयान इस अरज़ी का मेरी
समझ बूझ में ठीक और दुरुस्त है
दसतखत इमामी बकस

अरज़ी फ़िदवी इमामी बकस [illegible] कुरेवाला
और [illegible] परगना [illegible]
तहसील [illegible] ज़िला [illegible]
मुद्दईअलैह [illegible]
तारीख १७ माघ संवत १९८४
डिग्री—

અપીલ

ઠાકુર વલદેવ સિંઘ વેટા માધો સિંઘ ક્રોમ પવાંર પેશઃ ઝમીદારી રહનેવાલા મોજા રામપુર પરગના મનવાં તહસીલ વાડી ઝિલા સીતાપુર મુદ્દઈ—

મુસમ્માત સિતાલા વેવા ઓર રાનિયા મહાવીરસિંઘ ઓર મુસમ્માત સિતાલા વેવા રઘુવીરસિંઘ સોતેલી માં રતન સિંઘ નાવાલિગ રહને વાલે મૌજા લાલપુર પરગના મહોના તહસીલ મલિહાવાદ ઝિલા લખનઊ મુદ્દઆલૈહુમા

દાવા દખલ યાને १३ કિતા ઝમીન જોકિ નિકનામા મેં લિખે હૈં ઓર २०॥) સૂદ—

અપીલ નારાજી ફૈસલા પંડિત શ્રીરામ નરાયન સાહિવ એકસટ્રા અસિસટેનટ કમિશનર વહાદુર લખનઊ તારીખ २४ માર્ચ સન १८७५ ઈસવી

१— મુદ્દઈ ને મુદ્દાઆલૈહુમા નમ્બર २ પે ઇસ સમ વો નિકનામા લિખે હુવે પર દાવા કિયા થા મુદ્દઆલૈહુમા નમ્બર १ ને કોઈ મજૂરગી નો કે રૂપિયે કે અદા કાને કા નહીં કિયા અદાલત માતહત ને સિર્ફ ઉજરદારી મુદ્દઆલૈહુમા નમ્બર २ દાવા મુદ્દઈ ડિસમિસ કિયા યહ કામ ઇનસાફ કા નહીં હૈ—

२—મુદ્દઆલૈહુમા નમ્બર २ ઇસ મુકદ્દમા મેં ઉજરદારી નહીં કર સકતી થી ક્યોંકિ અદાલત દીવાની સે અપના સાવિક કાર્ય...

३ – जो कि डिकरी रद न कराई गई हो और रतनसिंह ना-बालिग़ भजनसिंह के भतीजे हैं तो कोई सार्टी-फ़िकट विरासत नहीं हासिल कुन्ना है कि जिस के ज़रिये से हक़ वापसी ज़मीन दावा की हुई का हासिल होवे –

४ – यह कि डिकरी भजनसिंह और महावीरसिंह बेटा भजनसिंह के मुक़ाबिला में थी रतनसिंह जो आपको भजनसिंह का भतीजा बतलाता है उस से फ़ायदा नहीं पा सकता है – क्योंकि महावीरसिंह वारिस भजनसिंह है न कि रतनसिंह –

५ – कोई सबूत नहीं है कि रतनसिंह भतीजा भजन-सिंह के भाई का लड़का बाप महावीरसिंह का है –

६ – भजनसिंह की जायदाद नीलाम हो गई तो भी कोई हक़ रतनसिंह का नहीं रहा जो रतनसिंह को कोई दावा होवे तो अदालत दीवानी से पहले अपना हक़ साबित करे तब फ़ायदा उठा सकता है न कि इस मुक़द्दमा में –

७ – जब गिरों के रुपिया का देना साबित नहीं है तो दावा रेहन सूद का भी अदालत मातहत ने डिसमिस किया सो है सब वजह ऊपर लिखी हुई है कर उम्मेदवार हूं कि पीछे रहने फ़ैसला मातहत के डिकरी दख़ल था नेज़ ज़मीन दावा की हुई की मैं रहक में डिकरी ऊपर मुद्दआअलैहुमा के जारी की जावे मैं अपीलेन्ट किनारा मेरा नीचे लिख्या है इक़रार करता हूं कि बदौलत इस अपील की आज तक मुद्दई को समझ बूझ

है ठीक और दुरुस्त है -

दस्तख़त हिंदी ठाकुर बलदेवसिंह

ठाकुर बलदेवसिंह बेटा सतसिंह कौम पवार
मुक़ाम जमालपुर परगना लखीमपुर ज़िला
मुहर मजिस्ट्रेट साहिब बहादुर ज़िला
दस्तख़त रजिस्ट्रार ता० ८ जुलाई

दरख़्वास्त उज़रदारी

असग़र अली उज़रदार

बनाम

ज़ाहिद बख़्श मुद्दई

ग़रीबपरवर सलामत इसकि नालिश पर
लिखे मुक़द्दमा मुद्दई ने ज़ाहिराह ज़ाहिद बख़्श मुद्दई
सनाह बहरामघाट पुलकुकनाईल बनाम
मड़क समेत बाक़ी पिछले साल अहमद हुसेन मुहम्मदा
बिर्नोर ज़ैन: के फ़ैसला के पहले अली है
मेहुदे की ज़ाहिराह क़रार है कार दाख़िल या पाने मुस्तहक़
क़रार करादी है मगर मनेहर को तूपिदा वसवल दुरुस्त
लिखी हुई ज़ाहिराह से कुछ वास्ता दस्तख़ती अहमद हुसेन

और सरोकार नहीं है क्योंकि असल रुपिया सूद डिगरीदार का था और महम्मद हुसेन बिहिश्तखान

मेरे रूबरू लिखा तारीख २ जनवरी सन १८७९ ईसवी

वाली और अहमद हुसेन मुद्दआ अलैह कागिद की तरह हमारी तरफ से कामठेकों का किया करता था सो मैंने दिहली की तसदीक इकरार नामा रजिस्टरी किया हुआ लिखा हुआ अहमद हुसेन मुद्दआ अलैह तारीख ७ जुलाई सन १८७९ ईसवी से आखीर तक से साबित है ७ से इकरार हूं कि आधि की तहसील के पीछे कुरकी की हुई जायदाद कुरकी से छोड़ दी जावे और खर्चा मुद्दई से दिला पावे—

मैं डिगरीदार कि नाम से ना अपर लिखा है इकरार करता हूं कि जो कुछ इस अरजी में लिखा है सो समझ बूझ के बहुत ठीक ठीक और दुरुस्त है—

दस्तखत ... तारीख ... १८७९ ई० ...

१० अप्रैल ... नकल मुताबिक ... ७२३१

मिसिल मुकद्दमा आलमखान ... तमाम

... २३०६

... मिसमई

नम्बर मुकद्दमा ... ... रजिस्टर—२ १२६—

ઠામીમાં ત્નાલિકુ				
મીરાં મ્યાંના ૧	નમબર ખ્યાના ૨	તસ્ત્રીક ખ્યાના ૩	તારીખ તાલિકા કરેલી	તારીખ કૈસલા
૨૭૦૯ ત્નાગાન	૨૯	ફિરમન ૩ ફુરાદ૨ ત્નાગાન	૨ મઈ સન ૧૮૭૯ ઈસવી	પહિલી જુન સન ૧૮૭૯ ઈસવી

ફેહરિસ્તમીસીલમુકદ્દમા ત્નારજી મહમ્મદ હાફિજ ત્નબદુ લ્લા રહનેવાલા કાકોરી જિલા લખનૌ દાખિલ ત્નાપનેકુ ત્નાગાન સન્ ૧૮૭૯ ઈસવી—

ઇબારત મેં નખ્ય લેનેકી	તારીખ કાગજાત	ઇબારત સે ખ્યાનિશ કરને કી	તારીખ કાગજાત	
નમબર ૧ ૩સ ફેહરિસ્તકી	૨૭	નમબર ૬સ્તમ્ભન	૨૭	
નંબર ૨ ત્નરજી હાફિજ મહમ્મદ ત્નબદુલ્લા	૨૭			
નમબર ૩ કાગજાત ફરમોં કે	૨૭			
નમબર ૪ ઇનકારી ત્નાંગ્રેજી	૨૭	૧૭ જુલાઈ સન્ ૧૮૭૯ ઈસવી		

નમ્બર ૨૭૭૬ વસિસન ૧ ત્નાગાન—

મહમ્મદ હાફિજ ત્નબદુલ્લા બેટા મોલવી મજહર ત્નલી રોમ ક્ષેત્ર પેશઃ નોકરી રહનેવાલા મહલ્લા હકની ગોળા

क़सबा काकोरी तहसील ज़िला लखनऊ मुद्दई

टिकट ।≡) का चिपका है

क़िस्म ४२ रेन्ट लगान

बनाम

इनवा बेटा गब्बू क़ौम चमार काश्तकार और रहनेवाला महल्ला सलामी गढ़ी क़सबा काकोरी तहसील और ज़िला लखनऊ मुद्दआ अलैह

दफ़ा ८३ ज़िमन २ रेन्ट १६ सन् १८६८ ईसवी—

दावा दिलापाने ३॥।) बाक़ी लगान सन् १२८२ फ़सली बाबत ज़मीन ३६२ नम्बरी १७५० जो क़सबा काकोरी में है जिसके गवाह मौजूद हैं और साफ़ साफ़ हाल यह है कि मुद्दआ अलैह इनवा ने इस ज़मीन को मुद्दई से १७) रुपिया साल पर लेकर खेती की और उसमें से १३।) अदा किया और जो बाक़ी है नहीं देता है जिस रुपिया का दावा किया गया है वह सन् १२८२ फ़सली तथा आखिर जून सन् १८७५ ईसवी जिसमें मुद्दआ अलैह को अदा करना था और यही तारीख़ दावा करने की है उम्मेदवार हूं कि दावा किया गया रुपिया अदालत के ख़र्चा समेत अदालत से दिलाया जाय—

नम्बर	नाम खेत	तादाद ज़मीन	तादाद लगान
१७५०	फुलवारी	३६२	१७)

वसूल १३।)

बाक़ी ३॥।)

मैं मुद्दई कि नाम मेरा इस अर्ज़ी में लिखा है इक़रार

कागदाहुं तिमेरी समझ मुहरमें जोकुछ हुकम में लिख्या है सबठीक
ओरदुरुसत है-

६० महममद अबदुल्ला

[illegible]

बराबरमे धवल गनाई आवती
लिखनेवाला सन ६ पालना

२३६

नम्बर हुकम नामीयह हुकम हुजूरमुबारक हवाला आवली

पहिलीमईसन तफसीलमुबारकसिंहजीका

१८७६ मुहरहुईने खुद जिसपरआसल

हे बोगनसहीत हुकम लिख्या हो

किया जोग मुनग हो-

हवाला नम्बर ओर नामीय
गयो जोगावमें हुकम आपि हो

હુકમહુઆ

૯ મઈ સન્ ૧૮૭૨ ઈસવી નાલિસહાય મેં લિખને કે વાસ્તે
હેમન સાહિબ બહાદુર કી ખિદમત મેં ભેજા જાવે—તારીખ
પહલી મઈ

કો ૧૮. ફીસ ।≡) ઔર તલબાના ।) ચિપકા હૈ

દસ્તખત હાકિમ   ૨૬ નમ્બર નાલિસહાય

૨ મઈ સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી પેશ હોકર નાલિસહાય મુદ્દઈ ઔર ઔર લોહપર
ફરીક સમ્મન જારી કિયા જાવે—કિ—
પહલી જુલાઈ સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી કો હાજિર હો—
દો પરત સમ્મન લિખે જાવે

લાલતા પરસાદ   દસ્તખત હાકિમ

<u>૬૪</u>

પહલી જૂન સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી ૨૬૦૪

આજ મુકદ્દમા પેશ હુઆ જિનકા મુકદ્દમા થા આપ
હાજિર હુએ ઔર ઉનકા ચૌકીદાર ઔર અવહુલ ગ઼ની
રહને વાલા લોકા કોની ઔર ચૌધરી હયાત આ ગયા હૈ
મુદ્દઈ કા બયાન લિખા ગયા મુવાફિક ... જાવે ... અંગરેજી
કે—

હુકમહુઆ

ફીસ ।।) ઔર ખરચા મુકદ્દમા ।≡) કુલ ૧≡) મુદ્દઈ
કે હક મેં દી ગઈ મુકદ્દમા દાખિલ દફતર હો—
પહિલી જૂન સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી—

દસ્તખત હાકિમ

રસદામપ ।≡)   તલબાના ।)

४५

मुक़द्दमा लगान बअदालत जनाब हेमन साहिब बहादुर कलक्टर ज़िला बीबीगंज—

नम्बर मुक़द्दमा	१२६६
नाम मुद्दई नाम मुद्दआअलैह	हाफ़िज़ अब्दुल्ला दरबाँ
दावा	३॥) बाक़ी लगान बाबत सन् १२६८ फ़सली
तारीख़ दाख़िला अर्ज़ी तारीख़ पेशी	२ मई सन् १८७६ ई० सवी पहली जून सन् १८७६ ई० सवी

अराज़ी का रक़बा ५२

लगान १७)

वसूल ३६)

बाक़ी ३॥)

उज़्र मुद्दआअलैह दरबाँ

६) मैं लगान के हैं - पट्टा मेरे पास नहीं है - क़बूलियत मैं ने कभी नहीं लिखी मैं इस ज़मीन को तीन बरस से ज़राअत से जोतता हूं और ६) बीघा सालाना अदा करता हूं १२) के हुआ हूं और मैं ने ४॥) देने का वादा कर लिया था लेकिन मुद्दई ने ३॥) के चने ज़बरदस्ती मुझ से ले लिये तो

अब मुद्दई को ॥।) देना बाक़ी रहे हैं- मैंने २६।) तीन बरस में अदा किये- ४) रुपिया मैंने पहले साल में दिये और १३) रुपिया दूसरे साल में और ९।) तीसरे साल में-

जवाब मुद्दई

मुद्दआ अलैह पार साल का ज़िकर करता है और इसने २६।) तीन बरस में दिये हैं- सन् १२८३ फ़सली की बाबत २०।)

दस्तख़त हाकिम

१

अमूर तनक़ीह तलब

या वह काम जिन में सबूत देना दरकार है

१- तादाद लगान जो मुद्दआ अलैह से वाजिबुल अदा है और बाक़ी है किस क़दर है-

२- मुद्दआ अलैह ने सन् १२८३ फ़सली में किस क़दर अदा किया-

इज़हार रुपनारायण

सही सही इक़रार करता है ज़ात पासी रहनेवाला मौज़ा ... जब मुद्दआ अलैह पास सम्मन पहुंचा तो उसने कहा कि जो लगान सर ज़िम्मे बाक़ी है मैं उसको अदा करूंगा-

दस्तख़त कप्तान हेमन

साहिब बहादुर-

यह मैं नहीं जानता हूं कि मुद्दआ अलैह किस क़दर लगान अदा करता है-

दस्तख़त हाकिम

इज़हार अबदुल्ला ग़नी सही सही इक़रार करता है ज़ात

ज़ोफ़ गहने वाला का कोनी बेटा अंसारी अली उमर ५० बरस—

एक महीना का अरसा हुआ कि मुद्दआ अलैह का हाल था कि मैंने जिसमें ३॥) देना है और यह कि मेरा माल का ६) रुपिया था लेकिन दो बरस से इज़ाफ़ा किया है और २७) रुपिया कर लिया है मुद्दआ अलैह चार बरस से खेती करता है और मुद्दई के पास तीन बरस से जोता है पहले साल में पैदा था और उसके पीछे इज़ाफ़ा लगान का पैदा नहीं हुआ और मैंने सामने मुद्दआ अलैह ने कुछ उज़्र नहीं किया और मैंने सामने मुद्दआ अलैह ने ७) देने का इक़रार नहीं किया—

इज़हार कप्तान हेमन साहिब बहादुर

इज़हार चौधरी हफ़ीज़ अली सही सही इज़हार करता है ज़ुल्म ज़ोफ़ गहने वाला का कोनी बेटा रहमान अली— मेरे सामने लगान मुक़र्रर नहीं हुआ न पहले क़बूलियत लिखी गई मुद्दआ अलैह ने मेरे सामने कुछ नहीं उज़्र किया लेकिन मुद्दआ अलैह ने मेरे सामने एक रुपिया चौदह आने १॥=) के धनहिये और ३॥) बाबत हिसाब किताब पिछले सालों के बाक़ी निकले थे

इसतफ़सार हाकिम

मुद्दई

मैंने क़बूलियत नहीं लिखी हिसाब नहीं किया और कोई गवाह सबूत नहीं है—

फ़ैसला।

मुद्दई २७) सालाना के हिसाब से लगान पाने के लिये मुद्दआ अलैह पर दावा करता है और मुद्दआ अलैह फ़क़त ६) साल देना क़बूल करता है और मुद्दई के गवाहों के इज़हारों से साबित है कि पहले ६) रुपिया सालाना था और उस के पीछे मुद्दई ने उसको २७) तक बढ़ाना चाहा लेकिन इक़रारनामा लिख्या हुआ इस इज़ाफ़े लगान का जो मुद्दई ने तजवीज़ किया नहीं है तो जब इक़रारनामा मौजूद नहीं है तो उसकी डिकरी नहीं हो सकती इस के सिवाय हमको सबूत नहीं है कि किसी साल में मुद्दआ अलैह ने २७) मुवाफ़िक़ दावा मुद्दई के अदा किया हो इस वास्ते हम समझते हैं कि सन् १२८१ फ़सली से लगान फ़क़त ६) सालाना था—

डिकरी बाबत तीन साल लगायत साल तमाम—

२७) कुल

२६॥) वसूल

॥।) बाक़ी

डिकरी

मुद्दई के हक़ में तादादी ॥।) मय खर्चा समेत जारी हो

हिसाब खर्चे का।

हाकिम अब्दुल्ला के मुक़द्दमा में मुद्दई

बनाम

हनवा मुद्दआ अलैह

પર્ચા મુદ્દઈ   પર્ચા મુદ્દા અલૈહ

[illegible]

[illegible]

સમ્મન મુદ્દઆ અલૈહ કો નામ વાસ્તે જવાબ દેહી મુકદ્દ-
મા મુતાબિક દફ઼ા ૬૪ ઐકટ ૧૪ સન ૧૮૫૯ ઈસવી-
નમ્બર મુકદ્દમા ૨૩૬—

અદાલત ઐકટ લગાન ફ઼લ્લાસ કપ્તાન હેમન સાહિબ
બહાદુર અસિસ્ટંટ કમિશનર બહાદુર લખનઊ મુકામ
કોઠી કૈસરબાગ

હાફ઼િજ઼ મહમ્મદ અબ્દુલ્લા બેટા મોલવી મજ઼હર
અલી કૌમ શેખ રહનેવાલા કસબા કાકોરી મહલ્લા
હજ઼ની ટોલા તહસીલ ઓર જિલા લખનઊ   મુદ્દઈ
વનામ
દનવાં બેટા ગજ઼વા કૌમ ચમાર રહનેવાલા કસબા કાકોરી
મહલ્લા સલામી ગઢી—   મુદ્દઆ અલૈહ
દાવા રૂ ૩॥) બાબત બાકી લગાન
વનામ દનવાં બેટા ગજ઼વા કૌમ ચમાર રહનેવાલા મહલ્લા
સલામી ગઢી કસબા કાકોરી—
જોકિ હાફ઼િજ઼ મહમ્મદ અબ્દુલ્લા મુદ્દઈ બેટા મોલવી
મજ઼હર અલી રહનેવાલા કસબા કાકોરી મહલ્લા
હજ઼ની ટોલા ને નાલિશ નમ્બરી ઇસ અદાલત મેં વાસ્તે
દિલાયાને રૂ ૩॥) બાબત બાકી લગાન દાયર કી હૈ—
સો તુમ કો હુકમ હોતા હૈ કિ તુમ પહલી તારીખ જૂન સન

१८७६ ईसवी वक़्त १० बजे दो पहर को हम अदालत में आप ही या मारफ़त कारिंदा अपने या वकील अदालत के जो मुक़द्दमा के हाल से वाक़िफ़ हो और मुक़द्दमा की सब बातों का जवाब दे सके या उसके साथ कोई ऐसा शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालों का दे सके—वास्ते जवाब देही और दावा ऊपर लिखे हुए मुद्दई के हाज़िर हो और यही तारीख़ जो तुम्हारे हाज़िर होने के लिये मुक़र्रर है वास्ते फ़ैसले मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है सो तुमको चाहिये कि तुम अपने सब गवाहों को इसी तारीख़ पर हाज़िर करो और तुमको इत्तिला दी जाती है कि जो तुम उस रोज़ हाज़िर अदालत न होगे तो मुक़द्दमा ग़ैर हाज़िरी तुम्हारे सुना जावेगा और फ़ैसला होगा सिवाय इस के तुमको चाहिये कि अपने साथ जिन को मुद्दई देखना चाहता है और कोई दस्तावेज़ जिसको तुम वास्ते ताईद अपनी जवाबदेही के ज़रूर समझते हो लाओ—

तारीख़ २ महीना मई सन् १८७६ ईसवी—

जब तजवीज़ करने वाला

याददाश्त – तलबाना सिपाह अदालत मुताबिक़ पहले इस सम्मन के जारी होने के दाख़िल होना चाहिये और तारीख़ पहुंचने सम्मन से मुद्दाअलैह को कम से कम एक हफ़्ता की मुहलत वास्ते हाज़िरी और जवाबदेही के मिलना चाहिये–

नम्बर २४५९४ अमीर खां तारीख़ ६ मई सन् १८७६ ईसवी

ળના વ લ્લા લી

ફુકમ હુજૂરસે મુતાબિક પતાવલાને મુદ્દઈ કે લડકે કે
તાબીખ ૯ મઈ સન્ ૧૯૦૭ ઈ ઈસવી રફ્ત ૧૨ વજે દિન કો અપ
મકાન મુહલ્લા લાલૈહકે વાપા મગર મુદ્દઈલ્લા લ્લૈહ નહીં મિલા
માલૂમ હુઆ કિ કહીં ગયા હૈ શામ તક આવેગા સો મજબૂની
સે સમ્મન મુદ્દઈલ્લા લ્લૈહકે મકાન કે દરવાજે: પર જિસમકાન
મેં કિ વહ રહતા હૈ દાપવાસી ગવાહોં કે સામને ચિપકા દિયા
વાસ્તે ઇત્તિલા કે હુજૂર મેં રપોર્ટ કી - તારીખ ૧૨ મઈ
સન્ ૧૯૦૭ ઈ ઈસવી -
દસ્તખત અમીનખાં ચપરાસી   ૯ વહાદુર લલી નાજિર
૭ તલવાના ૫ મઈ સન્ ૧૯૦૭ ઈ ઈસવી
દરજ રજિસ્ટર હુઆ -
૯ તારીખ કો ન મિલને મુદ્દઈલ્લા લ્લૈહ કે વાકૂ ૩ વજે દિન કો મુતા-
બિક વતલાને મહમ્મદ શફીઉદ્દીન મુદ્દઈલ્લા લ્લૈહ કે
મકાન પર ચિપકા દિયા લો ગવાની માં મુદ્દઈલ્લા લ્લૈહ કે
દરિયાફ્ત હુઆ કિ કહીં ગયા હૈ દો દિન સે -
ગવાહી બુધના ચૌકીદાર રહને-   ગવાહી શેખ નબી વખ્શ
વાલા કસવા કાકોની   રહને વાલા કસવા કાકોની

મહમ્મદ શફી વકીલ મુદ્દ
મુકાબિલા કિયા ગયા ઠીક હૈ
મિસિલ મુકદ્દમા દીવાની
૨૯ ફર્વરી ઝૂલોબા
પપાના મહોના -

वानरोपानलिये हुवे मुकद्दमा की मिसिल के कागजात हैं	१२ नम्बर मोहरा किसम रनम बर द दफ्तर के रजिसटर में लिया गया

नम्बर मुकद्दमा		१२७
तारीख मुकद्दमे के दायर करने की		तारीख २६ जनवरी सन् १८७५ ईसवी
तारीख फैसला		तारीख २६ फरवरी सन् १८७५ ईसवी
नाम मुद्दई		रामपरसाद बेटा छोटू राम
नाम मुद्दाअलैह		डूमामी
दावा	तादाद दावा	५५)
	किसम दावा	तमस्सुक की बुनियाद
नाम फैसला करने वाले हाकिम का		पंडित श्यामनरायन साहिब एकसट्रा असिसटैन्ट कमिशनर

अलिफ़ किता बे किता
फ़र्दी फ़ेहरिसत हुकमों का परचा वकालतनामा मारफ़
१क १क सममन १क
अर्ज़ीदावा तमसमुक मिती भादों वकालतनामा
वदी सप्तमी सन् मुद्दआअलैह
१२७५ फ़सली
१क १क १क
नकलीफ़ारसी सनद तमसुक माघ
मदे डिकरी वदी एकादशी रोज़
ई १८६६ विरहसपति सन्
१२७४ फ़सली
मिसल दुखलाय १क
डिकरी नम्बरी १८६
फ़ैसला ८ मई सन् कोरटफ़ीस ३।=)
१८७५ ईसवी अर्ज़ीदावा ३।=)
१क तलबाना ।=)

टिकट	टिकट	टिकट
।=)	२)	३)

८ जनवरी सन् १८७५ ईसवी
दसतख़त हाकिम
अर्ज़ीदावा अर्ज़ी रामप्रसाद

रामप्रसाद वेद छोटेराम माड़वारी रहनेवाला मौज़ा
दारउटौंखापरगना महोना तहसील मलिहाबाद ज़िला —

लखनऊ मुद्दई

बनाम

रुस्तमी वल्द छोटे क़ौम हलवाई रहनेवाला और दूकान-दार कटौंधा परगाना महोना तहसील और ज़िला लखनऊ

मुद्दआअलैह—

दावा - दिलापाने ४५) रुपिया असिल क़र्ज़ा सूदसमेत जैसा कि नीचे लिखा है तमस्सुक तारीख २० अगस्त सन् १८६६ ईसवी को रजिस्टरी किया गया इस तरह पर कि मुद्दआअलैह ने ३०) रुपिया मुझ मुद्दई से क़र्ज़ लेकर वादा रुपिया देने का जोकि तमस्सुक में लिखा हुआ है महीना वैशाख सन् १२७५ फ़सली तथा मई सन् १८६८ ईसवी का किया था और यह इक़रार था कि जो रुपिया वसूल न हो तो रकदूकान जो मौज़ा कटौंधा में है मुझ महाजन का दख़ल करादेवे लेकिन अब वादा भी गुज़र गया और रुपिया भी नहीं वसूल हुआ और अब मैं दूकानपर दख़ल चाहता हूं तब फ़रेबदही करने को तैयार होता है सो अदालत में नालिश करके और तारीख ६ मई सन् १८६९ ईसवी तारीख बुनियाद दावा की क़रार देकर चाहता हूं कि दावा किया गया रुपिया समेत खर्चा अदालत के दिलापाओ— ४५)

असल सूद डेढ़ा के हिसाब से

३०) १५)

मैं मुद्दई कि नाम मेरा कुमलागणी रसीद
दावा में लिख्या है इस वास्ते करता हूं ४
कि दयान जो कुछ इस ... ली में बाकी
लिख्या है मेरी समझ बूझ में ठीक ८५)
और दुरुस्त है
दस्तखत रामपरसाद
दरूबरू मुद्दई —

रामपरसाद मुद्दई फरीयादी
... ता तारीख ... सन् १८७४
... ली ... लिखी

तारीख ... सन् १८७४ ईसवी
रामपरसाद —
दस्तखत हाकिम —

मैं कि कुमामी हलवाई रहनेवाला मौजा कुटोणा का हूं— ३७) रूपिया कि बाबत उसके २५) रूपिया होते हैं राम- परसाद मारवाड़ी दूकानदार वासी कुटोणा से दो ३) रूपिया सैकड़ा माहवारी के हिसाब से करज लेकर अपने खरच में लाया इकरार यह है कि रूपिया ... किया गया सब सूद समेत आखिर महीना वैशाख में रामपरसाद को अदा और देवाकर हूंगा और जो

शायद ज़िकर किया गया नूरिया इसलिये कुंए वाहा के
मुवाफ़िक़ न पहुंचे तो महाजन को इख़्तियार है कि एक
दूकान जो इटौंजा के बाज़ार में है और उस पर अपना
क़ब्ज़ा माल का नहीं है   उस पर अपना क़ब्ज़ा और
दख़ल कर लेवे हमको कभी कुछ उज़्र न होगा सो लि
सनद तमस्सुक की लिख दिया कि सनद रहे—
तारीख़ मिती माहों वदी सत्तमी सन् १२७५ फ़सली—

द० हिंदी इमामी   गवाही दस्तख़त   गवाही दस्तख़त
हिंदी   हिंदी

५८०   १२५६७

२७ जून सन् १८६६ ईसवी

आज तारीख़ १० महीना अगस्त सन् १८६६ ईसवी—
मैं वजेहदिन को इमामी बेटा हो ट क़ौम हलवाई रहने
वाला इटौंजा उमर ४७ बरस मुन्नू हुवे बेटा गोबर हुवे
रहनेवाला क़सबा—पतागाव केसरी बेटा कोइली क़ौम
नाई रहनेवाला सिंधामऊ की पहिचान से तीन सनदें लिखी
गई कागज़ इस्टाम्प क़ीमती।) को हर्फ़ हर्फ़ तसदीक़
किया पीछे सरिश्ता के मुवाफ़िक़ रजिस्टरी लिखके इस
सनद को सनद लिखनेवाले के हवाले किया—

द० हिंदी   गवाही द० हिंदी गवाही द० हिंदी

द० हनूमंतराय रजिस्टरार
महोना   मोहर

नम्बर शुमार	तारीख हुकुम	खुलासा हुकुम	[illegible]	[illegible]
		मरसिश्ता मुनसरमी वकील मुद्दई ने आप ही देकर नाम ही कि पी हुकुम हुआ कि		
१	८ जनवरी सन् १८७४ ईसवी	खिदमत में पण्डित शाम नरायन साहिब वकील हाकिम पेश होकर जो मरदिकदमा (?) जो नाम असल सनद की नकल थी है दस्तखत हाकिम		
२	६ जनवरी सन् १८७४ ईसवी	नम्बर २२ रजिस्टर दीवानी मुन्सिफी का के पीछे हुकुम हुआ ३१६ रजिस्टर में दर्ज हो कर ईसम् मन २९ फरवरी सन् १८७४ ईसवी मुकर्रर हो कर जारी हो कि मुद्दई मुकर्रर तारीख पर हाजिर हो दस्तखत हाकिम	दोपहर समय लिखे गये १९६२	२ जनवरी कोर्ट फीस लगा है
३	२९ फरवरी सन् १८७४ ईसवी	आज मुद्दई जो गोपाल नाम वकील मुद्दआ अलैह हाजिर थे पेश हो कर फारसी तजवीज के मुवाफिक १९८२ हुकुम हुआ कि नालिश मुद्दई के हक में मुद्दआ अलैह के होवे खर्चा जिम्मे मुद्दआ अलैह जारी हो कर डिग्री दस्तखत हाकिम		

२६ फ़रवरी सन् १८७४ ई०

रामपरसाद – मुद्दई – बनाम – कुआमी हलवाई मुद्दआलैह दावा ४४) रुपिया क़रज़ा बमय सूद कि जिसकी डिगरी हुआ—

जबकि रामपरसाद मुद्दई और गोपाल नरायन वकील मुद्दई और कुआमी मुद्दआलैह और पंडित परानाथ वकील मुद्दआलैह अदालत में पेश हुआ

बयान गोपाल नरायन वकील मुद्दई—

कुआमी मुद्दआलैह ने रिहन नामा लिखा और रजिस्टरी कराइ दिया तारीख़ २० अगस्त सन् १८६६ ईसवी को एक दूकान जो कटोरा में है ३०) रुपिया पर रामपरसाद मुद्दई के पास गिरौ रक्खा और एक साल के वादा पर २) रुपिया सैकड़ा माहवारी सूद देने का इक़रार कि जो असल रुपिया सूद समेत न अदा हो सके तो दूकान पर दख़ल दूंगा सो लिखा है के भीतर रुपिया अदा न होने से मुद्दआलैह ने दूकान पर दख़ल मुद्दई को दिला दिया — तीन साल मुद्दई का दख़ल रहा तीन साल बाद कि मुद्दआलैह ने दूकान से मुद्दई को बेदख़ल कर दिया है अब मुद्दई ३०) असल और ४४) सूद के अंक के हिसाब से कुल ४४) रुपिया का दावा हम है हिसाब के मुताबिक़ सूद मुद्दई ने तलब किया है—

इसतज़हार हाकिम – २६ फ़रवरी सन् १८७४ ईसवी—

इज़हार पंडित परानाथ वकील मुद्दआलैह —

દસ્તાવેજ઼ ઠીક હૈ ઉજ઼્ર યહ હૈ કિ તમસ્સુક કા રૂપિયા મુદ્દઆ
અલૈહ ને મુદ્દઈ ગામપરમાદ સે ઊપર પ્રાગદાસ કે હવાલા
કિયા થા ઔર પ્રાગદાસ કા ક઼ર્જ઼ા તમસ્સુક કે ઊપર માઅ્મી
કે થા ઇસલિયે ઇસ માઅ્મી ને ગામપરમાદ કો તમસ્સુક લિખ કર
રૂપિયા મુદ્દઆ અલૈહ કો ક઼ર્જ઼ા દિયા કે દેને કો પ્રાગદાસ કે લિયે દિલવાઈ
પ્રાગદાસ કો કરાદી થી ઔર પ્રાગદાસ ને ઉસ દિલવાઈ કો
મંજ઼ૂર કર લિયા થા જ઼બાની પ્રાગદાસ કે માલૂમ હુઆ કિ ઉસ
ને તમસ્સુક ગામપરમાદ કો ફેર દિયા હૈ ઔર કુલ રૂપિયા ઉસ કો
ગામપરમાદ સે વસૂલ હુઆ હૈ કુછ રૂપિયા બાક઼ી
હૈં — સિવાય ઇસ કે તીન સાલ તક દૂકાન કબ્જ઼ા મુદ્દઈ
મેં રહી હૈ દો રૂપિયા માહવારી કિરાયે કે હિસાબ સે કુલ
રૂપિયા હિસાબ કિયા જાવે તો તમામ ક઼ર્જ઼ા મુદ્દઈ કા
બેબાક઼ હો જાતા હૈ —

અદાલત કા સવાલ [illegible]

અગર તમસ્સુક કા રૂપિયા વસૂલ નહીં હુઆ થા તો મુદ્દઈ કો દૂકાન પર કબ્જ઼ા ક્યોં દિયા

દો રૂપિયા માહવારી કિરાયા પર યહ દૂકાન મુદ્દઈ કો દી થી તમસ્સુક કે મુવાફ઼િક઼

તારીખ઼ ૨૯ ફ઼રવરી સન્ ૧૮૭૪ ઈસવી —

દસ્તખ઼ત હાકિમ

ખરાબ કા ... શકીલ મુદ્દઈ-
પરાગદત્ત ... તીસ રૂપિયા જિસ મેં દુમાસી કે થા ઔર
દૂકાન જિસ ની ... દુમાસી ને કિસી કદર રૂપિયા પરાગ-
દત્ત કો આપ હી અદા કર દિયા હૈ ... રૂપિયા બાકી
રહા થા રામપરસાદ ને વાસ્તે દેને પરાગદત્ત કે ... રૂપિયા
પહલે દુમાસી કો દિયા દુમાસી ને રામપરસાદ કો તમસ્સુક
પરાગદત્ત સે ફેર કર ... દિયા ... મુદ્દઈ ને ... દુમાસી
કો દિયા સબ રૂપિયા મુદ્દઆઅલેહ કો તમસ્સુક કા દિયા
ગયા થા ૨૯ ફરવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી-
દસતખત હાકિમ
ઉસ ... પરાગદત્ત કે નામ કા તમસ્સુક મુદ્દઈ કે
વકીલ ને દાખિલ કિયા ઔર દુમાસી ને તમસ્સુક દેખ
કર બયાન કિયા યહી તમસ્સુક હૈ તમસ્સુક પઢા ગયા-
... જિનસે સફાઈ દરકાર હૈ-
ક્યા તમસ્સુક કા સબ રૂપિયા મુદ્દઆઅલેહ કો નહીં મિલા
થા જિસસે મુદ્દઆઅલેહ-
બયાન પરાગદત્ત ગવાહ કા ઠીક ઠીક-
બાપ કા નામ મનનાલાલ ... મૌજા ... ના
જિલ્લા ... ઉમર અંદાજન ૫૦ સાલ ને બયાન
કિયા કિ ૩૦) રૂપિયા પરદેહ દુકાન પહલે મેં રામ દુમાસી
હલવાઈ કી ... સે ગિરવી થી મેં ને છુડાણા પર દુમાસી
ને રામપરસાદ સે ... લેને કી બાત ચીત કી રામપરસાદ
ને મુઝસે પૂછા કિ યહ દુકાન મેં ગિરવી કરૂં મુઝકો

ને કહા મુહ કો રૂપિયા પાનેસે ગુનહ હૈ ક્રમામી ને તમસસુકનામ
પરસાદ કો લિખ્ખકર કાગજ લિયા ઔર મૈને સામને દિયખા
કિ ૩૭) રૂપિયા મેં ૭) રૂપિયા પહલે વસૂલ હો ગયા થા ૩૦) રૂપિયા
બાકી થા યહ ૩૦) રૂપિયા રામપરસાદ મુહ કો દેવેગા સો ઉસી
રોજ જિસ રોજ કિ સનદ બદલી ગઈ વહ ૫) રૂપિયા ક્રમામી
કે દિલાને સે રામપરસાદ ને મુહ કો દિયે ઔર બાકી રૂપિયા
કા દેના ઊપર તમસસુકની હોણાને કારણ કે ગુણા રહા-
મણહર અપને બાપ કી બીમારી સે અપને ઘર જાને ગાસ્તા
તમસસુક રામપરસાદ કો હવાલે કર દિયા કિ જબ ક્રમામી
સે ઉસ કો યહ રૂપિયા મિલે તુમ યહ તમસસુક ક્રમામી કો દેના
ફિર મુહ કો માલૂમ નહીં હૈ કિ રામપરસાદ ને ક્રમામી કો
રૂપિયા દિયા થા યા નહીં યહ તમસસુક મણહર ને ઉસી રોજ રામ
પરસાદ કો દિયા થા જિસ રોજ તમસસુક જિસકા કિ ધરા
કિયા ગયા હૈ લિખ્ખા ગયા થા-
તારીખ ૨૯ ફરવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી-

દસખત હાકિમ

એક ગવાહ એક દિન મેં લિખ્ખા ગયા-
દસખત રામ નરાયન મોહરિર

તરજીમ અદાલત

ક્રપાલાલ પંડિત રાયામ નરાયન એક્સટ્રા અસિસટેન્ટ
કમિશ્નર જિલા લખનઊ-
તારીખ ૨૯ ફરવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી

રામપરસાદ મુદ્દઈ

बनाम

इमामी हलवाई मुद्दआ अलैह—

दावा ४५) रुपिया जिसमें असिल और सूद तमस्सुकी रहिनदस्ती दिया हुआ—

रामप्रसाद मुद्दई और गोपालनारायन वकील मुद्दई और मुद्द इमामी मुद्दआ अलैह पंडित प्राणनाथ वकील मुद्दआ अलैह [illegible] इमामी मुद्दआ अलैह ने तारीख १० अगस्त सन् १८६८ ईसवी को अपनी दुकान ३०) रुपिया का रहनामा लिखकर टोंक में है रामप्रसाद मुद्दई के गिरो रक्खा सूद १) माहवारी सैकड़ा पीछे देने का इक़रार करके काग़ज़ लिखा इक़रार किया है कि महाजन आपही दुकान पर क़ब्ज़ा करले और एक साल के अंदर में असिल और सूद का रुपिया अदा न होने से मुद्दई को दूकान पर दख़ल मुद्दआ अलैह ने दिया तीन साल तक दख़ल मुद्दई का दूकान पर रहा अब तीन साल हुये हैं कि मुद्दआ अलैह ने मुद्दई को दूकान से बेदख़ल कर दिया है सो मुद्दई ३०) रुपिया असिल और १५) सूद डेउढ़ा कुल ४५) रुपिया का दावादार है प्राणनाथ वकील मुद्दआ अलैह का जवाब यह है कि सनद तमस्सुक की ठीक है इस सनद का रुपिया मुद्दआ अलैह ने आपही लेकर मुद्दई से परागदत्त पहले गिरो रखने वाले दूकान को दिलवा दिया था और परागदत्त ने वह दिलवाई मंज़ूर कर लिया था फ़रीवानी परागदत्त के मालूम हुआ कि उस ने

तमस्सुक अपना नामपरसाद मुद्दई को फेर दिया है और
नामपरसाद से पैरागहतल को पांच सौ ५) रुपिया वसूल
हुआ है २५) अभी बाकी है सिवाय इसके गीलसा लाल की
दूकान मुद्दई के कबजा में रही है ५) रुपिये किराया महीने
के हिसाब से कुल रुपिया मुद्दई का वसूल होगया है —
वकील मुद्दआअलैह से पूछा गया कि जो तुमने तमस्सुक
का रुपिया नहीं पाया था तो दूकान पर कबजा मुद्दई को क्यों
दिया था उसके जवाब में वकील ने बयान किया कि पैराग-
हतल का कबजा मुद्दआअलैह ने पहले ही अदा कर दिया
था ५) रुपिया बाकी था नामपरसाद से इमामी ने ५) रुपिया
लेकर पैरागहतल को अदा करके तमस्सुक फेर करके
नामपरसाद मुद्दई को हवाले कर दिया तब नामपरसाद ने
२५) रुपिया जो बाकी रहे थे इमामी को दिया था और मुद्दई
के वकील ने पैरागहतल के नाम का तमस्सुक अदालत में
दाखिल किया जिसको इमामी मुद्दआअलैह ने मान लिया
कि यही तमस्सुक है —

तनकीहतलब यह अमर है

क्या सब रुपिया मुद्दआअलैह को नहीं मिला है — या

जिसमें मुद्दआअलैह

पैरागहतल गवाह जो कि आप अदालत में हाजिर था और
अदालत ने आप उसको गवाह कर लिया है बयान करता
है कि इमामी ने नामपरसाद को तमस्सुक लिखकर मेरे
कबजा के देने के वास्ते करजा लिया था जिसमें कि तमस्सुक

लिख्या गया था उसी रोज़ रामपरसाद ने जब इमामी को दिलवाई
कि ५) रुपिया मुद्दई को दिया और यह इकरार पाया था कि जिस
वक्त होवे पर ५) रुपिया जो बाकी रहे हैं रामपरसाद मुद्दई को
देवेगा मैंने उसी रोज़ तमस्सुक अपना रामपरसाद को फेर
दिया मगर ५) रुपिया मुद्दई को रामपरसाद ने नहीं दिया है
और इमामी ने—

मालूम हो कि मुद्दआअलैह के वकील को यह बात मंजूर है
कि कुल १०) रुपिये तमस्सुक में से ५) रुपिया वसूल हुआ है
और बाकी जो रहे वह परागदत्त को दिलवादिये थे और परागद
त्त ने वह दिलवाई कबूल करली थी सो जिस वक्त कि
तमस्सुक का रुपिया दिलवाया गया और परागदत्त ने मान
लिया उसी वक्त रुपिया तमस्सुक का इमामी मुद्दआअलै-
को वसूल होजाना ख्याल किया जाता है सिवाय इस के
तमस्सुक फेरना जो कि परागदत्त ने रामपरसाद को वापस
कर दिया था और रामपरसाद ने इस हालत में दाखिल
किया है ठीक सबूत रुपिया दिलवाई के दाखिल करने का है
पंडित परमनाथ मुद्दआअलैह का ये बयान है कि ५) रुपिया
माहवारी किराया पर दुकान मुद्दई को दी गई थी तमस्सुक
के देखने से ठीक ठीक यह बयान हुआ मालूम होता है तो भी जो
मुद्दआअलैह को दावा किराया का है तो वह मामला अलाहि
दह मुद्दई का तमस्सुक लगा मगर दस साल सूद का है और
मुद्दई ने तीन नहीं साल का सूद मांगा है डेढ़ टका के हिसाब से ५)
रुपिया यह दावा सूद का उसका बजा नहीं और उसने स्कारद

की निगाह किया है—

पंडित प्राननाथ वकील मुद्दआलैह एक उज़्र पेश की है कि दूकान पर तीन साल तक क़बज़ा मुद्दई का रहा है रुपिया किराया माहवारी के हिसाब से असिल और सूद मुद्दई का अदा हो गया है तो मुद्दआलैह के वकील ने आपही बयान किया है कि दूकान किराया पर दी गई थी तो उसके ख़िलाफ़ यह उज़्र साबित हो सकता है कि मुनाफ़ा दूकान से असिल और सूद मुद्दई का अदा हो गया है सनद में इस बात का कुछ ज़िकर नहीं है कि महाजन का दूकान का क़बज़ा होने की सूरत में किराया मकान से जो हासिल होगा वह सूद के बदले होगा या असिल व सूद दोनों में ज़िमस व क़ता कि कोई ज़िकर सनद में नहीं है तो मालूम होता है कि दोनों तरफ़ों का यह मनशा था कि सूद के बदले महाजन दूकान पर क़बज़ा कर लेवेगा जो यह मनशा दोनों तरफ़ों का होता कि किराया दूकान से जो कुछ वसूल होगा वह सूद में वज़ा होगा बाक़ी असिल में वज़ा होगा तो ज़रूर था कि सनद में यह साफ़ साफ़ ज़रूर लिखा होता ऊपर लिखी हुई बातों से दावा मुद्दई का क़ाबिल डिकरी बहाल किया जाता है—

हुकम हुआ॥

डिकरी तादादी कुल असिल और सूद बमय परसाद मुद्दई के हक़ में बनाम कुमारी हलवाई मुद्दआलैह के दी गई और ख़र्चा मुद्दआलैह ज़िम्मे मुद्दआलैह [illegible] वक़्त जारी हो— आज तारीख़ २९ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी यह डिकरी

અદાલતકી મોહર ઔર હમારેદસ્તખતસે તૈયાર હુઈ-
ડિકરી ખરચામુદ્દઈજિમ્મે ખરચામુદ્દઆઅલેહજિમ્મે
૪૫) મુદ્દઆઅલેહ મુદ્દઆઅલેહ
મુદ્દઈ
કુલસ્ટામ્પતલબાના વકાલતનામા વકાલત મેહનતાના
૨ાા=) ।=) ।।) નામા વકીલ
મેહનતાનાવકીલ ।।) ૨ાા)
૨ાા) ૨ાાા)
૪ાાા)
તારીખ ૨૯ ફરવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી-
દસ્તખતહાકિમ

ડિકરી

તજવીજુડિશલ ડિકરી અદાલત હવાલિદાઈ મુરાફિઅહ
નમ્બર ૧૨૪ દફા ૨૯૦ સન્ ૧૮૫૯ ઈસવી-
નમ્બર મુકદ્દમા ૧૨૦ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી-
અદાલત દીવાની સાહિબ ૨ક્સટના અસિસ્ટેન્ટ કમિશ્-
નર બહાદુર
રામપરસાદ બેટા છોટુરામ માનવાડી રહનેવાલા ઔર
દુકાનદાર કટોરા પરગના મહોના- મુદ્દઈ

બનામ

ક્ષમાસી બેટા છોટે કોમ હલવાઈ રહનેવાલા ઔર દુકાન-
દાર કટોરા પરગના મહોના મુદ્દઆઅલેહ
દાવા ૪૫) ગણિસ્તની કિરીકૃતે તમસ્સુક વ-
આજ તારીખ મુકદ્દમા પંડિત પ્રદ્યુમ્ન નરસિંહ સાહિબ રેલ સ્ટે

अस्सिस्टेन्ट कमिश्नर जिला लखनऊ के इजलास में नाम-
धनसाह मुद्दई और गोपाल नाबालिग वकील मुद्दआअलेह
के हाजिरी में सुनके और रूदकारात के कागज पेश हुआ
और जो सबूत गुजरानी और लिख्खे हुये मुद्दई और मुद्दआ-
अलेह ने पेश किये सब सुना गया और जो गवाह मुद्दई व
मुद्दआअलेह ने बयान किया उसको अच्छी तरह से सुन
के आखरलाम हुकम देती है और डिकरी करती है—
डिकरी वास्ते रुपया असिल और सूद नाम धनसाह मुद्दई
के हक में बनाम हुसैनी हलवाई मुद्दआअलेह कीजावे—
और खरचा जिसमे मुद्दआअलेह डिकरी अमोजानी
हो— ६॥) रुपिया
आज ता॰ तीसरी फरवरी सन् १८६७ ई॰ के साल की यह
डिकरी अदालत की मोहर और हमारे दस्तखत से की
गई—

हिसाब खरचा मुद्दई	खरचा मुद्दआअलेह
जिसमे मुद्दई आसिल	जिसमे मुद्दआअलेह
३।=) इस्टाम्प कानूनी	×
।=) तलबाना	×
३।) मेहनताना	३।) मेहनताना
वकील	।।) वकालतनामा
।।) फुटकर वकालतनामा ३।।।)	×

६ दस्तखत हाकिम

।) इस्टाम्प (डीक्री) दाखिल किया हुआ मुद्दई नालिश

ફ઼ેહરિસ્ત ૯ઈ ફ઼રવરી સન્ ૧૮૭૫

ઈસવી—

દસ્તખ઼ત હાકિમ

મૈંકિ રૂમાલી હલવાઈ રહનેવાલા મોજા રૂટોંઝા કા હૂં—
રૂ૫) રૂપિયા કિ આધે ઉસકે ૨૮) રૂપિયા હોતે હૈં પરાગદત્ત
મહાજન રહનેવાલા મોજા કુસુમરા ઇલાકા થાના સેકરણ
લેકર અપને ખ઼રચ મેં લાયા ઇક઼રાર યહ હૈ કિ રૂપિયા લિયા
ગયા અસલ ઔર સૂદ સમેત આધે આના રૂપિયા સૈકડે કે
હિસાબસે સબ મહીના વૈસાખ મેં અદા ઔર બેબાક કરહૂંગા
જો શાયદ ઇસ સનદ મેં લિખે હુવે વાદે કે મુવાફ઼િક રૂપિયા
ન પહુંચે તો મહાજન કો અખ઼તિયાર હૈ કિ એક દુકાન
મેરી જો રૂટોંઝા મેં હૈ ઉસ પર અપના કબ઼જ઼ા ઔર
દખ઼લ કર લેવૈ હમકો કુછ ઉજ઼્ર ન હોગા ઇસવાસ્તે યહ
સનદ તમસ્સુક કી તરહ પર લિખ દિયા કિ સનદ રહૈ—
તારીખ઼ માઘ વદી ૨ કાદશી હિન્દી રહસ્પત સન્ ૧૨૭૪
ફ઼સલી સમ્વત્ ૧૯૩૨—

દસ્તખ઼ત રૂમાલી હલવાઈ ગવાહી દેવીદીન
ગવાહી રામબખ઼્શ બિરહમન
રહનેવાલા રૂટોંઝા ખ઼ાસ કલમ
મહમ્મદ ખ઼ાં રહનેવાલા કુરસી

(કાગ઼ઝ કે જો દૂસરી તરફ઼ લિખા હુઆ હૈ)

૧૨૦ નમ્બર રામપરસાદ બનામ રૂમાલી વકીલ મુદ્દઈ
ને પેશ કિયા॥

हुकुम हुआ शामिल मिसिल होवे—

टिकट चिपका है

नाम परसाद

बनाम

कुआंमी हलवाई

दस्तखत

हाकिम—

मैं कि नाम परसाद बेटा छोटू राम मारवाड़ी रहने वाला

कलकत्ता—

जो कि नामा पर लिखे हुवे मुकदमा में आपनी तरफ से बाबू गोपाल नरायन वकील अदालत को वकील आपना मुकर्रर करके इकरार करता हूं कि बाबू गोपाल नरायन वकील जो कुछ इस मुकदमा में सवाल और जवाब और हुड़ पूरन करैं या अरजी दावा या और कोई सनद दाखिल करैं या फेर लेवैं वह सब वकील साहिब का किया हुआ मुझ इकरार करने वाले को आपने खास किये की तरह परमाण और मंजूर है इस वास्ते यह सनद वकालत नामा की लिख दिया कि सनद रहै तारीख ७ जनवरी सन् १८७४ ईसवी

दस्तखत नाम परसाद — गवाही शिवलाल

गवाही तेली — मारवाड़ी बकलम

वकील का नौकर — दसखती परसाद

यह कागज़ की दूसरी तरफ़ लिखना चाहिये -

दखालत नामा मंज़ूर है -

दस्तख़त गोपाललाल नागर वकील

तारीख़ ७ जनवरी सन् १८७५ ईस्वी

सम्मन   नक़्शा जुडीशल स्टाम्प नम्बर ११७

सम्मन मुद्दआ अलेह वास्ते तजवीज़ मुक़द्दमा दफ़ा मुआ-फ़िक़ दफ़ा ४६ ऐक्ट ८ सन् १८५९ ईस्वी -

नम्बर मुक़द्दमा दफ़ा १२७

दस्तख़त हाकिम

अदालत दीवानी जनाब मलाईन साहिब एक्स्ट्रा अस्सि-स्टेंट कमिश्नर बहादुर लखनऊ मुक़ाम कोठी क़ैसरबाग़ -

रामपरसाद बेटा छोटू क़ौम मारवाड़ी रहनेवाला मौज़े दूकानदार डंडोंखा परगना महोना तहसील मलिहाबाद -

मुद्दई

बनाम

दमामी बेटा छोटे क़ौम हलवाई रहनेवाला मौज़े दूकान-दार डंडोंखा परगना महोना तहसील मलिहाबाद -

मुद्दआ अलेह

दावा ४७) रुपिया क़रज़ा के

बनाम दमामी बेटा छोटे क़ौम हलवाई रहनेवाला डंडोंखा

रामपरसाद मुद्दई बेटा छोटू राम रहनेवाला डंडोंखा

ऊपर लिखे हुए ने नालिश तुमपर इस अदालत में दायर की

हिसाबाने धरु रुपिया बाबत क़र्ज़ा दायर की है सो तुम को हुकुम होता है कि तुम तारीख २९ महीना फ़रवरी सन् १८७७ ईसवी वक़्त १० बजे दोपहर इस अदालत में आप ही या मारफ़त अपने कारिंदा या वकील अदालत के जो मुक़द्दमा के हाल से वाक़िफ़ हो और कुल बातों का जो इस मुक़द्दमा की बाबत पूछी जावें उनका जवाब दे सके या उस के साथ कोई ऐसा आदमी हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके जवाब देने वास्ते नाम परवाना मुद्दई के हाज़िर हो और जो तारीख कि हाज़िरी के लिये मुक़र्रर हुई है वास्ते मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है सो तुम को चाहिये कि अपने सब गवाहों को २९ फ़रवरी सन् १८७७ ईसवी को हाज़िर करो और तुम को इत्तिला दी जाती है कि अगर उसी रोज़ तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा तुम्हारी ग़ैर हाज़िरी में सुना जावेगा और फ़ैसला होगा सिवा इस के तुम को चाहिये कि अपने साथ जिस को मुद्दई देखना चाहता है और कोई दूसरी सनद जिस को तुम अपनी जवाब दिही की मज़बूती के वास्ते ज़रूर समझो लाओ तारीख ६ जनवरी सन् १८७७ ईसवी—

जज तजवीज़ करनेवाला

याददाश्त— तलबाना जो अदालत ने मुक़र्रर किया है इस सम्मन के जारी होने से पहिले दाखिल

होना चाहिये और तारीख़ पहुंचने सम्मन से मुद्दआ-
अलैह को कम से कम एक हफ़्ता की मोहलत वास्ते
हाज़िरी और जवाबदिही के मिलना चाहिये—
२२० नम्बर २० जनवरी सन् १८७५ ईसवी
तलबाना कुंजबिहारीलाल

जनाबआली

तारीख़ २४ जनवरी सन् १८७५ ईसवी वक़्त ८ बजे
सुबह को एक सम्मन इमामी हलवाई रहने वाला
बाज़ार इटौंजा को मुवाफ़िक़ बताने और पता देने
आदमी मुद्दई के इन गवाहों के सामने जो कि इस
रपोर्ट के जानिब पर लिखे हैं देकर रसीद उस से
[illegible] पटवारी के क़लम से लिखवाकर इस रपोर्ट
के साथ पेश करता हूं—
तारीख़ २५ जनवरी सन् १८७५ ईसवी
दस्तख़त कुंजबिहारी लाल चपरासी
सरिश्ता मुन्सफ़ी

मज़कूरी की रपोर्ट से ज़ाहिर है कि सम्मन क़ायदा
के मुवाफ़िक़ दिया गया इस वास्ते हुकम हुआ कि
मिसल इजलास का होवे पेश हो—
तारीख़ २५ जनवरी सन् १८७५ ईसवी
रामप्रसाद बेटा छोटू मारवाड़ी रहने वाला इटौंजा
परगना महोना तहसील मलिहाबाद—

मुद्दई

बनाम

इमामी बेटा छोटे कौम हलवाई रहनेवाला इटौंजा
दूकानदार इटौंजा परगना और तहसील मलिहाबाद

मुद्दआअलैह

दावा ४५) रुपिया

॥)

टिकट चपका है

मैं कि इमामी बेटा छोटे कौम हलवाई रहनेवाला और दूकानदार इटौंजा परगना महोना तहसील मलिहाबाद का हूं-

जो कि मैंने सिरे पर लिखे हुये मुकद्दमा में पंडित प्राणनाथ वकील अदालत को वकील अपना मुकर्रर करके इकरार करता हूं और लिखे देता हूं कि जो कुछ पंडित साहिब इस ऊपर लिखे हुये मुकद्दमा में सवाल और जवाब और दौड़धूप करेंगे सब मुझ को अपने आप किये हुये की तरह मंजूर और कबूल होगा इस वास्ते यह सनद वकालतनामा की लिख दी कि सनद हो-

तारीख २८ फरवरी सन् १८७४ ईसवी

दस्तखत कुमामी हलवाई — गवाही रामदीन काछी
पंडित संगम लाल वकील

मुहर [illegible]

गवाही सरजूप्रसाद बेटा
गंगा प्रसाद के साला
जाति भी टोला

देखने के पीछे — हुकुम हुआ कि मिसिल में शामिल होवे

मिसिल दाखिल किये हुये मुकद्दमा की

तारीख ३ — मिसिल हुआ पंडित गोरी साहिब एक्सट्रा
मई सन् १८७५ — असिस्टंट कमिश्नर बहादुर जिला
ईसवी — लखनऊ

मुकद्दमा दीवानी

नम्बर मुकद्दमा	नाम		दावा	तारीख सन् १८७५ ईसवी	
	मुद्दई	मुद्दआलेह		मुकद्दमा के दायर करने की तारीख	फैसला
२८९	राम प्रसाद	कुमामी हलवाई	डिगरी डिकरी	२४ फरवरी सन् १८७५ ईसवी	८ मई सन् १८७५ ईसवी

तादाद कागजों की

नम्बर सिलसिला	नथथी १ नाम कागज	सफा	नथथी २ नम्बर कैफियत	नाम कागज	सफा
१	फ़ेहरिस्त	एक	१	फुकम रोकने का	एक
२ व ३	रूपरके सराकु कमके परचा समेत	दो		इत्तिलानामा मौजमनम्लौन इश्तिहार	३
४	लगणी दूणना	एक			
५	नक़शा पटवारी का दाख़िल ख़ारिज कुल्ला	५ (?) क			
६ व ७	रपोट नालिश पाडिकी दारकी रसीद समेत	दो			
	दस्तख़त				

ગામપરસાદ વનામ ફુમામી ફલવાર્ડ
વદીન મુક્ષ ઈદમા સિને પનકે પનના ફુળયાર્દ ડિકની લદાલત
નમ્વર૧૯૯

[illegible]	[illegible]	[illegible]	તવીકાતામીલ ફુકમમુંદવાળો યાનોકાનીય તામી સમેત	[illegible]	[illegible]	[illegible]
૨૨ મારચની સન૧૮૭૪ ઈસવી	મુદ્દાઈ	મનિશાંસે કેફિયાતી નદિનયોગ્ય સમેં પેશ હોવે ૨૨ મારચની સન૧૮૭૪ ઈસવી	કેફિયાપેશહુ ઈ તારીખ ૨૨ મારચની સન૧૮૭૪ ઈસવી	ચારંદફુલકીમુ ખાકિકો ફુલી ૨૨ મુખ્યાની હોવે પહિલીમારચસ ન૧૮૭૪ ઈસવી	[illegible]	
૯ ગુરવાસ તાકુ નેકી નીલામ ખાવદાદ ગોન મન કુલા			[illegible]	જિસકે જપરહિ કવીલામીફુઈહે ઉસકા પદલાણી ફુલાનકાશાવના નેકોવાસરેવુલા ખિલાવેજોગ ફ્રાતિહાનનીલા મકારીહોવે તારીખ ૨૧ મારચ સન૧૮૭૪ ઈસવી [illegible]	તારીફુલ્લા ૨૧મારચ સન૧૮૭૪ ઈસવી	[illegible]
હાલપુત હાકિમ			[illegible]			

नम्बर १२९ नक्शा जुडीशल

नम्बर फुटकर	तारीख हुकम	तफसील वा हुकम	हवाला नम्बरी फिहरिस्त कागज जिस पर ये सिलसिला हुकम लिखा हो जो पृ नहीं	हवाला नम्बर नकल जो तारीख वा हुकम के बारे में जारी हो
१	[illegible]	शामिलात मुन्सरमी हुकम हुआ। पंडित शंकरलाल साहिब बहादुर की सिफारिश से पेश होवे और तारीख ८ [illegible] को पेश होवे दस्तखत हाकिम		[illegible]
२	[illegible]	नम्बर ३३५ देखने के पीछे हुकम हुआ। [illegible] में लिखा जावे और [illegible] तारीख [illegible] दिन के [illegible] में पेश होवे — दस्तखत हाकिम		[illegible]
३	[illegible]	नम्बर ६३६ केफियत देखने के पीछे — हुकम हुआ। [illegible] और [illegible] मुताबिक [illegible] तारीख २२ मार्च सन १८८७ [illegible] के वास्ते चिट्ठी [illegible] है — नम्बर ३४	चालान [illegible] फुटकर के लिये [illegible]	[illegible]

नम्बर मुकदमा	तारीख फैसला	तफ़सील हुक्म	हवाला [illegible] की [illegible] हुकम लिखा [illegible] हो	हवाला नम्बर [illegible] हुकम [illegible] है।
४	२८ मार्च सन् १८७५ ईस्वी	गामील के देख्यने के धी छे हुकमहुआ ई५२ गांवकापटवारीवासतेदरखासत [illegible] [illegible] सन् १८७५ [illegible] का [illegible] १२ के महीना की सी- [illegible] ७ मई सन् १८७५ ईस- वी [illegible] हारे [illegible] [illegible] [illegible] हैं हुकमहुआ	[illegible] २८ मार्च सन् १८७५ ई०	[illegible]
	२८ मार्च सन् १८७५ ईस्वी	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुकमहुआ [illegible] सन् १८७५ ईसवी [illegible] [illegible] सन् १८७५ ईसवी [illegible]		टिकट [illegible] [illegible] पटवारी [illegible] [illegible] [illegible] सन् १८७५ ईसवी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ८८९ -
५	२८ मार्च सन् १८७५ ईस्वी			

नम्बर हुकम	तारीख हुकम	तफ़सील हुकम नम्बर १५८	हवाला नम्बर मिसल का जिस पर हुकम लिखा है जो फ़ाइल हो	हवाला नम्बर ... तारीख जो हुकम के ... हो
[illegible]	[illegible]	नं॰ ४८ [illegible] ... तारीख ७ मई सन् १८७४ ईसवी जारी होवे — १० हाकिम [illegible] ... हाजिर नहीं है ... [illegible]		
७	[illegible]	[illegible] ... इश्तिहार ... हाकिम ... [illegible]		

नम्बर मुकदमा	
तारीख फैसला	२० फरवरी सन् १८७५ ई०
नाम फरीकैन	नामपरसाद रहनेवाला इटौंजा मुद्दई डिकरीदार बनाम इमामी हलवाई रहनेवाला इटौंजा मुद्दालैह मदयून
अपील हुआ या नहीं	नहीं हुआ।
डिकरी पानेके पीछे आपसमें फैसला हुआ या नहीं	नहीं हुआ।
तादाद रुपिया डिकरी	४५)
तादाद खरचा	१॥) खरचा डिकरी ३॥) खरचा बाद डिकरी ७) २।=) इस्तथम्पर वसूल १=) तलबाना ४) दरखास्त तलबाना बाबत ॥) वकालतनामा ३) फीस वकील ५) रसूल ५३) बाकी
वसूल	५३) ... ५३) बाकी
किस चीज पर डिकरी हुई	रुपिया नकद
नाम उस शख्स का जिसकी जायदाद नीलाम होना मंजूर है	इमामी कौम हलवाई रहनेवाला मौजा इटौंजा तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ

दरख्वास्त करता हूं कि डिकरी मुकद्दमा मजकूर का इजरा जायदाद गैर मनकूला से होवे और इसी नीलाम जायदाद नीचे लिखी गई... मौजा नियामतपुर साहिब ... जिला लखनऊ ... दिया जावे।

मकान से कितना मतलब चाहिये	जो कि मुद्दालैह मदयून के पास है। कोई और जायदाद गैर मनकूला नहीं है इस वास्ते मालूम होता है कि दरख्वास्त करता हूं कि ... मालूम होता है कि मुद्दालैह मदयून के ... नीचे लिखी है जो कीमत ४५) रुपिया होगी... का नीलाम होकर रुपिया डिकरी का दिलाया जावे।

पूरब तरफ डिसी दूकान का दरवाजा
कीमती ४५)
हद पश्चिम गली
हद उत्तर दूकान
हद दक्खिन ...
हद पश्चिम ... दूकान ... नाई
उत्तर गली ... दूकान
तारीख २२ फरवरी सन् १८७५ ई०
दस्तखत नामपरसाद डिकरीदार
मार्फत ... गोपाल नरायन वकील

बयान जो दरख़्वास्त रुजू की गई डिकरी के दूसरी तरफ़ लिखा जाता है-

मिसिल के देखने से मालूम होता है कि तारीख़ २९ फ़रवरी सन १८७५ ईसवी को डिकरी [illegible] मिसिल हुआ पाया [illegible] मुद्दई के हक़ में बनाम मुद्दआलेह [illegible] हुई है और दरख़्वास्त पहिली दफ़ा है-

दस्तख़त [illegible] मुहाफ़िज़ दफ़्तर २९ फ़रवरी सन १८७५ ईसवी-

टिकट [illegible] का चिपका है

नक़्शा दूकान कुमारी हलवाई रहने वाला बाज़ार [illegible] परगना महोना ज़िला लखनऊ

नम्बर मुक़द्दमा	[illegible]	तारीख़ [illegible]	केफ़ियत
[illegible] बयान दूसरी तरफ़ का	[illegible]	४ तारीख़ [illegible] सन १८७५ ईसवी	यह दूकान मेरी समझ में किसी के पास रेहन और बय नहीं है और तख़्मीना इस दूकान का नम्बरदारान के बाज़ार में है रेहन और क़ीमत [illegible] दूकान लगभग [illegible] के होगी और यह दूकान कुमारी हलवाई की बनवाई हुई है और मरम्मत भी वही करता है दस्तख़त [illegible] तारीख़ [illegible] सन १८७५ ईसवी

और नक़्शे के साथ पेश है-

दस्तख़त हाकिम

पूरब [illegible] दूकान का [illegible] और [illegible] क़ीमत लगभग [illegible] पश्चिम दूकान [illegible]

નામ ધનસાદ ડિકરીદાર ફુળલાસ પંડિત રહીમનગરીન
રકમસદ ગાજ્ઞાલિમર્ઈં ૮ કમિશનર
વહાદુર
બનામ પુરશ્ હાલ
ફુમા મી ફલનાઈ મદ્યૂન
જનાવ આલી

વાસતે નીલામ ઇસ મુકદ્દમા કે નિયાન સિંઘ મહાજની
મેળા ગયા થા ડિકરીદાર ને નીલામ નહીં કરાયા મદ્યૂન
સે આપસ મેં રજામંદી હો ગઈ ઔર આળ મહાજની કે
સાથ હાજિર હુઆ ઔર રસીદ કલવૂપિયાકી દાખિલ
કરતા હૈ ઇસલિયે રપોરટ હુકમ મુનાસિવ દેને કે વાસતે
પેશ કરતા હૂં ઔર જો કિ મહાજની નીલામ કે વાસતે
મૌકા પર પહુંચ ગયી ઔર નીલામ મુલ્તવી ચાહને
ડિકરીદાર કે હુકમ આને જાને કી ફ઼ીસ કે વારે મેં
જૈસા હુકમ મુનાસિવ હો— તારીખ ૮ મઈ સન ૧૮૭૯ ઈસવી
દસતખત વહાદુર આલી નાજિર—

વીન જો દૂસરી તરફ લિખ્યા હૈ
તારીખ ૮ મઈ સન ૧૮૭૯ ઈસવી
આજ પેશ હોકર દેખને કે પીછે હુકમ હુઆ

હુકમ હુઆ

નાજિર ફ઼ીસ મામૂલી આને જાને કી ડિકરીદાર સે
વસૂલ કરે ક્યોંકિ ડિકરીદાર ને આપસ મેં ફૈસલા
કર લિયા હૈ ઔર રસીદ દાખિલ કી હૈ—

દસ્તખત હાકિમ

(૨) ડિકરીડિકરીદારસે દાખિલ કરાલિયે ગયે

નામ પરસાદ રહને વાલા

ફતૌંઝા ડિકરીદાર

નમ્બર ૭

બનામ

રુમાસી હલવાઈ રહને વાલા ફતૌંઝા

ડિકરી ૫૨)) રૂપિયા

મૈં કિ નામ પરસાદ બેટા ઝોદૂ નામ માડવાડી રહને વાલા ફતૌંઝા કા હૂં—

સિરેપર લિખે હુએ મુકદ્દમા મેં મુદ્દઈ કો નીલામ કરાના દૂકાન મદ્દૂન કા જો કિ મૈંને કુરકતારીખ ૭ મઈ સન્ ૧૮૭૪ ઈસવી મુકર્રર કરકે દરખાસ્ત નીલામ કરાઈ થી મંઝૂર નહીં હૈ કયોંકિ મદ્દૂન ને મેરા કુલ મીનાવ કરાદિયા ઔર મેરા દેના પૂરા કર દિયા અબ મુદ્દઈ કો કુછ દાવા નહીં હૈ ઇસ વાસ્તે ૧ રસીદ કી મનહૂં સે પૂરા) દાખિલ અદાલત કરતા હૂં—

દસ્તખત નામ પરસાદ ગવાહી દૌલતરાય દ૦ હનવંત રહને વાલા નાગિરી નારેઆગી

લિખને વાલા

વકીલ મખ્ખુદ

વીતનદુલારી નાયક કા તારીખ ૮ મઈ સન્ ૧૮૭ ઈ ઈસવી

આઝ નામ પરસાદ ડિકરીદાર ખુદ હાજિર હુઆ ઔર

बयान किया कि कुल रुपिया डिकरी का मुद्दई को वसूल
होगया। कुछ बाकी नहीं रहा है लिहाजा यह दरखास मिनजानिब
ने बपहिचान डिकरीदार की की दसखत वासते

हुकम हुआ।

मुकद्दमा कुल रुपिया अदा करने से दाखिल दफ्तर
होवे —

दसतखत हाकिम

हुकम दसतिनाद इजराय डिकरी नकद रुपिया कुरकी
जायदाद गैरमनकूला मुताबिक दफा २३४ ऐक्ट ८
सन् १८७५ ईसवी —

अदालत पंडित रघुनाथ नारायन साहिब ऐकसट्रा
असिसटेन्ट कमिशनर बहादुर जिला लखनऊ

नमबर २४४

दसतखत हाकिम

मुकाम कोठी केसरपसंद

नमबर मुकद्दमा २४४

नामवर साह रहनेवाला मौजा इटौंजा परगना महोना
तहसील मलिहाबाद डिकरीदार

बनाम

इमामी हलवाई रहनेवाला रेहन-मदयून डिकरी
तादाद रुपिया डिकरी ५२॥) जौन ३१॥) पाया हाल
बनाम इमामी बेटा कौम हलवाई रहनेवाला
इटौंजा मौजा तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ

मुद्दईल मुकद्दमा इस हुकुम से तुम को इत्तिला दीजाती है कि नीचे लिखी हुई जायदाद को तुम न तो बेचो या हिबा दो और किसी तरह किसी को दो और कोई आदमी खरीद या हिबा या और किसी तरह से न लेवे क्योंकि वह जायदाद इस हुकुम से इस मुकद्दमा में कुर्क की गई है तारीख पहिली मार्च सन् १८७४ ईसवी—

तारीख [illegible] जारी करने की २२ मार्च सन् १८७४ ईसवी

जज [illegible] करने वाला

फेहरिस्त

हक मुद्दईल बाबत एक दूकान [illegible] में जिस की चारों हद्दें ये हैं—

हद्द पूरबी [illegible] दूकान [illegible]

[illegible]

पश्चिमी हद्द मिला [illegible] नाले की दीवार से

[illegible] इस हुकुम नामा के जारी होने से पहले मुकर्रर वक्त में दाखिल अदालत होना चाहिये—

[illegible]

१ मार्च सन् १८७४ ईसवी

[illegible]

[illegible] मजकूरी कुर्की करने हुकुम [illegible] में

વાલા અાગ હાજિર અાહદા અારા અાકર
બયાન કરતા હૈ કિ મૈં ડિકરીદાર કે સાથ
તારીખ ૮ મઈ સન ૧૮૭૪ ઈસવી કો વકત
૪ બજે દિન કો દુકાન મેં પહુંચ કર એક
પરત હુકમ ઈમાની મદયૂન કો દિયા
અૌર રસીદ ઉસકી દસતખતી લિયા
લી અૌર એક પરત કુરકી કી દૂકાન
પર ચિપકા કર કે ઢોલ બજવા કર
મુકરર દિયા અૌર એક પરત અદાલત
કે દરવાજે પર ચિપકા દિયા -

ને એક પરવાનહ હુકમ
નામા ઈમાની નામ
તારીખ ૮ માર્ચ સન ૧૮૭૪
ઈસવી કો માર-
ફત દુરગાપરસાદ
ચપરાસી કે જારી
દસતખત ઈમામી
હલફ્રાઈ
ગવાહી ગવાહી
દીપચંદ બની મેકકોમ
રહને વાલા પાસી રહને
ધરમપુર વાલા ઈમો-
જાચો કીદાર

જોકિ તામીલ વારંટ કે મુવાફિક હો ગઈ ઇસલિયે ઇસ
પરવાનહ કો તામીલ કરકે મુનાસિબ હુકમ કે વાસ્તે પેશ કરતા
હૂં અૌર મજકૂરી બયાન કરતા હૈ કિ ફેહરિસત દૂકાન
કે અસબાબ કા સાફ સાફ બંદ હોને દૂકાન કી વજહ સે
તૈયાર નહીં હો સકી મદયૂન મૌજૂદ થા લેકિન ઉસકા બેટા
માલ કી કુરકી કે ખ્યાલ સે દૂકાન મેં કુફલ લગા કર
કહીં ચલા ગયા ઇત્તિલા કે વાસ્તે અરજ કિયા

દસતખત બહાદુર અલી નાજિર
તારીખ ૧૦ માર્ચ સન ૧૮૭૪ ઈસવી
સરરિશતા મુનસરમી   દસતખત હાકિમ

હુકમ હુઆ

રપોરટ ઇફલાસ મુકદ્દમ મેં પેશ હોવે

તારીખ ૨૦ માર્ચ સન ૧૮૭૫ ઈસવી

પંડિત શ્રીમનારાયન સાહિબ બહાદુર એકસ્ટ્રા અસિસ

ટંટ બહાદુર ઝિલા લખનઉ કે હુકમ સે- નમ્બર ૨૩૯

પેશી મુકદ્દમાત

ઇત્તિલા

બનામ ફકીરી હલવાઈ રહનેવાલા ફુલોંજા

રામ પરસાદ રહનેવાલા મૌજા ફુલોંજા મુદ્દઈ

બનામ

ફકીરી હલવાઈ રહનેવાલા મૌજા ફુલોંજા પરગના

મહોના તહસીલ મલિહાબાદ- મુદ્દઆઅલૈહ

મુકદ્દમા મુનદર્જે કી તારીખ ૯ અપરૈલ સન ૧૮૭૫

ઈસવી મુકર્રર હુઈ હૈ ઇસ વાસ્તે તુમ કો ઇત્તિલા દી

જાતી હૈ કિ તારીખ ૯ અપરૈલ કો વક્ત ૧૦ બજે ઇસ અદા-

લત મેં હાઝિર આઓ વાસ્તે દરિયાફત તનીઝા

અદાલત ને રૂબકારી ડિગરી કો ખુરાક તારીખ ૨૪ માર્ચ

સન ૧૮૭૫ ઈસવી તલબાના વસૂલ હુઆ

મુવાફિક હુકમ અદાલત મુનસરિમ

ઇસ તરફ કાગઝ કા

દસ્તખત મુનસરમી

હુકમ મુવાફિક હુકમ તારીખ

૨૦ ... મુકદ્દમ ... અપરૈલ સન ૧૮૭૫ ઈસવી

पेश होवे तारीख़ ८	वकालत व वजे दिन को जो कुछ हुकुम
अपरैल सन् १८७५	नामा में लिखा था उससे इत्तिला
ईसवी	देकर रसीद इत्तिला पाने की मुवा-
दस्तख़त हाकिम	फ़िक़ क़ायदा के काग़ज़ की दूसरी
गवाही गवाही	तरफ़ लिखवा लिया - इत्तिला के
लालता बेचू	वास्ते आरज़ किया - तारीख़ ७
परसाद क़ौम क़ौम	अपरैल सन् १८७५ ईसवी
बनिया बिरहमन	दस्तख़त दुरगापरसाद चपरासी

समन या हुकमनामा गवाहियाँ दूसरे आदमी पर बमूजिब

दफ़आत १४० व १४९ व १५२ व १५३ व १६५ व १६६ व २१९ व २२६ ऐक्ट ८ सन् १८५९ ईसवी

नम्बर १२४

नम्बर मुक़द्दमा २८३

अदालत दीवानी इजलास पंडित श्यामनरायन साहिब बहादुर ऐकसटरा असिसटंट कमिशनर ज़िला लखनऊ—

मुक़ाम-

राम परसाद रहनेवाला इटौंजा परगना महोना तहसील मलिहाबाद- डिकरीदार

बनाम मदूँन डिकरी

इमामी हलवाई रहनेवाला इटौंजा

धावा ख़ुराक सिवाय ख़र्चा हाल

बनाम पटवारी बेटा क़ौम रहनेवाला मौज़ा इटौंजा

પરવાના મહોના-

ઇસ મુકદ્દમા મેં તુમ કો વાસતે દરિયાફત કરને પૂરે મતાલિબ નકશા ની લામ-

તારીખ ૯ મહીના અપરૈલ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી વક્ત ૧૦ બજે ઇસ અદાલત સે હુકમ દિયા જાતા હૈ ઔર ॥) બાબત ખરચા રાહ ઔર ખૂરાક કે સાથ ભેજા જાતા હૈ-

જજ તજવીજ કરને વાલા

તારીખ ૨૫ મહીના માર્ચ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી

૧- હાજિરી ગવાહી દેને કે વાસતે થા-

૨- પેશી દસતાવેજ વિગરાવાર થા-

૩- હાજિરી ગવાહી દેને- ઔર સનદ કો પેશ કરને કો થા-

૪— જવાબદિહી નાલિશ બાબત રોકડા હરજીચ

ઇજરાય ડિકરી

તમસીલ પાયે તના-ઝોવુલાપી હુવા આદમી કોઈ તરફ મુકદ્દમા કા થા કિ સમમન વાસતે પેશી કિસી સનદ કે વિલા હાજિરી હોતો કોરટ મેં લિખે હુવે ફિકરા કો લિખો-

યાદદાશત- તલવાના ઇસ સમમન કે જારી હોને સે પહલે મિયાદ મુકરરર પર અદાલત મેં દાખિલ હોના ચાહિયે-

।=) જો દૂસરી તરફ લિયા જાતા હૈ

ઇતલાયનામા
૧૮૭૦ ઈસવી
મુફમાર્ચ સન
૯૦

પેશ હોવે તારીખ ૮ વકાલતપૂર્વ વો દિન કો જો કુછ હુકમ
અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫ નામા મેં લિખા થા ઉસસે ઇત્તિલા
ઈસવી દેકર રસીદ ઇત્તિલા પાને કી મુતા-
દસ્તખત હાકિમ બિક કાયદા કે કાગજ કી દૂસરી
ગવાહી ગવાહી તરફ લિખવા લિયા - ઇત્તિલા કે
લાલતા વેચૂ વાસ્તે જારી કિયા - તારીખ ૭
પરસાદ કોમ કોમ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી
વનિયા વિરહમન દસ્તખત દુર્ગાપરસાદ ચપરાસી

સમ્મન યા હુકમનામા ગવાહ્યા દૂસરે અદાલતી પરવાને મૂજિબ દફાત ૧૪૦ વ ૧૪૯ વ ૧૫૨ વ ૧૫૩ વ ૧૬૫ વ ૧૬૬ વ ૨૧૯ વ ૨૨૬ એકટ ૮ સન્ ૧૮૫૯ ઈસવી

નમ્બર ૧૨૪

નમ્બર મુકદ્દમા ૨૮૩

અદાલત દીવાની ફળાનાસ પંડિત શ્યામનરાયન સાહિબ બહાદુર એકસટ્રા અસિસ્ટંટ કમિશ્નર જિલા લખનઊ -

મુકામ -

રામપરસાદ રહનેવાલા ફટોંગા પરગના મહોના તહસીલ મલિહાબાદ - ડિકરીદાર

બનામ મદ્યૂન ડિકરી

ફમાસી હલવાઈ રહનેવાલા ફટોંગા

ધવાપુરશ્ન સિવાય પ્રચાહાલ

બનામ પટવાની વેટા કોમ રહનેવાલા મૌજા ફટોંગા

પરગાના મહોના—

ઇસ મુકદ્દમામેં તુમ કો વાસ્તે દરિયાફ્ત કરને પૂરે મતાલિબ નકશા નીલામ—

તારીખ ૯ મહીના અપરૈલ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી વક્ત ૧૦ બજે ઇસ અદાલત સે હુકમ દિયા જાતા હૈ ઔર ।)। બાબત ખરચા રાહ ઔર ખૂરાક કે સાથ ભેજા જાતા હૈ—

જજ તજવીજ કરને વાલા

તારીખ ૨૫ મહીના માર્ચ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી

૧—હાજિરી ગવાહી દેને કે વાસ્તે થા—

૨—પેશી દસ્તાવેજ બિરનાવાર થા—

૩—હાજિરી ગવાહી દેને—ઔર સનદ કો પેશ કરને કો થા—

૪—જવાબદિહી નાલિશ બાબત નોકરી હરજ બીચ

ઇજરાડિકરી

તમબીહ પાયે તના—જો બુલાયા હુઆ આદમી કોઈ તરફ મુકદ્દમા કા હો કિ સમ્મન વાસ્તે પેશી કિસી સનદ કે બિલા હાજિરી હોતા કો શર્ટ મેં લિખે હુએ ફિકરા કો લિખેં—

યાદદાશ્ત— તલબાના ઇસ સમ્મન કે જારી હોનેસે પહલે મિયાદ મુકર્રર પર અદાલત મેં દાખિલ હોના ચાહિયે—

।=) જો દૂસરી તરફ લિખા જાતા હૈ

ઇસ્તાપનસાહ ૧૮૭૦ ઈસવી ૨૫ માર્ચ સન્ ૯૦

ઇનાવત્નામી

મુતાબિક હુકમ હુઝૂર તારીખ ૫ અપ્રૈલ સન ૧૮૭૫
ઈસવી વક્ત ૭ વજે દિન કો ૧૨ કે વક્ત સમમન ખુરાક સમેત
ઊ દરવાની લાલપટવાની કીદેવાન ફતિલા પાને કી
રસીદ કાગજ કી પીઠ પર દો ગવાહોં કે સામને લિખવા-
લાયા- ફતિલા કે વાસતે અરજ કિયા-
તારીખ ૭ અપ્રૈલ સન ૧૮૭૫ ઈસવી-
દસતખત દુર્ગા પરસાદ ચપરાસી
૦ સનિ શાતા મુનસરમી

હુકમ હુઆ

રપોર્ટ મુણકુરી ફજલાસ મુકદ્દમે મેં પેશ હોવે-
તારીખ ૮ અપ્રૈલ સન ૧૮૭૫ ઈસવી

દસતખત હાકિમ

ઇનાવત્નામી

હુકમ સર કાગસે ફતિલા પાઈ ઔર ઊ રસૂલ પાયા-
દસતખત દરવાની લાલ પટવાની
તારીખ ૯ અપ્રૈલ સન ૧૮૭૫ ઈસવી
ગવાહી ઠાકુર પરસાદ ગવાહી ઇંગા વિરહમન
સોમ વિરહમન
ફરતિહાર નીલામ ફજારિડિકની મુતાબિક દફા ૨૮૬
૨૮ ૮ સન ૧૮૫૯ ઈસવી
નમ્બર મુકદ્દમા ૨૮૬
અદાલત દીવાની ઇજલાસ પંડિત રાધાકૃષ્ણ નાગિન સાહિબ

बहादुर रेकमन्दार असिस्टंट कमिश्नर ज़िला लखनऊ

मुकाम

रामप्रसाद रहनेवाला मौज़ा कुटौंजा प्रगना महोना

तहसील मलिहाबाद डिकरीदार

बनाम

इमामी हलवाई रहनेवाला मौज़ा कुटौंजा प्रगना-

मदयून डिकरी

तादाद रूपिया डिकरी ५१॥) सिवाय खरचा हाल

सबब इजराय डिकरी मुकद्दमा बाबत अदाकरने

५१॥) जो डिकरीदार को चाहिये है —

यह इश्तिहार दिया जाता है कि तारीख ७ महीना मई
सन् १८७५ ईसवी वक्त १२ बजे दिन को मुकाम मौज़ा
हक़ मुतालिक़ इमामी बेटा क़ौम हलवाई
रहनेवाला कुटौंजा प्रगना तहसील मलिहाबाद ज़िला
लखनऊ

इस मुकद्दमा में जो जायदाद नीचे लिखी हुई है उसका
नीलाम आम मुताबिक़ हुकम इस अदालत के होगा
तारीख २० महीना मार्च सन् १८७५ ईसवी

जारी तजवीज करनेवाला

फेहरिस्त

हक़ मुतालिक़ मदयून बाबत एक दुकान जो कुटौंजा में है
जिस की हद्दें नीचे लिखी हैं —

हद्द

हद्द पूर्वी पहरेवाला उसी दूकान का

क़ीमती आगम ४॥ रुपिया

हद्द पश्चिमी पर उसी दूकान की
दीवार

[illegible]

[illegible]

बाद दाख़िल तलबाना – तलबाना इस इश्तिहार के
जारी होने से पहले मुद्दई मुकर्रर पर अदालत में
दाखिल होना चाहिये – (=)
(जो दूसरी तरफ़ लिया जाता है)

जनाब आली

आप के हुक्म के मुवाफ़िक़ तारीख़ ४ अप्रैल सन्
१८७५ ईसवी को एक परत इश्तिहार ढोल बजवाकर
मुद्दआअलेह की दूकान पर और दूसरा परत अदालत
के दरवाज़ा पर चिपका दिया और तीसरा परत इश्ति-
हार का मिसिल में शामिल करके पेश करता है –
तारीख़ ७ अप्रैल सन् १८७५ ईसवी –
दस्तख़त दुर्गापरसाद
चपरासी
सरिश्ता मुनसरमी – वसी वासते

हुकम हुआ

रपोर्ट मज़कूरी शामिल मुक़द्दमे में पेश होवे –
तारीख़ ८ अप्रैल सन् १८७५ ईसवी

दस्तख़त हाकिम

मुक़द्दमा फ़ौजदारी पंडित प्रेमनाथ साहिब तहसीलदार मलिहाबाद ज़िला लखनऊ का तजवीज़ किया हुआ।					
नम्बर मुक़द्दमा	नाम		जुर्म	तारीख़	
	नालिशी	मुलज़िम		जुर्म	फ़ैसला
७६	[illegible]	[illegible]	कुल मुआफ़िक़ दफ़ा ३५४ ताज़ीरात हिंद	३० जनवरी सन १८७५ ईसवी	१४ अगस्त सन १८७५ ईसवी

फ़ेहरिस्त काग़ज़ात २० पत्र

(१) नत्थी अलिफ़						(२) नत्थी बे
सिलसिलेवार नम्बर	नाम काग़ज़	नम्बर	सिलसिलेवार नम्बर	नाम काग़ज़	वर्क़	(१) इस नत्थी के काग़ज़ात दफ़्तर में रक्खे जाते हैं
१	फ़र्द फ़ेहरिस्त	१	१ सिले वार २ वर्क़	समन तलबी मुद्दआलैहुम	पुल्ला	
२	फ़र्द हुकुम मुफ़स्सिल	१	६-८	मुचलका	३ "	(२) इसके काग़ज़ात एक मुद्दत मुक़र्ररा के पीछे जैसे ३ वर्ष बरस के पीछे जिनको नष्ट किये जाते हैं
३	नालिशी की अरज़ी	१	६ व १०	अरज़ी सीताराम समन समेत	२ "	
४	नक़्ल सदर मुक़द्दमा	७	११	समन तलबी फ़ालिम सिंह	१ "	
५	रिहाई ज़मानत जुर्माना	१	१२	वारंट बनाम मेड़ी	१ "	
			१३ व १४	मुचलका	२ "	
			१५	मुख़्तारनामा	१ "	

॥ टिकट चिपका है अदालत फ़ौजदारी सीताराम बेटा जैकिशुन क़ौम बनिया रहने वाला मुंशीगंज क़सबा मलिहाबाद ज़िला लखनऊ – मुद्दई [illegible] सिंह बेटा [illegible] मेड़ी बेटा नामालूम है

કનૈયઈ બેટા નામાલૂમ ગ઼ુગ઼ાબખ્શ બેટા નામાલૂમ ર઼
તિલક બેટા નામાલૂમ ક઼ૌમ અહીર રહનેવાલે મૌઝ઼ા
ઈસાપૂર પરગના વ તહસીલ મલિહાબાદ જિલા લખનઊ

મુદ્દઆઅલૈહુમ

ઇલ્ઝામ – જુર્મ દફ઼ા ૩૫૨ ઔર નુક઼સાન
પહુંચાના દફ઼ા ૩૨૩ તાઝ઼ીરાત હિંદ

ગ઼રીબપરવર સલામત

કલ તારીખ ૨૫ જુલાઈ સન
૧૮૭૫ ઈસવી કો વક઼્ત ૧૦ બજે દિન કે મૈં મુદ્દઈ મુક઼ામ
મુમદી ઈસાપૂર એક તલૈયા મેં નહાને લગા ઔર જો
કપડા અપને પહને થા ઉસ મક઼ામ પર રખ દિયા ઔર
મુદ્દઆઅલૈહ નમ્બર એક સે મુઝ મુદ્દઈ ને કહ દિયા
કિ મેરે કપડ઼ે રખ્ખે હ તરહારા મેરે કપડ઼ે ખ઼રાબ કરેં
નપાવેં દેખતે રહના લેકિન ઉસને અપને જાનવરોંકો
નિહાયત બાની નકી એક જાનવરને મેરા અંગરખા કા
દામન ચબા ડાલા તબ મૈંને કહા કિ બાવજૂદ મેરે કહને
કે તિસપર ભી તૂને મેરા નુક઼સાન કરાયા તિસપર મુદ્દ-
આઅલૈહ નમ્બર એક ને બહુત તક઼રીર કિયા ઔર સબ
મુદ્દઆઅલૈહ એન સે દૌડે ઔર સબોં ને મિલકર મેરે
પટ્ટે પકડ઼ કર લાતોં ઔર ઘૂંસોં સે ખ઼ૂબ મારા ઔર
માર પીટ કરકે ચલે ગયે ઇસી વાસતે ઉમેદવાર
હૂં કિ મુક઼દ્દમા ક઼ાયમ હોકર ઇનસાફ઼ કિયા
જાવે – ઔર બાવજૂદ મારપીટ કે ફિર મારનેકો

कहते हैं—

ऐजलास तहसीलदारी गाजीपुर २९ जुलाई सन् १८७५ ई०

हुकमहुआ

खास तहसीलदार के पेश जावे—

तारीख १९ जूलाई सन् १८७५ ईसवी—

तारीख २२ जूलाई सन् १८७५ ईसवी

आज मुद्दई हाजिर आया हुकम हुआ कि तहकीकात हो— पेमनाथ तहसीलदार

इजहार मुद्दई — रामकी गहवर—

सीताराम बेटा जैकिशुन जात बनियाँ रहनेवाला मुंशीगंज उमर २२ बरस पेशा तमोली ने कहा कि हम गुमटी पर नहीं थे अतवल हाहा चलाता था हाहा ने हमारा अंगरखा चुराया मैंने गिला किया उसने गाली दी और फिर सबने मिलकर खूब मारा इसी वास्ते नालिशी हूं बैरागी और बखरी मेरे गवाह हैं जवाब दूंगा— अपने गवाहों को मैं आप लाऊंगा— दस्तखत सीताराम

द० पेमनाथ तहसीलदार

तसदीक के पीछे हुकम हुआ कि मुद्दआलह के हुकम सम्मन जारी हो करतलब हों— तारीख ३० जुलाई सन् १८७५ ई०

सम्मन लिख्या गया गुलाम गौस कोर्ट मोहर्रिर तहसील मलिहाबाद— २४ जुलाई सन् १८७५ ई०

नम्बर सिलसिला	तारीख़ हुक्म	हुक्म मय मुख़्तसर मिसिल	[illegible]	[illegible]
१	२४ जुलाई सन् १८७५ ईसवी	आज मुद्दई हाज़िर आया हुक्म हुआ कि तहक़ीक़ात होने इज़हार लिखने और जांच के पीछे हुक्म हुआ कि मुद्दई अदालत से हुक्म समन जारी कराके बुलाये जावें -	मुद्दई की अरज़ी की पेशी आ- गे लिखा गया।	जवाब अर्ज़ी समन की तामील [illegible] [illegible] २० जु- लाई सन् १८७५ ईसवी
२	दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार	तारीख़ ३ जुलाई सन् १८७५ ईसवी		
३	३० जुलाई सन् १८७५ ई०	जांच के पीछे हुक्म हुआ कि मुद्दई अदालत [illegible] हाज़िर से मुचलका [illegible] [illegible] [illegible] लेकर ता- रीख़ पेशी आइन्दा की हिदायत हो जावे और अपने गवाहों को वह अपना हाज़िर लावें और समन ज़ालिम सिंह के नाम जारी होवे और मुद्दई और हाज़िर के नाम वारंट गिरफ़्तारी जारी किया जावे मुद्दई जाकर निशां देवे -	२ जून	मुक़द्दमा पुल [illegible] हाकिम [illegible] मुचलका [illegible] समन की तामील [illegible] [illegible] शामिल हुई ७ अगस्त सन् १८७५ ईसवी
४	७ अगस्त सन् १८७५ ईसवी प्रेमनाथ तहसीलदार	आज पेश हुआ कल तारीख़ थी हुक्म हुआ कि बोलो हाज़िर हैं उनके इज़हार लिखे जावें - जांच के पीछे मुद्दई अदालत [illegible]		मुक़द्दमा पुल [illegible] हाकिम
५	२ जून प्रेमनाथ तहसीलदार	मन [illegible] अपना मुख़्तार [illegible] मुक़र्रर कराके मुख़्तारनामा दाख़िल किया गवाहों को बाक़ी कुल मुद्दई अदालत हुक्म के सामने जांच नहीं हुई है और न मुद्दई अदालत हुक्म से गवाहों में से कोई हाज़िर है और कोई दूसरा और [illegible] वा ह लफ़्ज़ न [illegible] कहने वाले को नहीं [illegible] के नाम समन जारी हुआ है सो हुक्म हुआ कि मुक़द्दमा २४ को दिन पेश होवे मुद्दई अ- दालत हुक्म जिन गवाहों के नाम समन जा- री कराये उनके नाम समन तारीख़ मुक़- र्रर करा कर लिखे हुए को जारी हो और मु- द्दई के नाम हिदायत हो कि अपने गवाह		

નમ્બર	તારીખ	અહકામ મુખ્તસિલ	[illegible]	[illegible]
૬	૨૯ જાનવારી સન ૧૮૭૫ ઈસવી પેમનાથ તહસીલદાર	મી હાકિમ લાવે ઓર મુઅત્તલ કા રજુ રજુ મુદ્દઈ કી બાબત દોનોં મુદ્દઈ આલા હુકમ સે લિયા જાવે - વગાનોં કે લિયે ને ઓર જો અને કે પીછે સે કુછ છોડ દિયા ગયા ઓર મુઅત્તલ ઓર તિન કે ઓર કાન હી ઓર જા લિમ સિંઘ પર દો દો મુદ્દઈ જુરમાના કિયા જાવે નાકિર વસૂલ કરે - આગર ન દેતો વારંટ વસૂલ જુરમાના જારી હોવે ઓ જુરમાના વસૂલ ન હોતો પંદરહ પંદરહ દિન કે દસ્તક કી જાવે ઓર મિન જુમલા ફ઼સલ કે જો બાબત વહલો અરથા મુકદ્દમા મુદ્દઈ વકાત મુઅત્તલ પાવેગા મુકદ્દમા તની વકે પીછે દાખિલ દફ્તર હોવે -		જાબ્તા લીમુઅત્તલ કા લિખા ૨૯ જાનવારી સન ૧૮૭૫ ઈસવી ખુદ્દ હોલ્દ લામો હાજિર
[illegible]	[illegible]	જુલાઈ કા ગાયદી ફુઈ મુદ્દઈ યા પુલિસ મુવાફિક દફા કાનૂન ઓર તાજીરાત દાખલ તાનીયા નો મુકદ્દમા કી આદાલત મેં	સાબિત હોને જુરમ દફા ૩૫૨ તાજીરાત હિંદ	
	સીતાવામ મુન્નતલસિંઘ ૨ મેઈ ઈ ૩ કાન ૫ ૪ ગુરબખ્શ ૫	સબ મુવાફિક દફા ૩૫૨ ઓર નુકસાન પહુંચાના મુવાફિક દફા ૪૨૬ દસ્તખત પેમનાથ તહસીલદાર	સાબિત હોને જુરમ દફા ૩૫૨ તાજીરાત હિંદ ગુરબખ્શ ઓર જાલિમ ઓર કાન ઈ ઓર તિલક મુકદ્દમા આલા હુકમ પર દો દો મુદ્દઈ જુરમાના મેઈ છોડ દિયા ગયા -	

तारीख़ ३० जुलाई सन १८७४ ईसवी
मुद्दई और तीन आदमी मुद्दआअलैहुम हाज़िर
मिले और अतवल का सम्मन लौट आया कि कोई
नहीं है और मेड़ई के सम्मन की तामील हो गई
मगर वह नहीं आया सो हुक्म हुआ कि इज़हार
मुद्दई लिया जावे और गवाहों के भी इज़हार
लिये जावें—

इस्तग़ासा पेमनाथ तहसीलदार

बाक़ी इज़हार मुद्दई बनाम कीरतपन

मुद्दई ने कहा कि अतवल कोई मुद्दआअलैह
नहीं है उसका नाम ज़ालिम अहीर था वह दो
बरस पर रहता है मगर उसका नाम क्या मालूम
है कि क्या है न उसके बाप का नाम जानते हैं और
मेड़ई के बाप का नाम भी हम नहीं जानते हैं—

इस्तग़ासा पेमनाथ तहसीलदार

मुद्दई के गवाहों का इज़हार बनाम कीरतपन
बैरागी चेला भभूती ज़ात बनियां रहने वाला
मलिहाबाद उमर ३१ बरस पेशा टट्टू लादना
ने कहा कि हम खाली टट्टू अपना मलिहा-
बाद से इसटेशन को लिये जाते थे गोमती के
किनारे ईसापुर की ज़मीन में अपनी आंख से
देखा कि मुद्दई का पट्टा देह आदमी पकड़े था
और देह इसआन गुनबख़्श मुद्दआअलैह की तरफ़
करके चलता फिर हमारे पास से मेड़ई दौड़ा उसने
घूंसा मारा फिर पांचों ने लपट कर किसी ने थप्पड़

किसी ने घूंसा मारा मैं यह नहीं बतलाऊं कि किसने अथ-
पर्दा किस ने घूंसा मारा मैं ज़रा फ़ासले पर था मगर
ज़रूर पांचों ने मिलकर खूब मारा हम जाते तो हमको
भी मारते हम तो बनिया हैं वहां पर गये थे नहीं ऊपर
से ऊपर चले गये गवाह ने सुना और कहा कि ठीक है

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

मुद्दई के गवाहों का इज़हार बरस बीना हपर

गंगू बेटा हिम्मत ज़ात सुनार रहनेवाला मलिहाबाद
उमर २२ बरस पेशा ददद साहब ने ने कहा कि हम ददू
लाहे कुदे अपना इस्टेशन से आते थे चार आदमी
मुद्दई को निकुराद के लात घूंसा जूता थप्पड़ से मार
रहे थे मैं ने अपनी आंख से देखा है बल्कि इस शख़्स
को बख़ूबी पहिचान लिया था कि यह गुरबख़्श पद्दा
पकड़े हुये था बाक़ी तो तीन आदमी घूंसा मारते ही थे यह
तीनों गुरबख़्श समेत ज़रूर हैं बाक़ी दो आदमी नहीं आये
हैं उनमें से एक आदमी था जिसके हाथ में चांदी के कड़े पड़े
थे मैं वहां नहीं गया था दिन के साढ़े सात बजे थे लेके का दिन
था आज सोलह दिन हुये गवाह ने सुनकर कहा कि सही है

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

जवाब मुद्दई अलैह

गुरबख़्श बेटा मुलकू ज़ात अहीर रहनेवाला ईसापुर
उमर २७ बरस पेशा ज़मींदारी ने कहा कि मैं ने कुछ नहीं
मारा है कि हम पंद्रहवीं तारीख़ बीते के दिन मौज़ा सुंदर
में सुबह के वक़्त पांच सात आदमी लेकर निकला ने
गया था शाम तक वहां रहा नरपति सिंह ठाकुर औरहिताल

યાં પઠાન ગવાહ હૈં મૈંને મુદ્દઈ કો નહીં માગા હૈ બયાન જો
કિ આદમી પકડા ગયા હૈ ઉસ કા ઠીક ઠીક લિખ્યા હૈ ઔર
ઉસ કો સુના દિયા ગયા —

દસ્તખત પેમનાથ તહસીલદાર

જબાબ મુદ્દઆ અલૈહ —

તિલક બેટા મથુરા કી જાત આહીર રહનેવાલા ઈસા પૂર
ઉમર ૩૦ બરસ પેશા કાશ્તકારી ને કહા કિ મૈં સંગત કે
દિન ગાઢી રૂથાના કે બાજાર મેં બૈલ ખરીદને ગયા થા સૂક
કો લોટ આયા ઔર જો મુદ્દઈ ચીઠી કે દિન કી બાત ચીત
બતાતે હૈં હમ તો ઉસ દિન ઘર પર હી ન થે માગા કિ ઇસને હમ
કુછ નહીં જાનતે હૈં બયાન ગવાહ ન મસ્ચદ્દાર સ નામ હીન
ઝૂઠા હૈં મુદ્દઆ અલૈહ કો સુના દિયા ગયા ઔર ઉસ કા ઠીક
સહી લિખ્યા હૈ —

દસ્તખત પેમનાથ તહસીલદાર

જબાબ મુદ્દઆ અલૈહ

મદ્દૂ બેટા બન્ધી જાત આહીર રહનેવાલા ઈસા પૂર
ઉમર ૨૫ બરસ પેશા જમીંદારી ને કહા કિ રના મુકદ્દમા
હમારા તહસીલ મેં બનામ મેદ્ર્ ઈદા દાસ કે પેશ થા ઉસ
કી પેશી કે વાસ્તે ૮ બજે મૈં ઘર સે ચલા ઔર ૯ બજે
મિરઝાગંજ મેં પહુંચા ઔર મેરે સાથ બયાન ગવાહ બદલૂ
વ નિહાલચંદ પટવારી ભી થે રામપરસાદ આહિર કે
મકાન મેં ઠહરે ફિર કચેહરી મેં આયે શામ કો ઘર આયે
મારપીટ કા હાલ હમ નહીં જાનતે હૈં ન હમ ને મારા મુદ્દઆ
અલૈહ કુલ બયાન ઠીક ઠીક લિખ્યા હૈ ઔર ઉસ કો
સુના દિયા ગયા — દ૦ પેમનાથ તહસીલદાર

જાંચકે પીછે હુકમ હુઆ કિ મુદ્દઆલેહકો મહાફિઝસે
મુચલકા ૨૫) ૨૫) રૂપિયા કા લેકર આઇન્દા પેશી કી
તારીખ કી હિદાયત દીજાવે ઔર અપને ગવાહોંકો સાથ
લાયકર હાઝિર લાવેં ઔર સમન નુ જાલિમસિંઘ કે નામ
જારી હો ઔર મેડ્હુ ગૈરહાઝિર કે નામ સમન વારંટ
ગિરફ્તારી જારી કિયા જાવે મુદ્દઈ આકર નિશાંદેહ
મુકદ્દમા ઈ આસામત કો પેશ હોવે-

દસ્તખત પેમનાથ તહસીલદાર

તારીખ ૭ અગસ્ત સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી-
આજ પેશ હુઆ કલન તાતીલ થી હુકમ હુઆ કિ જો
લોગ હાઝિર હૈં ઉનકે ઇઝહાર લિયે જાવેં-

પેમનાથ તહસીલદાર

જવાબ મુદ્દઆલેહ-

જાલિમસિંઘ બેટા દેવીસિંઘ જાત અહીર રહને વાલા ઈસા-
પૂર ઉમર ૨૦ બરસ પેશા ખેતી ને કહા કિ હમને નહીં માર
ન ઉસ્કો જાનતે હૈં કિ કહાં કા હુઆ જહસ વૈસે કે દિન ગોરૂ
ચરાતે થે મુખબિર કો મુદ્દઈ કો દેખા ન હમને ઔર કિસી
કો આતે દેખા થા અલ્લાની બેટા ગંગા અહીર લાલચ વાહ
હૈં ગલ્લા કા બીન ગિરફ્તાર આદમી કા ઉસમેં ઠીક ૨
લિયા હૈ ઔર ઉસકો સુના દિયા ગયા

દ૦ પેમનાથ તહસીલદાર

જવાબ મુદ્દઆલેહ-

મેડ્હુ બેટા નાનકૂ જાત અહીર રહને વાલા ઈસાપૂર ઔર
લખનઉ કા મી ઉમર ૩૦ બરસ પેશા ખેતી ને કહા કિ
હમકો કુછ હાલ માલૂમ નહીં હૈ અહીના મેં લખનઉ

મેંથે હમને કિસી કો નહીં માના હૈ - મજ઼ાની વેદા ના માલૂમ
ઔર માહિબદીન ગવાહ હૈં તમામ બયાન મોકઈ કા ઇસ
મેં ઠીક ઠીક લિખા હૈ ઔર ઉસકો સુના દિયા ગયા -

દસતખત પેમનાથ નાથ તહસીલદાર

બાદ કે પીછે મુદ્દઇ ઔર મુદ્દાલેહમ ને લાલા લછમન પરસાદ
કો અપના મુખ્તાર મુકર્રર કરકે મુખ્તારનામા દાખિલ
કિયા જો કિ બયાન મુદ્દઈ કે ગવાહોં કા બામને ઇન મુદ્દઆ
અલેહુમ કે જાંચ નહીં હુઆ હૈ ઔર મુદ્દઆ અલેહુમ કે સબ
ગવાહોં મેં સે કોઈ હાજ઼િર હૈ ઔર કોઈ નહીં ઔર બાજ઼ ગવાહ
જ઼બાન ઝ કો રહને વાલે હૈં જિનકે નામ સમમન જારી હોના
ચાહિયે સો હુકમ હુઆ કિ મુકદ્દમા ૨૪ કો પેશ હોવે
સમમન ગવાહોં કે નામ જિનકે નામ મુદ્દઆ અલેહુમ
જારી કરાયે જાય ઔર લિખી હુઈ તારીખ મુકર્રર કરાવે જાવી
હોં ઔર મુદ્દઈ કો સમઝા દિયા જાવે કિ અપને ગવાહ
મીઉસી દિન હાજિર લાવે ૭ અગસ્ત સન ૧૮૭૫ ઈ૦ સવી
ઔર મુચલકા ૨૫) ૨૫) રૂપિયા કા વાસ્તે દોનોં
મુદ્દઆ અલેહુમ કે મીલે લિયા જાવે -

દસતખત પંડિત પેમનાથ તહસીલદાર

તારીખ ૨૪ મહીના અગસ્ત સન ૧૮૭૫ ઈ૦ સવી -
આજ પેશ હુઆ મુદ્દઈ ઔર મુદ્દઆ અલેહ દોનોં
હાજ઼િર આયે ઔર દોનોં કે ગવાહ ભી મોજૂદ હુકમ
હુઆ કિ બયાન લિયે જાવેં -

દસતખત પેમનાથ તહસીલદાર

ઇસ કે પીછે મુદ્દઆ અલેહુમ ને પંડિત પરાનનાથ વકીલ
કો ભી અપના મુખ્તાર મુકર્રર કિયા ઔર કહા કિ

गवाह मुद्दई कि मौजूद हैं उन का इज़हार उन मुद्दआ़अलैहुम
के सामने उनके वकीलों के जिन्हों ने नहीं सुना था
सुनाया गया उन्हों ने दरख़्वास्त की कि हम कुछ
सवाल करेंगे सो बमूजिब सवाल नये सिरे से इज़हार मज़्कूर कीं-

दस्तख़त पेम नाथ तहसीलदार

भूरा वल्द गंगू गवाह मुद्दई सवाल अदालत की तरफ़ से
आया पहिचानोंगे कि वह कौन मुद्दआ़अलैह-
जवाब-गवाह ने ज़ालिमसिंह की तरफ़ इशारा करके
बतलाया कि यही आदमी था- सवाल अदालत की
तरफ़ से-कि तुम ने पहले चार आदमी लिखाये हैं और
मुद्दई का दावा पांच आदमियों पर है तो चार थे या पांच
थे और जो चार थे तो इन पांचों में से पहिचान करके
बतलाओ कि कौन कौन था और कौन कौन नहीं था-
जवाब-हम ने पहले भी चार पांच आदमी लिखाये
हैं इन पांचों में से जो इस वक़्त खड़े हैं चार आदमियों
के बाबत बतलाया कि पहले से मारपीट में शरीक थे-
ज़ालिम खुदाबख़्श मेंहदी तिलक और करनधई
पांचों आदमियों के बाबत बतलाया कि यह पीछे से
दौड़ता आता था- सवाल करनधई ने भी मारा था-
जवाब-हां मारा था- सवाल मुद्दआ़अलैहुम के
वकील से-कि मारपीट के वक़्त तुम पहले से वहां
मौजूद थे-या पीछे को पहुंचे और यह मारपीट देखी-
जवाब-मैं राह राह जाता था और यह मारपीट रहे थे
पहले से वहां मौजूद न था मगर मैं वहां खड़ा नहीं रहा
मैं ने कुछ नहीं कहा तीन कदम के फ़ासले से देखा कि

था इस्टेशन से आते हुवे बारि तरफ़ के राह में यह
वारदात हुई थी और किसी को मैं ने वहां नहीं देखा
अन्दाज़न दो घड़ी दिन चढ़ा था - सवाल - वकील
से कि तुम ने अव्वल अहीर पर दावा डाके ज़नी का
किया था और वह मुक़द्दमा न चलने की वजह से
खारिज हुआ उस में कि मुद्दई तुम्हारा गवाह था
जवाब - मैं ने आपही दावा किया था उस में मुद्दई को
गवाह किया था मगर थाने के मुनशी ने उसकी गवाही
नामंज़ूर की और चालान मुक़द्दमा का नहीं किया
मुद्दई के हाथ में बाँधी थी और ज़ालिम के हाथ में
लाठी थी और सब खाली हाथ थे गवाह ने सुन कर
कहा ठीक है -

दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार

मुद्दई के दैगी गवाह का बयान दीवान धरम की राह पर -
सवाल - वकील से मुद्दआअलैह कि जिस वक़्त
तुम ने सामने मुद्दई को मुद्दआअलैह मारते देखे
उस वक़्त गंगू सवार हो पर था - जवाब - हां राह राह आता
था - सवाल उसी से - कै आदमी मारते थे - जवाब -
पांचु आदमी मारते थे - हम सड़क पर खड़े रहे हम से
गंगू से साहिब सलामत हुई थी - सवाल रस्सी या
लाठी किसी के हाथ में थी या नहीं - जवाब - रस्सी
वगैरा तो हम ने दूर होने की वजह से नहीं देखा मगर
एक आदमी के हाथ में लाठी थी अन्दाज़न आधा
घंटा मैं खड़ा रहा मगर कोई घड़ी घंटा तो वहां पास
न था - सवाल उस से पहले से मार होरही थी

ने तुम्हारे सामने मार शुरू हुई - जवाब जब हम लोगों की सड़क पर पहुंचे तब देखा कि वृन्दावन मार पीट हो रही है - पहले मैं इसी तरफ़ से जाता था और और गंगा उसी तरफ़ से आता था फिर जब सीता राम जवाई रवाना होगया उसके पीछे आने पर जाने की नौबत से थाने की तरफ़ लौटा तो हम भी हमराह चले आये फिर गंगा पुसै हम से मुलाक़ात हुई क्योंकि वह इस पार था उस पार उस वक़्त भी आपि गवाह ने सुन कर कहा कि ठीक है -

द० पेमनाथ तहसीलदार

ज़ालिम मुद्दआलेह नम्बर १ के गवाह का बयान बरीम जराहपर -

हीरा लाल बेटा सीतलप्रसाद जात अहीर रहने वाला ईसा-पुर उमर ३० बरस पेशा खेती ने कहा कि हम और ज़ालिम और भवानी तीनों आदमी का नौखलान सें तीसरे दिन सुबह को सुक़ात खोलने गये थे - और दो पहर को लौट आये दो घड़ी दोपहर पर और गई होगी हम ने मारपीट का हाल कुछ नहीं सुना सूरज निकलने के पहले गया था हम से मुद्दआलेह से कुछ नातेदारी नहीं है हम ने कुछ सुना ही नहीं गवाह ने सुन कर कहा कि ठीक है -

दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार

बयान गवाह मुद्दआलेह नम्बर २

ज़ालिम सिंह पासी की राह पर

भवानी बेटा गंगा प्रसाद अहीर रहने वाला ईसापुर

उमर ३० बरस पेशा खेती ने कहा कि बीफै के दिन गवा-
ह हम और हीरालाल ग़ालिब सिंह का खेत
जोतने गये थे और दोपहर पर होवने आदिये जब
से खेतने लगे नव से जवाब लोट आये हम ने पास
से ग़ालिब जुदा नहीं हुआ और वह ख़ून नहीं गया है
सवाल-जब थाना का सिपाही देह में आया तब वहीं ग़ालिब
ने कहा था कि वह हरहा चराता है बुला लाओ और
एक अहीर बुलाने गया था तुम कसी दरवाज़े में खिलाफ़
लिखाते हो कि वह हरहा नहीं चराता है - जवाब - तुम
ग़लत कहते हो कि वह हरहा नहीं चराता है जो चराता
हो तो हम गुनहगार गवाह ने सुनकर कहा कि ठीक है -
दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार

बयान गवाह मुद्दआअलै नम्बर २
कन्हई धरम की गवाही

साफ़िलदीन बेटा मुफ़ख़ार ज़ात अहीर रहने वाला लखनऊ
उमर ३५ बरस पेशा मज़दूरी ने कहा कि एक महीने से
मेड़ई लखनऊ में रहता है और अपने घर की मरम्मत
अक्सर करता है और उसकी जोरू गांव में रहती है बाप
उसका गांव में नहीं रहता है वह लखनऊ में रहता है
और हम लड़ाई भिड़ाई का हाल नहीं जानते हैं
गवाह ने सुनकर कहा कि ठीक है -
दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार

बयान मुद्दआअलैह नम्बर ३ मेड़ई के गवाह का
मरदानी बेटा हनी ज़ात अहीर रहने वाला लखनऊ
उमर ४० बरस पेशा बाग़बानी ने कहा कि इस दिन असाढ़

के रह गये थे उनसे हम लश्करों में से कई मुर्दह आदमीयों को देखते हैं गुज़िश्ते के दिन एक दिन गांव में आये थे जब लूट काफ़ी हुई थी लड़ाई का हाल हम नहीं जानते हैं गवाह ने सुनकर कहा कि ठीक है—

दस्तख़त बेसनाथ तहसीलदार

कान्हई मुहर्रिर आलैह नम्बर २ के गवाह का इज़हार बनाम की राहबर—

बख़्तावर बेटा मुरली जात अहीर रहनेवाला ईसापुर उमर ४५ बरस पेशा ज़मींदारी ने बयान किया कि हमारा मुक़ाम हमारा तहसील में एक गांव को पेश था हम आठ बजे दिन को था जिस वक़्त लश्करों से हाराई की मेल जाती है— बहादूर के नई निहालचंद पटवारी के समेत मलिहाबाद तहसील को आते थे हमने मार कूट कुछ नहीं देखा हमने सीतापुर की राह में देखा नगर मटी के वहां कोई था न कुछ हाल सुना और हम सुबह को वक़्त अपने घर बैठे थे देखा कि तिलक कपड़ा और पूरियां लिये हुए जाते थे पूछा कि कहां जाते हो जवाब दिया कि बेल ख़रीद ने जाते हैं और दिन मंगल का था पांचवें दिन लौट आया गवाह ने सुनकर कहा कि ठीक है—

दस्तख़त बेसनाथ तहसीलदार

बयान गवाह मुहर्रिर आलैह नम्बर ३ कान्हई बनाम की राहबर—

रामप्रसाद बेटा फ़तेचंद बनियां रहनेवाला मिरज़ागंज

ઉમર ૪૫ વરસ પેશા મહાજની કહા કિ વખ્તાવર ઔર
વહલૂ ઔર કનૈયા બીરૈ કે દિન નૌ ઈ બજે હમારે યહાં
આવે ઔર છુરી ઔર લાઠી લેકર પાની પી કિ ઔર
તહસીલ મેં જાને કો હમસે કહા કિ ફરાંગ સે ઈસા નગર
સવા કોસ હોગા કુછ હાલ લડાઈ વગૈરા કા હમ કો નહીં
માલૂમ હૈ ગવાહ ને સુનકર કહા કિ ઠીક હૈ —

દસ્તખત પેમનાથ તહસીલદાર

બયાન ગવાહ મુદ્દઈ નમ્બર ૪ ગુરબખ્શ બેરમ
કી તાહરીર —
હિદાયત ખાં બેટા છેદી ખાં જાત પઠાન રહને વાલા સુંદરા
ઉમર ૪૫ બરસ પેશા ખેતી ને કહા કિ ગુરબખ્શ ઔર હમ
વીરૈ કે દિન અપના અપના ખેત કિ બરાબર હૈ નિકરાતે
થે સુબહ સે શામ તક માર કુટાઈ કા હાલ હમને કુછ નહીં
સુના થોડી દેર કે વાસ્તે ભી વહ હમારે પાસ સે જુદા નહીં
હુવે થે ગવાહ ને સુનકર કહા કિ ઠીક હૈ —

દસ્તખત પેમનાથ તહસીલદાર

બયાન ગવાહ મુદ્દઈ નમ્બર ૫ તિલક ધર મકી
તાહરીર —
નામદીન બેટા હીરા ખાં જાત અહીર રહને વાલા ઈસાપુર ઉમર
૩૦ બરસ પેશા ખેતી ને કહા કિ હમ ગઢી કે બાજાર કો મંગલ
કે દિન મૂસા બેચને ગએ થે તિલક હમારે સાથ ગયા થા
પાંચવેં દિન લૌટ આયે હમ કો કુછ હાલ લડાઈ કા નહીં
માલૂમ હૈ ઔર તિલક બૈલ લેને ગયા થા ગવાહ ને સુનકર

कहा कि ठीक है—

दसतख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

तारीख़ २४ अगसत सन् १८७५ ईसवी—

मुद्दई ने बयान किया कि मैं ददू(?) लिये जाता था गोमती के मुहाने पर छहना(?) ज़ालिम हरहा चराता था उस को एक हरहा ने मेरा कपड़ा अपना लिया मैंने गिला किया कि इसी बात पर उसने गाली दी और कि सब मुद्दआअलैहुम ने जमा होकर मुझे लाठी घूंसों से ख़ूब मारा मुद्दआअलैहुम पुरआदमी(?) थे सब ने मार पीट से बिलकुल इनकार किया एक मुरवक्ष(?) कहता है कि मैं सफ़र होगया था दूसरा तिलक कहता है कि मैं बाज़ार गया और थाने में गया था तीसरा करहई(?) कहता है कि मैं सिरज़ागंज(?) कचेहरी तहसील में आया था चौथा मेड़ई कहता है कि हम लखनऊ में अरसा से रहते हैं पांचवां ज़ालिम कहता है कि हम कुछ नहीं जानते हैं न हमने मारा है जैसे मुद्दई कहता है उसी तरह पर उस के सब गवाह हलफ़ पर बयान करते हैं और मुद्दआअलैहुम के गवाह उन के मुवाफ़िक़ न ज़ाहिर अदालत तो मुद्दई ज़रूर मारा गया है पहले तो उस का कपड़ा साफ़ देखने से चरा-गा कुल्ला(?) मालूम होता है जो बुनियाद फ़साद दूसरे मुद्दई ग़रीब आदमी है क़ौम का बनिया रोज़गार पेशा है जिस को कोई फ़ायदा न था कि वह बेसबब नालिश करके हाकिम रहना अदालत के दरवाज़ा पर और खेंचा खेंची बेफ़ायदा गवारा करता तीसरे मुद्दआअलैहुम मऊसगांव(?) के

ज़मींदार और नम्बरदार हैं और ज़ोर रखते हैं चूंकि नके
लाइक़ है कि एक रोज़ ज़रा बात पर मुद्दई को बेकसआन
कर मारा हो मुद्दआअलैहुम ने पहले नालों के बदली और
एक जगह पर हाज़िर होने में उज़्र ह्रावड़ाला पीछे को
दोनों आदमियों ने मुक़द्दमा की पैरवी के लिये वकील
किये वकीलों ने क़ानून की राह पर गवाहों से बहुत तरह के
सवाल किये लेकिन अदालत के नज़दीक मार पीट साबित
है और अदालत अच्छी तरह से जानती है कि मुद्दई
ज़रूर मारा गया है क्या अजब है कि यह भी जिस का मौजूद
होना अथ्थनज़ में लिखा गया है शामिल हो - सो हुकम
हुआ कि जेड़ई मुक़द्दमा से बरी किया जावे रामबख़्श
तिलक कन्हई ज़ालिम पर दो दो रुपिया जुरमाना किया जावे
नाज़िर वसूल करे जो न दें तो वारंट वसूल पुलिस के नाम
जारी होवे जो वसूल न हो तो पंद्रह पंद्रह दिन कठिन
क़ैद रक्खे जावें और इसमें से ३) रुपिया बाबत ख़र्चा
मुक़द्दमा मुद्दई को मुक़र्रर वक़्त पर मिलेगा मुक़द्दमा
तारीख़ के पीछे दाख़िल दफ़्तर होवे -

तारीख़ २६ अगस्त सन् १८७५ ईसवी -

दस्तख़त हाकिम

𑂞𑂰𑂩𑂲𑂎 𑂠𑂰𑂎𑂱𑂪	𑂢𑂰𑂧 𑂧𑂳𑂠𑂹𑂠𑂆 [illegible]	𑂢𑂧𑂹𑂥𑂩 𑂧𑂳𑂍𑂠𑂧𑂰	𑂠𑂰𑂎𑂱𑂪𑂰 𑂩𑂍𑂧 𑂎𑂔𑂰𑂢𑂰		𑂍𑂶𑂤𑂱𑂨𑂞
			𑂞𑂰𑂩𑂲𑂎	𑂩𑂍𑂧	
१५ 𑂔𑂢𑂫𑂩𑂲-𑂮𑂢	𑂏𑂳𑂩𑂥𑂎𑂹𑂬	३)	२४ 𑂔𑂢𑂫𑂩𑂲-𑂮𑂢𑂧𑂔𑂍𑂴𑂩 [illegible]	३)	
〃	𑂮𑂰𑂪𑂱𑂧	३)		३)	
〃	𑂍𑂢𑂹𑂯𑂶𑂆	३)		३)	𑂠𑂮𑂎𑂞 𑂣𑂁𑂙𑂱𑂞
〃	𑂞𑂱𑂪𑂍	३)		३)	𑂣𑂹𑂩𑂵𑂧𑂢𑂰𑂟 𑂞𑂯𑂮𑂲𑂪𑂠𑂰𑂩
		१३) [illegible]	[illegible] 𑂧𑂷𑂯𑂩𑂱𑂩	१३) [illegible]	

𑂅𑂔𑂪𑂰𑂮 𑂞𑂯𑂮𑂲𑂪𑂠𑂰𑂩 𑂮𑂰𑂯𑂱𑂥 [illegible] 𑂞𑂯𑂮𑂲𑂪 𑂧𑂪𑂱𑂯𑂰𑂥𑂰𑂠 𑂔𑂱𑂪𑂰 𑂪𑂎𑂢𑂇 —

[illegible]

𑂢𑂧𑂹𑂥𑂩 ३३

સમ્મન મુદ્દઆઅલૈહ કે નામ પત્ર —

દફા ૨૫૨

રેક્ટ ૯૦ સન્ ૧૮૭૭ ઈસવી

સીતારામ બેટા જૈકિશુન કૌમ બનિયા રહનેવાલા મુન્શીગંજ
મુદ્દઈ

બનામ આતબલસિંઘ

આતબલસિંઘ બેટા લાલા કૌમ અહીર રહનેવાલા ઈસાપુર
મુદ્દઆઅલૈહુમ

મુન્શી ફિક દફા ૨૫૨ ઔર ૨૭૩ મજમુઆ તાજીરાત હિંદ જો કિ હાજિર આના તુમ્હારા બાસતે જવાબદિહી નાલિશ કે કિ જો તુમ ને ૧૫ જુલાઈ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી કો મારપીટ કી હૈ કિ જિસ જુરમ કી તાવીફ દફા ૨૫૨ ઔર ૨૭૩ તાજીરાત હિંદ મેં લિખી હૈ જરૂર હુકમ દિયા જાતા હૈ કિ તુમ તારીખ ૨૫ જુલાઈ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી કો —

મુકામ તહસીલ મલિહાબાદ મેં — હમારે ઇજલાસ મેં હાજિર હો તાકીદ જાનો —

દસ્તખત	પંડિત પ્રેમનાથ
ઓહદા	તહસીલદાર સાહિબ
ઇખતિયારાત	મજિસ્ટ્રેટ દરજા દૂસરે
મુકામ	તહસીલ મલિહાબાદ
તારીખ	૨૪ જુલાઈ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી

[illegible]

(जो काग़ज़ की दूसरी तरफ़ लिखा जाता है)

जनाब आली

मारफ़त देवी दीन कानिस्टेबिल के तामील कराके वापिस हज़ूर में भेजता हूं तारीख़ २६ जूलाई सन् १८७५ ईसवी-

२ सम्मन बनाम मुद्दाअलेह-
कनई वेदा नामालूम क़ौम अहीर रहनेवाला ईसापूर मुद्दाअलेह-

३ सम्मन बनाम मुद्दाअलेह-
तिलक वेदा नामालूम क़ौम अहीर रहनेवाला ईसापूर मुद्दाअलेह-

४ सम्मन बनाम मुद्दाअलेह-
गुरबख्श वेदा नामालूम क़ौम अहीर रहनेवाला ईसापूर मुद्दाअलेह

५ सम्मन बनाम मुद्दाअलेह-
मेड़ई वेदा नामालूम क़ौम अहीर रहनेवाला ईसापूर मुद्दाअलेह-

६ सम्मन बनाम मुद्दाअलेह-
अतवलसिंघ वेदा लाला

क़ौम ... ही रहने वाला
ईसापुर मुद्दआ़लेह -

७ सम्मन बनाम मुद्दआ़लेह

ग़ालिबसिंह बेटा ...
क़ौम ... ही रहनेवाला
ईसापुर मुद्दआ़लेह

मुचलका वास्ते हाज़िरी मुद्दआ़लेह -

मैं कि तिलक बेटा भवानी ... ही रहनेवाला ईसापुर का हूं - इक़रार करता हूं कि मुक़द्दमा सीताराम मुद्दई बनाम ... तहसील ... में १६ अगस्त सन् १८७५ ईसवी को वक़्त १० दस बजे दिन को हाज़िर होकर उस वक़्त और उसी कचहरी में मुक़द्दमा ... और ... हाज़िर रहूंगा कि मैं ... मुद्दई ... के हाज़िर तहसील हूंगा जो हाज़िर न हूं तो ... और ... हाज़िरी की सूरत में इक़रार करता हूं कि ... सरकार में दाख़िल करूं - लिखा तारीख़ ... सन् १८७५ ईसवी -

दस्तख़त तिलक ... ही -

गवाही भवानीदीन
गवाही जगन्नाथ कायस्थ

८ मुचलका वास्ते हाज़िरी मुद्दआ़लेह ...
बेटा लाला क़ौम ... ही रहने वाला ईसापुर -

९ मुचलका वास्ते हाज़िरी मुद्दआ़लेह की ...
बेटा बलदेवसिंह ... ही रहनेवाला ईसापुर -

૪ મુચલકા વાસતે હાજિરી મુદ્દઆઅલૈહ ગાલિબસિંઘ
બેટા દેવી કૌમ જાહીર રહનેવાલા ઈસાપૂર —

૫ મુચલકા વાસતે હાજિરી મુદ્દઆઅલૈહ મેંડઈ બેટા
નાનકૂ કૌમ જાહીર રહનેવાલા ઈસાપૂર —

મુદ્દઈ

સીતારામ બેટા ગૌકિશુન	ખુલાસએ હૈ કિ નામીલ
કૌમ બનિયા રહનેવાલા	સમમન કી જાબતાસિંઘ
મુનશીગંજ પરગના ઓર	કે નામ ચાહિયે મેરા નામ
તહસીલ મલિહાબાદ જિલા	સીતારામ હૈ સમમન ગોયા
લખનઊ	ન કર ઉમેદવાર હૂં કિ
મુદ્દઆઅલૈહ —	વહ સમમન જાબતા કો
જાબતાસિંઘ બેટા લાલા	દિયા જાવે —
કૌમ જાહીર રહનેવાલા મૌજા	
ઈસાપૂર પરગના મલિહાબાદ	

ફુલ્લાત માનથીદ

ગરીબપરવર સલામત જનાબ આલી ઉપરલિખે
હુએ મુકદ્દમા મેં સમમન જાબતાસિંઘ કૌમ જાહીર
રહનેવાલા ઈસાપૂર પરગના મલિહાબાદ જારી હુઆ હૈ
મગર સિપાહી મુઝ કો બિલા વજહ દે આયા થા ઓર મેરા
નામ સીતારામ હૈ મુઝ સવાલ દેનેવાલે કો સમમન ચાહિયે
જબ કિ મૈં ને દરિયાફ્ત કિયા સમમન જાબતાસિંઘ કા હૈ
તો મુઝસે ક્યા વાસતા ઇસલિયે ઉમેદવાર હૂં કિ સમમન
મુઝસે વાપસ હોકર માનફત સિપાહી તામીલ જાબતા

सिंध के नाम हो जावै और मेरा नाम सीताराम है—

वालिद का [illegible]

वतन [illegible]प्रसाद

अरज़ी लिखने वाला

[illegible]

वारंट गिरफ़्तारी—

बजलास पंडित प्रेमनाथ साहिब तहसील-
दार मजिस्ट्रेट दरजा दोम तहसील
मलिहाबाद ज़िला लखनऊ—
अफ़सर पुलिस थाना मलिहाबाद

जोकि मेड़ई वल्द नामालूम क़ौम अहीर रहने वाला ईसापुर थाना मलिहाबाद और [illegible] जुर्म दफ़ा ३२३ और ३४४ ताज़ीरात हिंद जवाबदेह [illegible] जाता है और जुर्म का [illegible] दफ़ा ३२३ और ३४४ ताज़ीरात हिंद में लिखा है इस वास्ते तुम को हुकम दिया जाता है कि मुद्दई [illegible] मेड़ई को गिरफ़्तार करके हमारे सामने हाज़िर लाओ इस बात में ताकीद जानो—

हुकम

जो मुद्दई [illegible] मेड़ई खुद मुचलका और ज़मानत ५०) रुपिया की दाख़िल करै और ज़मानत मोतबर ५०) रुपिया—की तारीख़ ६ अगस्त सन १८७५ ईसवी को हमारे पास हाज़िर होने के वास्ते देवैं तो इसको छोड़ देना दुरुस्त है—लिखा ३० जूलाई सन् १८७५ ई०

(જો કાગ઼જ઼ કી દૂસરી તરફ઼ લિખ્યા જાતા હૈ)

ખૂબસિંઘ ઓર ભવાનીપરસાદ —

કાનિસ્ટબિલ તામીલ દસવારંટ કી કરૈં —

૪ અગસ્ત સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી

દસતખત હાકિમ

જવાબ અર્જી —

મારફત ખૂબસિંઘ ઓર ભવાની પરસાદ કાનિસ્ટબિલ કે દસવારંટ કી તામીલ કરાઈ ગઈ તો રપોટ બયાન કિયા કિ મોજાઈ સાપૂરમેં ઢૂંઢ મુદ્દાઅલેહ કો જો દસ વારંટ મેં લિખ્યા હૈ તલાશ કિયા તો નહીં મિલા જો જા ઉસકી ઘરમેં મોજૂદ પાઈ ગઈ ખુદ કહતી હૈ કિ આઠ દિન સે ઘરમેં નહીં આયા હૈ કહીં કો ચલા ગયા હૈ દસ વાસ્તે દસ વારંટ કો દસ રપોટ કે સાથ બિલા તામીલ વાપસ તહસીલ મલિહાબાદ કિયા —

તારીખ ૬ અગસ્ત સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી —

દસતખત હાકિમ

સીતારામ રહનેવાલા મલિહાબાદ — મુદ્દઈ

બનામ

૧ કંધઈ બેટા બલદી ૨ ગુરબખ્શ ઓર તિલક ઓર ૩ કંધઈ ઓર ૪ જાલિમ રહનેવાલે મલિહાબાદ

મુદ્દઆલૈહુમ

દરખાસ્ત માર પીટ

મેરે કન્હઈ બેટા બલદી જમીંદાર મોજાઈ સાપૂર

परगना और तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ
का हूं जो कि मैंने अपने लिये हुवे मुक़द्दमा में पंडित प्र
ागनाथ साहिब वकील अदालत को वकील अपना
मुक़र्रर करके इक़रार करता हूं और लिखे देता हूं
कि जो कुछ पंडित साहिब मुक़द्दमा में सवाल और
जवाब और दौड़ धूप करें वह सब मुझ को ख़ास अपने
किये हुवे की तरह से क़बूल व मनज़ूर होगा इस वास्ते
यह वकालत नामा लिख दिया कि सनद हो—
तारीख़ १२ अगस्त सन् १८७५ ईसवी—

दसतख़त — गवाही सनजूपरसाद बेदा
गंगापरसाद बक़लम ख़ुद

गवाही अल्लाबख़्श
ज़मींदार मलिहाबाद
बक़लम ख़ुद

(जो काग़ज़ की दूसरी तरफ़ लिखा जाता है)

वकालत नामा मंज़ूर है

तारीख़ २४ अगस्त सन् १८७५ ईसवी—

इति